हिंदी भाषा शिक्षण

गद्य पद्य विराम चिह्न

क्रिया उपसर्ग

प्रसंग

वर्ष - प्रथम, सेमेस्टर - द्वितीय

द्विवर्षीय डी0एल0एड0 पाठ्यक्रम पर आधारित संदर्भ सामग्री

वर्ष - 2024

राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी

(राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश)

राज्य हिन्दी संस्थान · उ.प्र. वाराणसी · उत्तिष्ठत जाग्रत

राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी

(राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश)

डी०एल०एड० पाठ्यक्रम पर आधारित हिन्दी भाषा शिक्षण हेतु प्रशिक्षण सन्दर्भ सामग्री का विकास

वर्ष - प्रथम, सेमेस्टर - द्वितीय

वर्ष - 2024

मुख्य संरक्षक : **डॉ० एम.के. शन्मुगा सुन्दरम,** प्रमुख सचिव, बेसिक शिक्षा, उ०प्र० शासन।

संरक्षक : **श्रीमती कंचन वर्मा,** महानिदेशक (स्कूल शिक्षा), उ०प्र० तथा राज्य परियोजना निदेशक, उ०प्र० सभी के लिए शिक्षा परियोजना परिषद्, लखनऊ।

निर्देशन : **श्री गणेश कुमार,** निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ०प्र०, लखनऊ।

परामर्श : **डॉ० पवन कुमार,** संयुक्त निदेशक (एस०एस०ए०), राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ०प्र०, लखनऊ।

समन्वयन : **श्रीमती चन्दना रामइकबाल यादव,** निदेशक, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी।
डॉ० ऋचा जोशी, पूर्व निदेशक, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी।

समीक्षा : **डॉ० रामसुधार सिंह,** (पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, यू०पी० कॉलेज, वाराणसी), **प्रो० सत्यपाल शर्मा,** (प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, बी०एच०यू०), **डॉ० उदय प्रकाश,** (प्रोफेसर, श्री बलदेव पी०जी० कालेज, बड़ागाँव, वाराणसी)

सम्पादन : **डॉ० प्रदीप जायसवाल,** शोध प्रवक्ता, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी।
श्री देवेन्द्र कुमार दुबे, शोध प्रवक्ता, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी।

लेखक मंडल : **डॉ० प्रसून कुमार सिंह** (प्रवक्ता, डायट, प्रयागराज), **डॉ० दिनेश कुमार यादव** (प्रवक्ता, डायट, कौशाम्बी), **डॉ० अजीत कुमार धुसिया** (प्रवक्ता, डायट, मऊ), **डॉ० जितेन्द्र गुप्ता** (प्रवक्ता, डायट, सन्त कबीर नगर), **श्री अमरेन्द्र कुमार मिश्र** (प्रवक्ता, डायट, प्रतापगढ़), **डॉ० मनीष कुमार यादव** (प्रवक्ता, सी०टी०ई०, वाराणसी), **डॉ० हरिओम त्रिपाठी** (प्रवक्ता, डायट, सुलतानपुर), **श्री योगिराज मिश्र** (प्रवक्ता, रा०शि०सं०, प्रयागराज), **श्री आदर्श कुमार सिंह** (प्रवक्ता, डायट, देवरिया), **श्री विनय कुमार मिश्र** (प्रवक्ता, डायट, फतेहपुर), **श्री सुदर्शन यादव** (से०नि० प्रवक्ता, डायट, गोरखपुर), **डॉ० अभिषेक दुबे** (प्रवक्ता, वि०ना०रा०इ० कॉलेज, भदोही), **डॉ० प्रेमलता** (प्रवक्ता, पं०दी०उ०मा०इ० कॉलेज, अम्बेडकरनगर), **डॉ० चंचल** (प्रवक्ता, बा०इ० कॉलेज, मऊ), **डॉ० दीपा द्विवेदी** (प्रवक्ता, रा०बा०इ० कॉलेज, सुल्तानपुर), **डॉ० विभा सिंह** (स०अ०, कि०इ० कॉलेज, बरहनी, चन्दौली), **श्री मनमोहन सिंह यादव** (स०अ०, रा०हा० स्कूल, खानपुर, गाजीपुर), **डॉ० नीलम वर्मा** (स०अ०, रा०हा० स्कूल, गरला, चन्दौली), **डॉ० विशालाक्षी देवी** (स०अ०, रा०बा०इ० कॉलेज चोलापुर, वाराणसी), **श्रीमती रीतू सिंह** (स०अ०, रा०हा० स्कूल, चितईपुर, वाराणसी), **श्रीमती नंदिता शर्मा** (स०अ०, रा०हा० स्कूल, धौरहा, वाराणसी), **डॉ० प्रतिभा मिश्रा** (स०अ०, उ०प्रा०वि० पाली, भदोही), **श्री प्रवीण कुमार द्विवेदी** (स०अ०, उ०प्रा०वि० धरतीडोलवा, सोनभद्र), **श्री मिथिलेश कुमार सिंह** (स०अ०, प्रा०वि० पचेवरा, मीरजापुर), **श्री शैलेश कुमार सिंह** (स०अ०, प्रा०वि० कैनाल बस्ती, मीरजापुर), **श्री विकास शर्मा** (स०अ०, क०वि० नगला सूरजभान, आगरा) **श्री रामनारायण द्विवेदी** (स०अ०, प्रा०वि० अयोध्या, वाराणसी), **श्री रविन्द्र कुमार यादव** (स०अ०, प्रा०वि० हडियाडीह, वाराणसी), **श्रीमती नीलम सिंह** (स०अ०, उ०प्रा०वि० बारीगाँव, भदोही), **डॉ० सरोज पाण्डेय** (स०अ०, प्रा०वि० गाडीवानपुर, वाराणसी), **श्री हिमांशु मिश्रा** (स०अ०, कं०वि० ढोलो, सोनभद्र), **श्रीमती रश्मि रूपम** (स०अ०, प्रा०वि० मंगोलेपुर, वाराणसी), **डॉ० अखिलेश कुमार पाण्डेय** (स०अ०, प्रा०वि० होलापुर, वाराणसी), **श्री चन्दन कुमार निगम** (स०अ०, रा० हाईस्कूल भकुरा, जौनपुर), **श्रीमती भारती पाठक** (स०अ०, क०वि० भूलईपुर, अयोध्या)

डिजायनिंग एवं ग्राफिक्स : **श्री विकास शर्मा** (सहायक अध्यापक, कम्पोजिट विद्यालय नगला सूरजभान, शमसाबाद, आगरा)

आवरण : **श्री कासिम फ़ारुखी,** (प्रवक्ता–कला, राज्य शिक्षा संस्थान, उ०प्र०, प्रयागराज)

आभार प्रशिक्षण संदर्भ साहित्य के विकास में अनेक पुस्तकों का अवलोकन व पाठ्यसामग्री का उपयोग किया गया है। हम उनके प्रति आभारी हैं।

निदेशक की कलम से

गणेश कुमार
निदेशक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।
फोन (कार्यालय) : 0522–2780385, 2780505
(फैक्स) : 0522–2781125
ई–मेल : dscertup@gmail.com

संदेश

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। भाषायी कौशल के समुचित विकास से सभी विषयों को सीखना सरल, सुगम एवं प्रभावी हो जाता है। बच्चों में अपेक्षित भाषायी कौशल विकसित करने के उद्देश्य से शिक्षकों को प्रभावी प्रशिक्षण प्रदान करना हमारी प्राथमिकता है। हिन्दी शिक्षण को सरल, रुचिकर व बोधगम्य बनाने, रचनात्मक चिंतन एवं प्रभावी संप्रेषण कौशल के विकास एवं प्रशिक्षकों में क्षमता संवर्धन हेतु राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी द्वारा द्विवर्षीय डी0एल0एड0 पाठ्यक्रम पर आधारित **'हिन्दी भाषा शिक्षण'** हेतु प्रशिक्षण संदर्भ सामग्री का विकास किया गया है।

प्रस्तुत प्रशिक्षण साहित्य के माध्यम से शिक्षक–प्रशिक्षकों एवं डी0एल0एड0 प्रशिक्षुओं में प्रभावी हिन्दी शिक्षण कौशल एवं भाषायी दक्षताओं की समझ को बेहतर बनाने हेतु नवाचारी गतिविधियों, क्रिया–कलापों, युक्तियों, आदर्श शिक्षण प्रविधि एवं योजनाएँ, आदर्श प्रश्न–पत्र, केस स्टडी, श्रव्य–दृश्य सामग्री आदि को समाहित करते हुए आदर्श भाषा शिक्षण के क्रियान्वयन को प्रोत्साहित किया गया है। इसके माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में उल्लिखित भाषायी कौशल के विकास सम्बन्धी अनुशंसा को क्रियान्वित करने में भी सफलता मिलेगी।

राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी का यह प्रयास सराहनीय है। हिन्दी भाषा शिक्षण हेतु प्रशिक्षण संदर्भ सामग्री के विकास एवं प्रयोग से जुड़े सम्बन्धित समस्त हितधारकों को मेरी बधाई एवं शुभकामनाएँ।

29/11/2024
(गणेश कुमार)

प्राक्कथन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मानती है कि शिक्षा व्यवस्था में मौलिक सुधारों का केंद्र शिक्षक होता है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षकों को गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण प्रदान किया जाए। इसी के दृष्टिगत डी0एल0एड0 के हिन्दी विषय के पाठ्यक्रम पर आधारित सेमेस्टरवार (कुल चार सेमेस्टर) प्रशिक्षण संदर्भ सामग्री का विकास किया गया है। इस प्रशिक्षण संदर्भ सामग्री द्वारा डी0एल0एड0 प्रशिक्षण हेतु प्रामाणिक व उपयोगी संदर्भ सामग्री के अंतर्गत सरल एवं सहज गतिविधियों एवं क्रिया–कलापों का संकलन करते हुए उनके कक्षा–कक्ष में क्रियान्वयन हेतु प्रोत्साहित किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति की अनुशंसा इस बात को महत्व देती है कि गतिविधियाँ एवं शिक्षण अधिगम सहायक सामग्री आदि के अनुप्रयोग से बच्चे तेजी से विषय की अवधारणाओं को समझ लेते हैं। इस परिप्रेक्ष्य से प्रस्तुत पुस्तक में भाषाई कौशलों के विकास, हिंदी भाषा की ध्वनियों को सुनकर समझते हुए शुद्ध उच्चारण करना, देवनागरी लिपि की विशेषताएँ, विराम चिह्नों का प्रयोग, रचनात्मकता तथा शिक्षण विधियों को नवाचारी तरीके से सीखने–समझने का प्रयास किया गया है। इसकी सहायता से जहाँ एक ओर प्रशिक्षक डी0एल0एड0 शिक्षकों को आनंदपूर्ण ढंग से प्रशिक्षित कर सकेंगे, वहीं दूसरी ओर डी0एल0एड0 प्रशिक्षु भी इसकी सहायता से विद्यालय में बच्चों को खेल–खेल में भाषाई कौशल सिखा पाने में सक्षम होंगे।

मेरा विश्वास है कि डी0एल0एड0 के हिन्दी विषय के पाठ्यक्रम पर आधारित सेमेस्टरवार विकसित प्रशिक्षण संदर्भ सामग्री शिक्षक–प्रशिक्षकों को प्रभावी प्रशिक्षण करने में उपयोगी सिद्ध होगी तथा सेवापूर्व प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे डी0एल0एड0 प्रशिक्षुओं के लिए भी अपनी अर्थपूर्ण भूमिका निभाएगी।

(चन्दना रामइकबाल यादव)
निदेशक
राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश,
वाराणसी।

विषय सूची

इकाई 1
पृष्ठ संख्या : 10–22

कहानी लोककथा, रोचक प्रसंगों को ध्यानपूर्वक सुनना एवं याद करना

1.1 कहानी : तत्त्व, महत्त्व एवं इसकी विकास यात्रा
1.2 कहानी लेखन की शिक्षण विधियाँ
1.3 लोककथा : विशेषताएँ, भेद एवं संदर्भ लिंक
1.4 लोककथा एवं कहानी में अन्तर
1.5 रोचक प्रसंग एवं इसके कुछ दृष्टान्त

इकाई 2
पृष्ठ संख्या : 23–30

परिवेशीय विषयों, सामाजिक घटनाओं, स्व-अनुभवों पर चर्चा

इकाई 3
पृष्ठ संख्या : 31–47

गद्‌य, पद्‌य के अंशों का शुद्‌ध उच्चारण, लय एवं उतार-चढ़ाव के साथ पढना, बोलना

3.1 गद्‌य : परिभाषा, प्रमुख विधाएँ एवं शिक्षण के उद्‌देश्य
3.2 पद्‌य : परिभाषा एवं भेद
3.3 गद्‌य और पद्‌य में अंतर
3.4 वाचन और पठन, डिकोडिंग और पठन एवं वाचन के भेद
3.5 शुद्‌ध उच्चारण : महत्त्व, ध्वनियों का वर्गीकरण एवं अक्षर और उच्चारण के स्थान
3.6 आक्षरिक उच्चारण के नियम
3.7 अशुद्‌ध उच्चारण : कारण एवं उनका निराकरण
3.8 उच्चारण स्थानों का ज्ञान कराना

इकाई 4
पृष्ठ संख्या : 48–56

स्वतंत्र (मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति)

4.1 स्वतंत्र अभिव्यक्ति : महत्त्व एवं आवश्यकता
4.2 मौखिक अभिव्यक्ति : उद्देश्य, शिक्षण विधियां एवं उपयोगिता
4.3 लिखित अभिव्यक्ति एवं इसके साधन

इकाई 5
पृष्ठ संख्या : 57–63

स्तरानुकूल गद्‌य एवं पद्‌य में शब्दों, वाक्यांशों, विराम-चिह्नों तथा समान ध्वनियों को समझना

5.1 विराम चिह्नों के नाम संकेत एवं उदाहरण
5.2 तुक/तुकांत

इकाई 6
पृष्ठ संख्या : 64–82

उपसर्ग, प्रत्यय एवं सामासिक पदों की पहचान तथा प्रयोग

6.1 उपसर्ग : संस्कृत, हिंदी एवं उर्दू के उपसर्ग
6.2 दो उपसर्गों से निर्मित शब्द
6.3 प्रत्यय : संस्कृत, हिंदी एवं उर्दू के प्रत्यय
6.4 उपसर्ग और प्रत्यय में अंतर
6.5 समास एवं इसके भेद

इकाई 7

पृष्ठ संख्या : 83–123

संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया- विशेषण, वचन, लिंग तथा काल को पहचानना

7.1 संज्ञा एवं इसके प्रकार
7.2 सर्वनाम एवं इसके प्रकार
7.3 क्रिया, धातु एवं इसके भेद
7.4 कर्म के आधार पर क्रिया भेद
7.5 विशेषण एवं इसके प्रकार
7.6 क्रिया विशेषण एवं इसके भेद
7.7 वचन एवं इसके प्रकार
7.8 लिंग एवं इसके प्रकार
7.9 काल एवं इसके प्रकार

इकाई 8

पृष्ठ संख्या : 124–131

पाठ्यवस्तु का मौन वाचन करते हुए उसमें निहित विचारों भाव एवं तथ्यों को समझना

8.1 पठन कौशल
8.2 वाचन के प्रकार
8.3 पाठ्यवस्तु में निहित भाव विचार एवं तथ्य

इकाई 9

पृष्ठ संख्या : 132–135

शिक्षक के निर्देशानुसार छोटे-छोटे वाक्य लिखना

इकाई 10

पृष्ठ संख्या : 136–141

औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्र

10.1 पत्र : विषेशताएँ, महत्त्व एवं प्रकार
10.2 औपचारिक पत्र एवं इसका प्रारूप
10.3 अनौपचारिक पत्र : लेखन के मुख्य बिंदु, प्रारूप एवं इसके प्रकार

इकाई 11

पृष्ठ संख्या : 142–145

विषयों पर मौलिक रूप से लिखना

11.1 मौलिक अभिव्यक्ति में लेखन
11.2 मौलिक लेखन हेतु विषय चयन
11.3 मौलिक लेखन अभिव्यक्ति का महत्त्व एवं उपयोगिता

- प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र मॉडल पेपर
- आदर्श शिक्षण योजना प्रारूप
- आदर्श पाठ योजना प्रारूप

कक्षा–शिक्षण : विषयवस्तु

- कहानी, लोककथा, रोचक प्रसंगों को ध्यानपूर्वक सुनना व याद करना।
- परिवेशीय विषयों, सामाजिक घटनाओं, स्व अनुभवों पर चर्चा।
- गद्य व पद्य के अंशों को शुद्ध उच्चारण, लय एवं उतार–चढ़ाव के साथ पढ़ना, बोलना।
- स्वतंत्र (मौखिक एवं लिखित) अभिव्यक्ति।
- स्तरानुसार गद्य–पद्य में शब्दों, वाक्यांशों, विराम चिह्नों एवं समान ध्वनियों को समझना।
- उपसर्ग, प्रत्यय, सामासिक पदों की पहचान व प्रयोग।
- संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया विशेषण, वचन, लिंग तथा काल को पहचानना।
- पाठ्यवस्तु का मौन वाचन करते हुए उसमें निहित विचारों, भावों एवं तथ्यों को समझना।
- शिक्षक के निर्देशानुसार छोटे–छोटे वाक्य लिखना।
- औपचारिक–अनौपचारिक पत्र लिखना।
- परिचित विषयों पर मौलिक रूप से लिखना।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल

प्रशिक्षु शिक्षकों को हिन्दी के प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित ज्ञान, जानकारी एवं घटनाओं के अंतः संबंधों को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, खेल, गतिविधि, दृश्य–श्रव्य (वीडियो /आडियो), सामग्री, प्रयोग तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किए जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- कहानी, लोककथा के संग्रह तैयार करना।
- उपसर्ग, प्रत्यय, सामसिक के विभेद हेतु चार्ट/मॉडल बनाना।
- संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया विशेषण, वचन, लिंग को चार्ट/मॉडल के माध्यम से प्रस्तुत करना।
- विभिन्न शब्दों के विभिन्न रूपों (संज्ञा, सर्वनाम आदि) को चार्ट के माध्यम से प्रस्तुत करना।
- पत्रों के प्रकार एवं उनमें मूलभूत अंतर को चार्ट/मॉडल के माध्यम से स्पष्ट करना।
- समाचार–पत्रों, पत्रिकाओं से कक्षा शिक्षण के लिये उपयोगी सामग्री का संकलन तैयार करना।

इकाई 1

कहानी लोककथा, रोचक प्रसंगों को ध्यानपूर्वक सुनना एवं याद करना

1.1 कहानी : तत्त्व, महत्त्व एवं इसकी विकास यात्रा
1.2 कहानी लेखन की शिक्षण विधियाँ
1.3 लोककथा : विशेषताएँ, भेद एवं संदर्भ लिंक
1.4 लोककथा एवं कहानी में अन्तर
1.5 रोचक प्रसंग एवं इसके कुछ दृष्टान्त

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु कहानी, लोक कथा एवं रोचक प्रसंग विधा की रचनाओं को पहचान लेते हैं।
2. प्रशिक्षु कहानी, लोक कथा एवं रोचक प्रसंगों में प्रयुक्त हुए विभिन्न बोलियों के शब्दों का अर्थ ग्रहण कर लेते हैं तथा आवश्यकतानुसार प्रयोग कर लेते हैं।
3. प्रशिक्षु कहानी, लोककथा तथा रोचक प्रसंगों के माध्यम से अध्यापन कार्य करते हैं।
4. प्रशिक्षु कहानी, लोककथा तथा रोचक प्रसंगों के माध्यम से बच्चों में संवाद कौशल विकसित कर लेते हैं।
5. प्रशिक्षु कहानी, लोककथा तथा रोचक प्रसंगों को स्मृति में धारण कर आवश्यकतानुसार पुन: प्रस्तुत करते हैं।

कहानी, लोककथा और रोचक प्रसंग अभिव्यक्ति के महत्त्वपूर्ण साधन हैं। कहानी के माध्यम से जहाँ जटिल से जटिल विषय को सरलता से समझाया जा सकता है वहीं लोककथा के माध्यम से बच्चों में व्यावहारिकता एवं आशावादिता के गुणों को विकसित किया जा सकता है। बच्चों को मनोरंजक ढंग से प्रेरणा प्रदान करने हेतु रोचक प्रसंगों का प्रयोग अत्यंत लाभकारी सिद्ध होता है। कहानी लोककथा और रोचक प्रसंग जैसी विधाएँ बच्चों को सुनने के लिए प्रेरित करती हैं जिससे उनकी श्रवण दक्षता का विकास होता है। इसके साथ ही साथ बच्चों की कल्पना शक्ति को विकसित करने में भी कहानी लोककथा तथा रोचक प्रसंगों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। इनकी इसी विशिष्टता को ध्यान में रखते हुए प्राथमिक शिक्षा में इन्हें प्रमुख विधियों के रूप में स्वीकृति प्राप्त है।

प्रशिक्षकों हेतु निर्देश

1. प्रशिक्षक, प्रशिक्षुओं को सरल भाषा में कहानी, लोक कथा, रोचक प्रसंग तथा परिवेशीय विषयों को बताएँगे।
2. प्रशिक्षक, स्व–अनुभवों के आधार पर हाव–भाव के साथ कहानी, लोककथा तथा रोचक प्रसंगों का प्रस्तुतीकरण करेंगे।
3. प्रशिक्षक, प्रशिक्षुओं में भाषा एवं संवाद कौशल का विकास करवाएँगे।
4. प्रशिक्षक, प्रशिक्षुओं से कहानी, लोककथा तथा रोचक प्रसंग का प्रस्तुतीकरण करवाएँगे।

प्रशिक्षुओं हेतु निर्देश

1. कहानी, लोककथा से जुड़े प्रसंग एवं सामाजिक घटनाओं की अवधारणात्मक समझ को विकसित करेंगे।
2. भाषा कौशल तथा संवाद कौशल को विकसित करेंगे।
3. कहानी का पठन–पाठन हाव–भाव के साथ करेंगे।
4. विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से मानवीय मूल्य तथा सामाजिक मूल्यों का विकास करेंगे।
5. स्व–अनुभव के आधार पर परिवेशीय एवं सामाजिक घटनाओं की अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास करेंगे।

गतिविधि–1

गतिविधि का नाम : आओ गढ़ें कहानी

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : कहानी का चित्र एवं उससे संबंधित कुछ अलग–अलग शब्द।

उद्देश्य: विषय वस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं के समक्ष कक्षा में एक चार्ट पेपर एक कहानी का चित्र एवं उससे संबंधित कुछ अलग–अलग शब्द लिखकर प्रस्तुत करेंगे और इन शब्दों के माध्यम से किसी एक कहानी का रूप देने के लिए कहेंगे। नीचे चित्र में शेर, जंगल, पेड़, चूहा, दाँत, जाल, शिकारी, के माध्यम से सभी प्रशिक्षुओं को कहानी लिखने को कहेंगे।

इसके बाद प्रशिक्षक कहानी विधा के बारे में प्रशिक्षुओं को बताएँगे। **कहानी गद्य की एक प्रमुख विधा है।** यह प्रायः सभी के द्वारा सुनी और सुनाई जाती है। सबके जीवन में कभी न कभी कोई अविस्मरणीय घटना अवश्य घटित होती है, जिसे वे रोचक ढंग से बताते हैं और सुनने वाला भी उसे ध्यानपूर्वक सुनता है।

मानव संस्कृति को संरक्षित करने में जिन साहित्यिक विधाओं ने सर्वाधिक योगदान दिया है उनमें से कहानी एक महत्त्वपूर्ण विधा है। कहानी विश्व की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है, जो दुनिया भर के प्रत्येक समाज में सभ्यता के आरंभिक काल से ही किसी न किसी रूप में विद्यमान है। प्राचीन काल का साहित्य कहानियों से भरा पड़ा है। वैदिक काल में तो कहानियों के सहारे बड़े–बड़े मर्म की बातें कही गई हैं। यहाँ तक कि बौद्ध और जैन धर्म के प्रसार काल तक कहानियों का उपयोग एक विशेष पद्धति एवं एक विशेष अभिप्राय को लेकर होता आया है। भारतीय साहित्य की प्राचीनतम विधाओं में कहानी का प्रमुख स्थान रहा है।

हमारे समाज में कहानियों की परंपरा अत्यंत प्राचीन काल से चली आ रही है, जैसे– पंचतंत्र, हितोपदेश, कथासरित्सागर तथा जातक कथाएँ जैसी रचनाएँ इस प्रवृत्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं।

1.1 कहानी किसे कहते हैं?

कहानी विधा को परिभाषित करते हुए कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द ने लिखा है कि **'कहानी वह ध्रुपद–तान है जिसमें गायक महफिल शुरू होते ही अपनी संपूर्ण प्रतिभा दिखा देता है, एक क्षण में चित्त को इतने माधुर्य से परिपूरित कर देता है, जितना रात भर गाना सुनने से भी नहीं हो सकता है।'**

सुप्रसिद्ध आलोचक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहानी विधा को परिभाषित करते हुए लिखा है– **'सादे ढंग से कुछ अत्यंत व्यंजक घटनाएँ और थोड़ी बातचीत सामने लाकर क्षिप्र गति से किसी एक गंभीर संवेदना या मनोभाव में पर्यवसित होने वाली गद्य विधा कहानी है।'**

1.1.1 कहानी के तत्त्व

कथावस्तु– कथावस्तु कहानी का वह ढाँचा है, जिस पर कहानी निर्मित होती है। किसी कथन को योजनाबद्ध तरीके से नियोजित करना ही कथानक कहलाता है। किसी भी कथानक की तीन अवस्थाएँ होती हैं– आरंभ, उत्कर्ष और अंत। आदि से अंत तक एकोन्मुखता बनी रहती है। आदि में वह पीठिका तैयार करनी पड़ती है, जिस पर कहानी का अंत प्रतिष्ठित रहता है। कथानक के मध्य भाग में वस्तु का विस्तार होता है। इसी में कहानी की वास्तविक आत्मा प्रस्तुत होती है और कहानी के लक्ष्य की पृष्ठभूमि तैयार हो जाती है। कभी–कभी कहानी में मध्य बिंदु का पता ही नहीं लगता है और कथानक की चरम सीमा अंत में स्पष्ट होती है। इस दृष्टि से अंत का स्तर अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, यहीं पहुँचकर कहानी अपनी संपूर्ण संवेदनशीलता प्रभावोत्पादकता एवं पूर्णता का परिचय देती है।

पात्र एवं चरित्र–चित्रण– पात्र कथावस्तु के सजीव संचालक हैं। यही कथावस्तु के आदि, विकास और अंत के परिचायक हैं तथा इन्हीं से कहानी को आत्मीयता प्राप्त होती है। पात्र और कथावस्तु का अन्योन्याश्रित संबंध होता है। दोनों मिलकर कहानी के केंद्रीय भाव को प्रकट करते हैं। कुछ पात्र सामान्य होते हैं, कुछ प्रतीकात्मक। सामान्य पात्रों के भी दो वर्ग होते हैं जहाँ कुछ पात्र वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं तो वहीं कुछ व्यक्ति का। कहानी लघु होने के कारण मुख्य पात्र को ही पुकारती है। चरित्रांकन की सफलता के लिए यह भी आवश्यक है कि चरित्र गतिशील हो और यथार्थ जीवन से संबद्ध हो।

कथोपकथन एवं संवाद– कहानी कला के मूल तत्त्वों में कथोपकथन एक काल्पनिक एवं नाटकीय तत्त्व है। अतएव नाटकीयता उसका स्वाभाविक गुण है, यही कहानी कला का सर्वोत्तम अंश है, इसी से कहानी में आकर्षण, सजीवता और पाठकों में जिज्ञासा उत्पन्न होती है। इस तत्त्व से कहानी की मूल संवेदना और पात्रों से सीधा संबंध जुड़ा रहता है। इस तरह से कहानी के अंतर्गत कथोपकथन की तीन दिशाएँ होती हैं–

- कथावस्तु का विकास
- पात्रों का चरित्र–चित्रण
- कहानी कौतूहल के साथ प्रवाह और आकर्षण की सृष्टि

देशकाल एवं वातावरण– वातावरण के अंतर्गत देशकाल और परिस्थिति आती है। लेखक पात्रों के माध्यम से घटना से संबंधित परिस्थितियों का चित्रण सजीव रूप में करता है। संपूर्ण परिस्थितियों की योजना का वर्णन साभिप्राय और क्रमिक ढंग से किया जाता है। प्रकृति, ऋतु, दृश्य आदि का अत्यंत संक्षिप्त और सांकेतिक रूप में वर्णन करके किसी घटना को सजीव एवं यथार्थ बना दिया जाता है।

वातावरण के दृष्टि विधान से न केवल चरित्र की मनः स्थिति पर प्रकाश पड़ता है वरन् प्रेम, शोक, व्यापार आदि भी सजीव बन जाता है। मनुष्य का रचनात्मक विकास और ह्रास बहुत कुछ वातावरण की देन है। संवेदना यदि कहानी की आत्मा है तो वातावरण उसका शरीर। वातावरण की दो पद्धतियाँ हैं– पहले प्रकार में विषयारंभ और प्रकृति चित्रण किया जाता है, दूसरे प्रकार की पृष्ठभूमि में देशकाल और परिस्थितियों का आंचलिक एवं स्थानीय रंग उपस्थित किया जाता है। वृन्दावन लाल वर्मा की कहानी 'शरणागत' में बुन्देलखण्ड की झलक और फणीश्वर नाथ रेणु की कहानी 'पंचलाइट' में स्थानीय भाषा, रीति–रिवाज, वेश–भूषा, क्रिया–कलाप आदि का ऐसा ही चित्र विधान दिखलाई पड़ता है।

भाषा–शैली – भाषा, भावों को अभिव्यक्त करने का माध्यम है और अभिव्यक्ति का ढंग शैली है। सरल एवं बोधगम्य भाषा के द्वारा ही कहानी को प्रभावशाली बनाया जा सकता है। भाषा की क्लिष्टता और दुरूहता से कथन का अभिप्राय स्पष्ट नहीं हो पाता और कहानी अस्वाभाविक हो जाती है। काल और पात्र की यथार्थ अभिव्यक्ति के लिए भाषा में स्वाभाविकता अनिवार्य है। भाषा जितनी सरल और भावाभिव्यंजक होगी, उतनी ही प्रभावशाली होगी। प्रेमचन्द की कहानियों का प्रभाव पाठकों पर इसीलिए पड़ता है क्योंकि उनकी भाषा सरल और सरस है। एक कुशल लेखक साधारण से साधारण कथानक में भी अपनी सुंदर शैली से प्राण प्रतिष्ठा कर देता है। भाषा की रोचक शैली पाठकों को मंत्र मुग्ध कर देती है। लघु कहानियों में संदर्भों को स्पष्ट करने के लिए कहीं–कहीं सांकेतिक भाषा का प्रयोग भी किया जाता है जो इसकी व्यंजना शक्ति को बढ़ावा देती है। आज की कहानियों में अनुभूति की स्वाभाविक अभिव्यक्ति के लिए सांकेतिक भाषा का प्रयोग भी होता है।

उद्देश्य– कहानी में कोई न कोई उद्देश्य सदैव अंतर्निहित रहता है। यह उद्देश्य जीवन मूल्यों से प्रेरित होता है। स्पष्ट रूप से उद्देश्य संपूर्ण कहानी कला का वह तत्त्व है जिसकी प्राप्ति के लिए कहानीकार अपनी कहानी में विविध प्रयोग करता है। कहानीकार विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों, समस्याओं और उनके निदान तथा निर्णय को अपनी कहानी का उद्देश्य बनाता है और उसी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु ही कहानी के सभी तत्त्व, जैसे– कथानक या कथावस्तु, पात्र एवं चरित्र–चित्रण, कथोपकथन एवं संवाद, देशकाल एवं वातावरण, भाषा–शैली आदि की आवश्यकता होती है। एक ही घटना को लेकर अनेक प्रकार की कहानी लिखी जा सकती है किंतु सबका उद्देश्य भिन्न–भिन्न होने के कारण कहानी का रूप बदल जाता है।

1.1.2 कहानी का महत्त्व

कहानी सुनाने का उद्देश्य मनोरंजन के साथ–साथ समसामयिक जीवन को समझने उसमें अपनी भूमिका को देखने, पात्रों के बारे में चर्चा के माध्यम से विभिन्न परिस्थितियों को समझने व उसके अनुसार व्यवहार करने की समझ विकसित करना होता है। कहानी सीखने–सिखाने की सबसे पुरानी और प्रभावशाली विधा है। संसार की समस्त संस्कृतियों ने हमेशा से ही विश्वास, परंपराओं और इतिहास को भविष्य की पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए कथा एवं कहानियों का उपयोग किया है। कहानी कल्पनाशीलता को बढ़ाती है। कहानी, कहने और सुनने वाले के बीच समझ स्थापित करने के लिए सेतु का कार्य करती है।

हमारे देश में बहुसांस्कृतिक समाज है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा– 2005 इस बात की अनुशंसा करती है कि स्कूली ज्ञान को समुदाय के ज्ञान से जोड़ा जाए। विभिन्न समुदायों में ज्ञान के संसाधन के रूप में प्रचलित कहानियाँ स्कूल को समुदाय से जोड़ने का एक अच्छा साधन हैं। कहानी विद्यालयों में शिक्षण का एक सशक्त माध्यम हो सकती है। संक्षेप में कहानियों के महत्त्व को इस प्रकार दर्शाया जा सकता है–

1. कहानी से ज्ञान की वृद्धि होती।
2. कहानी के द्वारा किसी घटना अथवा वातावरण का महत्त्व–निरूपण सजीवता के साथ होता है।
3. इसके द्वारा कल्पना शक्ति का विकास होता है।
4. कहानी मनोरंजन का एक अच्छा साधन है। मनोरंजक ढंग से सीखा गया ज्ञान स्थायी होता है।
5. कहानी पढ़ने–लिखने से बच्चों में बोलने एवं लिखने की दक्षता का विकास होता है।
6. कहानी के माध्यम से बच्चे जीवन की विभिन्न परिस्थितियों से परिचित होते हैं।
7. कहानी के द्वारा बच्चों की तर्कक्षमता एवं कल्पनाशीलता में वृद्धि एवं विभिन्न मूल्यों (यथा– मानवीय, सामाजिक इत्यादि) का विकास होता है।

विषय वस्तु के आधार पर कहानी को हम निम्नलिखित भागों में बाँट सकते हैं–

- घटना प्रधान कहानी
- चरित्र प्रधान कहानी
- समस्या प्रधान कहानी
- भाव प्रधान कहानी
- वातावरण प्रधान कहानी

- **घटना प्रधान–** घटना प्रधान कहानी में घटनाएँ ही कथानक निर्माण की मुख्य घटक होती हैं। इन्हीं घटनाओं के माध्यम से समूचा कथानक निर्मित होता है। ऐसे कथानकों के विकास में सदैव घटना और संयोग का विशेष सहारा लिया जाता है। विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक' की **'ताई'** कहानी इसका उदाहरण है। इसके अंतर्गत जासूसी, रहस्यपूर्ण तथा अद्भुत कहानियाँ आती हैं।
- **चरित्र प्रधान–** चरित्र प्रधान कहानियों का मुख्य उद्देश्य चरित्र–चित्रण और चरित्र विश्लेषण होता है। इन कहानियों का मुख्य धरातल मनोविज्ञान होता है। उदाहरण के लिए **प्रेमचन्द** की प्रसिद्ध कहानी **'कफन'** चरित्र प्रधान कहानियों का जीवंत उदाहरण हैं। इसके अतिरिक्त **जैनेंद्र कुमार** की **'मास्टर जी'** ,**अज्ञेय** की **'छाया'**, **उपेन्द्रनाथ 'अश्क'** की **'पिंजरा'** आदि कहानियाँ भी चरित्र प्रधान कहानियों में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं।
- **समस्या प्रधान–** समस्या प्रधान कहानियों से आशय ऐसी कहानियों से है जिसमें समाज की किसी समस्या को केंद्र में रखकर लिखा जाता है। कहानी का ताना–बाना इस समस्या के इर्द–गिर्द घूमता रहता है। **ज्ञानरंजन** की कहानी **'पिता'** में पुरानी और नयी पीढ़ियों के सोच में आए बदलाव का चित्रण किया गया है। इसी क्रम में **उषा प्रियंवदा** की **'वापसी'**, **भीष्म साहनी** की **'चीफ की दावत'** आदि समस्या प्रधान कहानियाँ हैं।
- **भाव प्रधान–** भाव प्रधान कहानी में किसी एक भाव या विचार को केंद्र में रखकर कहानी बुनी जाती है। इसमें पात्र एवं वातावरण का सृजन, भाव को व्यक्त करने के लिए होता है। **प्रेमचन्द** की **'ईदगाह'**, **सियारामशरण गुप्त** की **'काकी'**, **शिवानी** की **'अपराजिता'**, **जैनेंद्र** की **'नीलम देश की राज कन्या'**, **अज्ञेय** की **'कोठरी की बात'** इसी श्रेणी में आती हैं।
- **वातावरण प्रधान–** इन कहानियों में वातावरण अर्थात् परिवेश को महत्त्व दिया जाता है। कहानी केवल काल्पनिक नहीं होती बल्कि जीवन के परिवेश से जुड़ी रहती है। हमारे कार्य एवं व्यवहार पर वातावरण का प्रभाव होता है। विशेषतः ऐतिहासिक कहानी में वातावरण अत्यधिक महत्त्वपूर्ण होता है क्योंकि उसमें उस युग की सभ्यता–संस्कृति परिलक्षित होती है। प्राकृतिक परिवेश, संवाद, संगीत, भाषा आदि की सहायता से वातावरण को सजीव बनाया जाता है। उदाहरण के

लिए **प्रेमचन्द** की **'पूस की रात'**, **प्रसाद** की **'आकाशदीप'** आदि वातावरण प्रधान प्रमुख कहानियाँ हैं।

1.1.3 हिन्दी कहानी की विकास यात्रा

कथा/कहानियों का आरंभ वैदिक युग से ही हो गया था। प्राचीन कथा साहित्य के अंतर्गत वेद, उपनिषद, पुराण, पंचतंत्र, जातक एवं श्रुत परंपरा में प्रचलित दंत कथाओं का उल्लेख किया जा सकता है। ऋग्वेद के यम–यमी, पुरुरवा–उर्वशी आदि के संवाद, ऋषि–मुनियों की कथाएँ, भारतीय कहानी के प्राचीनतम रूप हैं। लौकिक संस्कृत में उपदेश और नीति–प्रधान कथाओं का प्राचुर्य मिलता है। धीरे–धीरे देशकाल तथा वातावरण के अनुसार कथाकारों द्वारा नई–नई कहानियों का सृजन भी किया जाने लगा।

आधुनिक कहानी, परंपरा और स्वरूप की दृष्टि से प्राचीन कहानी से भिन्न है। आज की कहानी का एक निश्चित लक्ष्य होता है। हिन्दी कहानी के विकास क्रम में प्रेमचन्द को आधार मानते हुए इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है–

- प्रेमचन्द पूर्व युग (1900–1915 ई॰)
- प्रेमचन्द युग (1915–1936 ई॰)
- उत्तर प्रेमचन्द युग (1936–1955 ई॰)
- नयी कहानी (1956–1960 ई॰)
- नयी कहानी के परवर्ती आंदोलन (1960 से अब तक)

1.2 कहानी लेखन की शिक्षण विधियाँ

कहानी रचना के माध्यम से बच्चों की कल्पनाशीलता एवं अभिव्यक्ति कौशल का विकास किया जा सकता है। कहानी लेखन की कई विधियाँ है–

- **कहानी की सहायता के आधार पर कहानी लिखना–** इस विधि के अंतर्गत प्रशिक्षक प्रशिक्षु को एक कहानी सुनाएँगे और इस कहानी की तरह किसी अन्य कहानी को बनाने के लिए प्रेरित करेंगे।
- **रूपरेखा (संकेत) के सहारे कहानी लिखना–**

एक किसान के लड़के लड़ते .... किसान मरने के निकट .... सबको बुलाया .... लकड़ियों को तोड़ने को दिया .... किसी से न टूटा .... एक–एक कर लकड़ियाँ तोड़ी .... शिक्षा।

उपर्युक्त संकेत को पढ़ने और थोड़ी कल्पना से काम लेने पर पूरी कहानी इस प्रकार बन जाएगी।

एकता

एक किसान था। उसके चार लड़के थे, किंतु उन चारों लड़कों में मेल नहीं था। वे आपस में बराबर लड़ते–झगड़ते रहते थे। एक दिन किसान बहुत बीमार पड़ा। जब वह मृत्यु के निकट पहुँच गया, तब उसने अपने चारों लड़कों को बुलाया और मिल–जुल कर रहने की शिक्षा दी, किंतु लड़कों पर उसकी बात का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। तब किसान ने लकड़ियों का गट्ठर मँगाया और लकड़ियों को तोड़ने को कहा। किसी से वह लकड़ी का गट्ठर न टूटा। फिर लकड़ियाँ गट्ठर से अलग की गयीं।

किसान ने अपने सभी लड़कों को बारी–बारी से बुलाया और लकड़ियों को अलग–अलग तोड़ने को कहा। सब ने आसानी से ऐसा किया और लकड़ियाँ एक–एक कर टूटती गयीं। अब लड़कों की आँखें खुलीं। तब उन्होंने समझा कि आपस में मिल–जुल कर रहने में कितना बल है।

- **अधूरी या अपूर्ण कहानी को पूर्ण करना–** प्रशिक्षक प्रशिक्षु को एक कहानी सुनाएँगे जिसकी प्रारंभिक भूमिका, वातावरण का सृजन करते हुए विषय को स्पष्ट करेंगे। मध्य तक आते–आते कहानी का अंत छोड़ देंगे, छोड़े गए अंत को प्रशिक्षु द्वारा पूर्ण किया जाएगा।
- **चित्रों की सहायता से कहानी का अभ्यास करना–** इस विधि में प्रशिक्षक कक्षा में कुछ अलग–अलग पोस्टर दिखाएँगे जिसमें विभिन्न प्रकार के चित्र होंगे। इन चित्रों के माध्यम से प्रशिक्षु अपनी कल्पनाशीलता, रचनात्मकता का प्रयोग करते हुए कहानी लिखेंगे।
- **वार्तालाप विधि से कहानी कहना–** इस विधि में प्रशिक्षक हाव–भाव के साथ प्रशिक्षुओं को कहानी सुनाएँगे। इससे कहानी में रोचकता उत्पन्न होगी एवं उनके श्रवण कौशल का भी विकास होगा। इसी तरह प्रशिक्षु भी कोई कहानी सुनाएँगे। ये कहानियाँ सरल और लघु रहेंगी। इन कहानियों का अभिनय भी करवा सकते हैं। इस कहानी में प्रयुक्त शब्दों पर क्रियाकलाप करवाना शिक्षण को रोचक बनाए रखेगा। जैसे; हँसना पर सभी का हँसना, दहाड़ना पर दहाड़ की ध्वनि करना आदि।

1.3 लोककथा

लोक साहित्य के क्षेत्र में लोक कथाओं का एक विशेष स्थान है। लोककथा या लोकवार्ता किसी मानव समूह की उस साझी अभिव्यक्ति को कहते हैं, जो कथाओं, कहावतों, चुटकुलों आदि अनेक रूपों में अभिव्यक्त होती है। इसके अलावा लोकवार्ता में उस मानव समूह की लोककथाएँ, लोकवस्तु, लोकगीत, लोकउत्सव आदि सब कुछ आ जाते हैं। सच तो यह है कि इन कथाओं के द्वारा जन सामान्य के मन का जितना अनुरंजन होता है उतना अन्य किसी साधन के द्वारा नहीं होता। भारतवर्ष लोक कथाओं की भूमि है। यहाँ की लोक कथाओं ने समस्त संसार के कथा साहित्य को प्रभावित किया है। लोक कथाओं में प्रेम का अभिन्न पुट पाया जाता है। इन कथाओं में भाई–बहन, माता–पिता, पति–पत्नी के बीच में विशुद्ध तथा सात्विक प्रेम की उपलब्धि होती है। मानव की मूल प्रवृत्तियाँ यथा– काम, क्रोध, मद, लोभ, सुख–दुःख आदि का भी वर्णन इन कथाओं में मिलता है।

आजकल की अनेक कहानियाँ किसी क्षणिक घटना को लक्षित कर लिखी जाती हैं परंतु अधिकतर लोक कथाओं का निर्माण मानव की किन्हीं मूल प्रवृत्तियों से संबद्ध होता है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि कुछ निश्चित कथानक रूढ़ियों और शैलियों में ढली लोक कथाओं के अनेक संस्करण उसके नित्य नई प्रवृत्तियों और चरित्र से युक्त होकर विकसित होने के प्रमाण हैं। लोककथा में अंतर्निहित इन्हीं तत्त्वों को ध्यान में रखते हुए डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि– ''लोककथा शब्द मोटे तौर पर लोक प्रचलित उन कथानकों के लिए व्यवहृत होता है, जो मौखिक या लिखित परंपरा से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्राप्त होते रहते हैं।''

लोककथा पर उत्कृष्ट अध्ययन कार्य करने वाले डॉ० कुंदन लाल उप्रेती ने लोककथा को परिभाषित करते हुए लिखा है कि– ''जो कथावस्तु और कलात्मक कथन प्रणाली एक साहित्यिक सौंदर्य प्राप्त कर लेती है, लोककथा कही जाती है। लोककथा विश्वव्याप्त है। इसमें लोकजीवन नाना रूपों में प्रकट होता चला आ रहा है। मन के सुख–दुःख, रीति–रिवाज, आस्थाएँ एवं विश्वास इन लोककथाओं में अभिव्यक्त होते रहते हैं।''

1.3.1 लोककथा की विशेषताएँ

लोककथा की विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

- संयोग में अथवा सुख में कथांत
- रहस्य, रोमांच, अलौकिकता की प्रधानता
- उन्मुखता की भावना
- वर्णन की स्वाभाविकता
- प्रेम का अभिन्न पुट
- अति शृंगारिकता का अभाव
- मानव की मूल प्रवृत्तियों का समागम
- मंगल कामना की भावना

1.3.2 लोककथा के भेद

लोककथा साहित्य में इसके भेद निम्नवत् बताए गए हैं–

- **उपदेशात्मक कथाएँ–** इन कथाओं का प्रधान उद्देश्य उपदेशात्मक होता है। **पंचतंत्र** और **हितोपदेश** में ऐसी अनेक कथाएँ मिलती हैं जिनका एकमात्र उद्देश्य उपदेश देना होता है। इसके अतिरिक्त **विक्रम बेताल** की कथा भी इसका उदाहरण है।
- **सामाजिक कथाएँ–** सामाजिक लोक कथाएँ वे हैं जिनमें समाज का चित्रण किया जाता है। इनमें राजा के द्वारा न्याय करना तथा अर्थाभाव से उत्पन्न होने वाले कष्ट का वर्णन पाया जाता है। इनमें विभिन्न प्रकार की सामाजिक बुराइयों से उत्पन्न घटनाओं का समावेश होता है। गृहक्लेश, बाल–विवाह, बहु–विवाह, दहेज आदि की निंदा भी इन कथाओं में मिलती है।
- **धार्मिक कथाएँ–** धार्मिक लोक कथाएँ वे कथाएँ होती हैं जिनमें व्रत, उपवास एवं उनसे प्राप्त उपलब्धियाँ सजोई गई होती हैं। सुखों की कामना के लिए कही गई इन व्रत कथाओं से उपदेश ग्रहण कर स्त्रियाँ संबंधित पर्वों के अवसर पर व्रतों का पालन करती हैं। पति, पुत्र एवं भाइयों की कुशलता तथा सम्पत्ति प्राप्ति इनका मूल लक्ष्य होता है। ऐसी लोक कथाओं में बहुला, जीवित्पुत्रिका, करवा चौथ, अहोई, डाला छठ, हरितालिका तीज, गणगौर आदि कथाएँ मुख्य स्थान रखती हैं।
- **प्रेम प्रधान कथाएँ–** प्रेम प्रधान लोक कथाओं में माता–पुत्र, पति–पत्नी, भाई–बहन के प्रेम का वर्णन किया जाता है। प्राय: सभी कथाओं में वर्णित प्रेम, कर्तव्य एवं निष्ठा पर आधारित होता है। सारंगा सदावृक्ष की कथा पूर्व जन्म के प्रेम पर आधारित है। शीत बसंत की कहानी में जहाँ माता के दरबार की बात आती है, वहीं भाई–बहन का प्रेम भी चरम सीमा पर पहुँचता दिखाई देता है।
- **मनोरंजन संबंधी कथाएँ –** ऐसी कहानियों का मूल उद्देश्य मनोरंजन करना होता है। बच्चे ऐसी कहानियों को शीघ्र याद कर लेते हैं। यह कथाएँ प्राय: छोटी हुआ करती हैं। भिन्न–भिन्न जानवरों जैसे– कुत्ता, बिल्ली, गीदड़, नेवला, शेर, बंदर, भालू और कौआ आदि से संबंध रखने वाली ये कहानियाँ बच्चों का मनोरंजन करती हैं। उदाहरण के लिए 'ढेले पर पात' की कथा।

- **जातीय पात्रों पर आधारित लोक कथाएँ–** कुछ लोक कथाएँ ऐसी भी हैं जो जातीय पात्रों पर आधारित होती हैं। ऐसी लोक कथाएँ कुछ जातियों में उत्पन्न विशिष्ट नायकों पर आधारित होती हैं। इन कथाओं को संबंधित जातियाँ आपस में ही कहती एवं सुनती हैं।

1.3.3 विविध लोककथाओं के अध्ययन हेतु संदर्भ लिंक

https://hindikahani.hindi-kavita.com/HK-Lok-Kathayen.php

1.4 लोककथा एवं कहानी में अंतर

- यद्यपि स्थूलतः दोनों विधाएँ एक जैसी ही प्रतीत होती हैं तथापि दोनों में सूक्ष्मतः कुछ भेद भी होते हैं।
- लोककथा और आधुनिक कहानी का मूल अंतर यह है कि लोककथा मौखिक एवं श्रुत परंपरा पर आधारित है जिसमें सुनने वाले और सुनाने वाले की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इसके बिना लोककथा की कल्पना भी नहीं की जा सकती जबकि आधुनिक कहानी सुनने और सुनाने के साथ पढ़कर उसमें अंतर्निहित कथ्य को बोध कराने में सक्षम है।
- लोककथा एवं आधुनिक कहानी में भावबोध का भी अंतर है। जहाँ लोककथा मध्ययुगीन भावबोध पर आधारित है वहीं आधुनिक कहानी आधुनिक भावबोध का निर्वहन करती है। दोनों में यह अंतर उनके ऐतिहासिक परिवेश के कारण है।
- लोककथाओं में संवाद संबंधी कोई नियम नहीं है, यही कारण है कि मनुष्य पशुओं, पक्षियों से बातचीत करते हुए दिखलाई पड़ते हैं जबकि आधुनिक कहानियों में संवाद कला या कथोपकथन का सम्यक् विकास दिखाई पड़ता है।
- लोककथाएँ प्रायः भावना प्रधान होती हैं जबकि आधुनिक कहानियों में भावों के साथ तर्क और बौद्धिकता को अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।
- लोककथाओं में चरित्र निर्माण आदर्शवादी ढ़ंग से अथवा बढ़ा–चढ़ाकर प्रस्तुत किया जाता है, जबकि आधुनिक कहानियों में चरित्र चित्रण का आधार मनोविज्ञान या सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों को बनाया गया है।

1.5 रोचक प्रसंग

रोचक प्रसंग वे प्रसंग होते हैं, जिसके द्वारा बच्चों में नैतिक एवं मानवीय गुणों का विकास होता है। बच्चे बहुत ही रुचि से इसे सुनते हैं एवं प्रेरणा ग्रहण करते हैं। प्रशिक्षक द्वारा कक्षा में इस प्रकार के सामाजिक, नैतिक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक तथा प्रेरक प्रसंग बच्चों को सुनाए जाएँ एवं बच्चों से भी अपने आस–पास के वातावरण से एवं जीवन में आने वाले प्रेरक व्यक्तियों से संबंधित प्रसंग सुने जाएँ।

1.5.1 रोचक प्रसंगों के कुछ दृष्टांत

आत्मविश्वास सफलता के लिए जरूरी

"एक आदमी 21 वर्ष की उम्र में व्यापार में असफल हुआ। 22 वर्ष की उम्र में एक चुनाव हारा। 24 वर्ष की उम्र में एक बार फिर व्यापार में असफल हुआ। 26 वर्ष की उम्र में उसकी पत्नी का देहांत

हो गया। 27 वर्ष की उम्र में मानसिक संतुलन गड़बड़ा गया। 34 वर्ष की उम्र में फिर चुनाव हारा। 45 वर्ष की उम्र में पुनः चुनाव में पराजित हुआ। 47 वर्ष की उम्र में उपराष्ट्रपति बनने के प्रयास में नाकामयाब रहा। 49 वर्ष की उम्र में फिर सीनेट का चुनाव हार गया और 52 वर्ष की उम्र में अमरीका का राष्ट्रपति चुना गया। यह व्यक्ति था, 'अब्राहम लिंकन'। अब्राहम लिंकन में आत्मविश्वास था इसलिए वे एक दिन सफल हुए।

कार्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण

एक मंदिर बन रहा था। एक व्यक्ति वहाँ से गुजरा। उसने पत्थर तोड़ते हुए एक श्रमिक से पूछा कि तुम क्या कर रहे हो? उस श्रमिक ने उस व्यक्ति की ओर देखा भी नहीं और क्रोध से कहा, 'क्या तुम अंधे हो, तुम्हे दिख नहीं रहा है कि मैं पत्थर तोड़ रहा हूँ। वह व्यक्ति आगे बढ़ा, उसने दूसरे श्रमिक से पूछा, 'मित्र! क्या कर रहे हो?' उस श्रमिक ने व्यक्ति की तरफ देखा और कहा, 'मैं पत्थर तोड़ रहा हूँ, ये मैं अपने बच्चों एवं पत्नी के लिए रोटी कमा रहा हूँ।' वह व्यक्ति तीसरे श्रमिक की ओर बढ़ा एवं उसके पास पहुँचा, वह पत्थर तोड़ रहा था और गीत भी गा रहा था। उसने पूछा, 'क्या कर रहे हो? उस श्रमिक की आँखों में चमक आ गई, मुस्करा कर भवन की ओर इशारा करते हुए उसने कहा, 'भगवान का मंदिर बना रहा हूँ।' उसने फिर पत्थर तोड़ना शुरू कर दिया। तीनों श्रमिक एक ही काम कर रहे थे, लेकिन उन तीनों का पत्थर तोड़ने के बारे में सोचने का दृष्टिकोण भिन्न–भिन्न हैं। तीसरे श्रमिक ने पत्थर तोड़ने को भी उत्सव बना लिया था।

बोध परीक्षण

1. हिन्दी की दो लोकप्रिय विधा का नाम बताइए।
2. हिन्दी की प्रथम कहानी का नाम बताइए।
3. कहानी की कोई दो विशेषताएँ बताइए।
4. कहानी लेखन की प्रमुख विधियों के नाम लिखिए।
5. लोककथा किसे कहते हैं? उनके प्रमुख भेदों का नाम उल्लेख कीजिए।
6. कहानी तथा लोककथा में अंतर बताइए।
7. कहानी के किन्हीं दो तत्त्वों के नाम लिखिए।
8. अपने अंचल में प्रचलित किन्हीं दो लोक कथाओं के नाम लिखिए।

समेकन

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कहानी, लोककथा और रोचक प्रसंग अध्यापन की उत्कृष्ट विधाएँ हैं। इन विधाओं के माध्यम से अध्यापन कार्य करने पर जहाँ एक ओर बच्चे रुचिपूर्ण एवं उत्साह के साथ सीखने का प्रयास करते हैं, वहीं दूसरी ओर उनके भीतर व्यावहारिकता, आशावादिता और भारतीय संस्कृति के प्रति प्रेम जैसे सद्‌गुणों का विकास होता है। मानक भाषा के साथ ही साथ भिन्न–भिन्न बोलियों के शब्दों एवं उनके अर्थों से परिचित होते हुए प्रसंगानुकूल उनका प्रयोग करने में दक्षता प्राप्त करते हैं। इन विधाओं के माध्यम से प्रशिक्षण प्राप्त किये हुए प्रशिक्षुओं के मन में जहाँ एक ओर इन विधाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण पैदा होता है, वहीं दूसरी ओर उन्हें बच्चों में कल्पना शक्ति और तार्किकता को विकसित करने की क्षमता भी प्राप्त होती है।

स्व आकलन

1. **दिए गए शब्दों से कहानी का निर्माण करें–**
   लखनऊ, चिड़ियाघर, सुबह, बस, घास, शेर, हिरण, मगरमच्छ, रंग–बिरंगी, चिड़ियाँ, पिंजरा, तालाब, भाई, मित्र, आशवी, रीशू, आइसक्रीम इत्यादि।

2. अपने जीवन से संबंधित किसी ऐसे प्रसंग का वर्णन कीजिए जिसने आपके जीवन को प्रभावित किया हो?

3. **नीचे दी गई लोक कथाओं को सुमेलित कीजिए–**

ढोला मारू	उत्तर प्रदेश
स्नो व्हाइट और सात बौने	उत्तराखण्ड
कौन बनेगा निंगथऊ (राजा)	जर्मनी
फूलों की घाटी	राजस्थान
शेख चिल्ली और कुएँ की परियाँ	मणिपुर

4. **दिए गए चित्रों के बारे में स्व–अनुभव के आधार पर लिखिए–**

5. चित्रों को पहचान कर मिलान कीजिए–

चित्र

चित्र

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. हिन्दी कहानी कला का पूर्ण विकास किस युग में माना जाता है—
(क) प्रेमचन्द युग (ख) भारतेन्दु युग
(ग) नई कहानी (घ) प्रसाद युग
2. निम्नलिखित में से हिन्दी की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा कौन—सी है—
(क) कहानी (ख) उपन्यास
(ग) जीवनी (घ) नाटक
3. हिन्दी कहानी में फ्लैशबैक शैली का सर्वप्रथम प्रयोग किसने किया—
(क) प्रेमचन्द (ख) इंशा अल्ला खां
(ग) जयशंकर प्रसाद (घ) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
4. हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी इनमें से किसे माना जाता है—
(क) राजा भोज का सपना (ख) यमलोक की माया
(ग) रानी केतकी की कहानी (घ) दुलाईवाली
5. प्रेमचन्द युग की समय सीमा बताइए—
(क) 1900 से 1915 ईस्वी (ख) 1936 से 1955 ईस्वी
(ग) 1915 से 1936 ईस्वी (घ) 1956 से 1960 ईस्वी
6. निम्नलिखित में कौन—सा कहानी का तत्त्व नहीं है—
(क) कथावस्तु (ख) पात्र का चरित्र चित्रण
(ग) भाषा शैली (घ) शिक्षण कला
7. हिन्दी की प्रथम कहानी किस पत्रिका में प्रकाशित हुई थी—
(क) मर्यादा (ख) सुधा
(ग) कवि वचन सुधा (घ) सरस्वती
8. इनमें से प्रेमचन्द के कहानी संग्रह का क्या नाम है—
(क) मानसरोवर (ख) गाँधी टोपी
(ग) मधुपर्व (घ) त्रिपथगा
9. प्रतिध्वनि किसकी रचना है—
(क) सुदर्शन (ख) प्रेमचन्द
(ग) जयशंकर प्रसाद (घ) मोहन राकेश
10. इनमें से प्रमुख मनोवैज्ञानिक कहानीकार कौन हैं—
(क) जैनेन्द्र (ख) अमरकान्त
(ग) फणीश्वर नाथ रेणु (घ) मन्नू भंडारी

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. किन्ही चार कहानीकारों के नाम तथा उनकी एक—एक कहानी का नाम लिखिए।
2. रोचक—प्रसंग से आप क्या समझते हैं? किसी एक—रोचक प्रसंग को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।
3. शिक्षण में कहानी विधा की उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।
4. कहानी के किन्हीं दो तत्त्वों के बारे में लिखिए।
5. लोक कथाओं का जीवन में क्या महत्त्व है?

इकाई 2

परिवेशीय विषयों, सामाजिक घटनाओं, स्व-अनुभवों पर चर्चा

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु आपसी चर्चा के दौरान परिवेशीय विषयों, सामाजिक घटनाओं और स्व–अनुभवों को पहचान लेते हैं।
2. प्रशिक्षु परिवेशीय विषयों, सामाजिक घटनाओं और स्व–अनुभवों में प्रयुक्त हुए विभिन्न बोलियों के शब्दों का अर्थ ग्रहण कर लेते हैं।
3. प्रशिक्षु आपसी चर्चा के दौरान परिवेशीय विषयों, सामाजिक घटनाओं और स्व–अनुभवों में प्रयुक्त हुए विभिन्न बोलियों के शब्दों का आवश्यकतानुसार प्रयोग कर लेते हैं ।
4. प्रशिक्षु परिवेशीय विषयों, सामाजिक घटनाओं और स्व–अनुभवों के माध्यम से अध्यापन कार्य कर लेते हैं।
5. प्रशिक्षु परिवेशीय विषयों, सामाजिक घटनाओं और स्व–अनुभवों को स्मृति में धारण कर आवश्यकतानुसार पुनः प्रस्तुत करते हैं।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर ही वह ज्ञान प्राप्त करता है और समाज में ही उस ज्ञान का अनुप्रयोग भी करता है। इस प्रकार से सीखने–सिखाने की प्रक्रिया निरंतर गतिमान रहती है। सीखने–सिखाने की इस प्रक्रिया में आयु वर्ग का भी एक महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। जहाँ एक ओर परिपक्व आयु वर्ग के लोग तर्क और समझदारी से युक्त परिवेशीय विषयों, सामाजिक घटनाओं और स्व–अनुभवों पर चर्चा करना पसंद करते हैं वहीं दूसरी ओर बच्चों की अपनी दूसरी ही दुनिया होती है। इस दुनिया में कल्पना के साथ ही साथ संकोच, भय, झिझक तथा अविश्वास जैसे भाव भी विद्यमान होते हैं। ये भाव बच्चों की शिक्षा ग्रहण करने के मार्ग में बाधा उत्पन्न करते हैं। ऐसे में शिक्षक के समक्ष शिक्षा देने के साथ ही इन भावों को दूर करने की भी चुनौती होती है। इस चुनौती को दूर करने का सबसे पहला पड़ाव बच्चों से जुड़ाव का होता है। बच्चों से जुड़ाव के बाद ही शिक्षक उन्हें कुछ पढ़ा या समझा सकता है। इसके लिए परिवेशीय विषयों, सामाजिक घटनाओं और स्व–अनुभवों पर चर्चा एक सशक्त माध्यम है। इस ढंग से अध्यापन करने पर जहाँ एक ओर बच्चों और शिक्षकों के बीच आत्मीय संबंधों में प्रगाढ़ता आती है वहीं दूसरी ओर बच्चों की मौखिक भाषा विकास में धनात्मक वृद्धि होती है। साथ ही सीखने में उनकी रूचि विकसित होती है।

प्रशिक्षकों हेतु निर्देश

1. प्रशिक्षक, परिवेशीय विषयों, सामाजिक घटनाओं की प्रकृति और स्वरूप को स्पष्ट करके स्व–अनुभवों को शामिल करते हुए बच्चों के समक्ष स्पष्ट रूप से बताएँगे।
2. प्रशिक्षक, निर्धारित विषय की शब्दकोशीय एवं प्रायोगिक धारणाओं को समझाएँगे।
3. प्रशिक्षक, परिवेशीय विषयों, सामाजिक घटनाओं से जुड़ी प्रमुख शब्दावली का प्रयोग चार्ट की सहायता से करेंगे।
4. प्रशिक्षक, विषय से संबंधित विभिन्न उदाहरणों को बच्चों के सम्मुख रखेंगे।

प्रशिक्षुओं हेतु निर्देश

1. प्रशिक्षु, बच्चों में परिवेशीय विषयों, सामाजिक घटनाओं की अवधारणा को स्पष्ट करेंगे।
2. प्रशिक्षु, परिवेशीय विषयों, सामाजिक घटनाओं की प्रमुख शब्दावलियों को श्यामपट्ट पर लिखकर बच्चों के समक्ष स्पष्ट करेंगे।
3. प्रशिक्षु, विभिन्न सहायक सामग्रियों की सहायता से बच्चों में मुख्य अवधारणाओं को पुष्ट करेंगे।
4. प्रशिक्षु, बच्चों से परिवेशीय विषय और सामाजिक घटनाओं पर स्व–अनुभव के आधार पर कुछ लिखकर लाने के लिए कहेंगे।

प्रस्तुतीकरण

'परिवेश' शब्द में 'ईय' प्रत्यय जुड़कर 'परिवेशीय' शब्द बना है। परिवेश शब्द का शब्दकोशीय अर्थ है – परिधि, घेरा, मंडल, वातावरण, माहौल आदि। हमारे परिवेश में हमारे जीवन जगत से संबंधित अनेक चीजें जुड़ जाती है। हमसे, हमारे आस–पास की जितनी भी चीजें, वस्तु स्थितियाँ जुड़ी हुई रहती हैं, वे सभी हमारे परिवेशीय विषय के अंतर्गत परिगणित की जाती हैं। परिवेश शब्द का अर्थ है– आस–पास का वातावरण। इसके आधार पर हमारे चारों ओर के विषय 'परिवेशीय विषय' हैं। किसी साहित्यकार के साहित्य में निहित प्रकृति–चित्रण, रचना का 'परिवेशीय विषय' होता है। जिस साहित्यकार के साहित्य में परिवेशीय विषय जितना सजीव और यथार्थ बोध से युक्त होगा, वह साहित्यकार उतना ही प्रभावी सामाजिक–परिवेश का चित्रण करने में समर्थ होगा।

कथा सम्राट प्रेमचन्द की रचनाएँ परिवेशीय विषयों को सहज रूप में प्रकट करने में समर्थ हैं। उनकी रचनाओं में 'परिवेशीय विषयों' के सटीक चित्रण के कारण ही उन्हें 'यथार्थवादी' रचनाकार कहा जाता है। इनकी कहानी 'पूस की रात' परिवेशीय विषय का जीवंत उदाहरण है। इस कहानी का नायक हल्कू एक किसान है। पूस की सर्द रात में उसे अपने खेतों की रखवाली करनी है। वह रखवाली नहीं करेगा तो नीलगायों का समूह उसकी खड़ी फसल तबाह कर देगा। मौसम इतना ठंडा है कि उसका पालतू कुत्ता झबरा भी ठंड से काँप रहा है। वह भी हल्कू के अलाव के पास ही सटकर बैठ गया है। तब भी ठंड के कारण वह 'कूँ–कूँ' कर रहा है। परिवेशीय सजीव चित्रण का यह जीवंत उदाहरण है।

बहुत बार बात–बात में लोग अनेक कहावतों और लोकोक्तियों के द्वारा हमारे परिवेशीय विषयों को वर्णित कर देते हैं। घाघ की कहावतें और मौसम संबंधी उक्तियाँ आज भी परिवेशीय ज्ञान पर उनकी पकड़ को उद्घाटित करती हैं। उनकी कहावतें प्रकृति और लोक व्यवहार के ज्ञान को वर्णित करती हैं। किस स्थान पर कुआँ खोदने पर पानी निकलेगा, यह उनकी एक कहावत से स्पष्ट होता है–

राम बाँस जँह धँसैं अचूका। तहँ पानी की आस अखूता।।

यहाँ राम बाँस से तात्पर्य ऐसे बाँस से है जिसके सिरे पर नोकदार लोहा जड़ा होता है। इस कहावत का भावार्थ होगा– जिस स्थान पर राम बाँस बिना रुकावट के धँस जाए वहाँ कुआँ खोदने पर इतना पानी होगा कि कभी खत्म नहीं होगा। पानी का एक अन्य स्रोत वर्षा है। वर्षा बादलों के माध्यम से होती है।

हिन्दी के प्रसिद्ध कवि नागार्जुन ने अपनी कविता 'बादल को घिरते देखा है' में इस विषय का सुंदर वर्णन किया है। इस कविता की कुछ पंक्तियाँ उदाहरण स्वरूप निम्नलिखित हैं–

अमल धवल गिरि के शिखरों पर,
बादल को घिरते देखा है।
छोटे–छोटे मोती जैसे
उसके शीतल तुहिन कणों को,
मान सरोवर के उन स्वर्णिम
कमलों पर गिरते देखा है।
बादल को घिरते देखा है।

संदर्भ– एन॰सी॰ई॰आर॰टी॰ हिंदी पाठ्यपुस्तक कक्षा–11,
'अंतरा' पृष्ठसंख्या – 163 से 166 तक

कवि नागार्जुन जी ने बादलों की उमड़–घुमड़ एवं उनकी ध्वनि का स्वाभाविक चित्रण करते हुए ''**मेघ बजे**'' शीर्षक कविता में लिखा है–

धिन–धिन–धा धमक–धमक
मेघ बजे
दामिनी यह गयी दमक
मेघ बजे
धरती का हृदय धुला
मेघ बजे
पंक बना हरि चन्दन
मेघ बजे
हल का है अभिनन्दन
मेघ बजे

संदर्भ– ''**मंजरी**'' कक्षा 7

घाघ की लोकमान्यता से संबंधित एक कहावत है–

मंगलवार होय दिवारी। हँसै किसान रोवै वैपारी।।

भावार्थ– यदि मंगलवार को दीपावली पड़ती है तो किसान हँसेंगे और व्यापारी रोएँगे। ऐसी ही लोक व्यवहार से संबंधित उनकी प्रसिद्ध कहावत है–

खेती पाती बीनती औ घोड़े की तंग,
अपने हाथ सँवारिये, लाख लोग हो संग ।।

इसी तरह की अनगिनत कहावतें हैं जो हमें परिवेशीय विषयों का सटीक ज्ञान प्रदान करती हैं।

परिवेशीय विषय को सुविधा की दृष्टि से निम्नलिखित रूपों में विभाजित किया जा सकता है–

1. प्राकृतिक विषय – जैसे– पेड़–पौधे, तालाब, झील, बादल, पर्वत आदि।
2. सामाजिक विषय– जैसे– बाल–विवाह, दहेज प्रथा, जनसंख्या वृद्धि, भ्रष्टाचार, पर्यावरण प्रदूषण आदि।

3. ऐतिहासिक विषय– जैसे– महात्मा गाँधी, सुभाष चन्द्र बोस, भगत सिंह, रानी लक्ष्मीबाई आदि।
4. भौगोलिक विषय – जैसे– तालाब, नदी, झील, समुद्र, पहाड़, महाद्वीप आदि।
5. राजनैतिक विषय– जैसे– सरपंच, प्रधान, पंचायत चुनाव आदि।
6. आर्थिक विषय – जैसे– जेब खर्च, स्कूल फीस, मेला, दुकान आदि।
7. वैज्ञानिक विषय – जैसे– शरीर संरचना, सूर्य, तारा, हवाई जहाज आदि।
8. सांस्कृतिक विषय –जैसे– होली, दीपावली, रक्षाबंधन, ईद आदि।
9. धार्मिक एवं नैतिक विषय–जैसे– मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च, पूजा–प्रार्थना, सरस्वती वंदना आदि।
10. डिजिटल विषय –जैसे– मोबाइल, लैपटॉप, कम्प्यूटर, टेलीविजन, ओवर हेड प्रोजेक्टर आदि।

1– **प्राकृतिक विषय–** मनुष्य सहज ही प्रकृति की ओर आकर्षित होता है। इसी सहज आकर्षण के कारण संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी और अन्य अनेक भाषाओं के समर्थ रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में प्रकृति के विभिन्न रूपों को अपना वर्ण्य विषय बनाया है। महाकवि कालिदास ने अपने ग्रन्थ 'मेघदूतम्' में प्रकृति का अद्वितीय वर्णन किया है। यक्ष के संदेश को लेकर मेघदूत (बादल रूपी दूत) अपनी प्रियतमा यक्षिणी के पास भिन्न–भिन्न स्थानों से गुजरकर निश्चित गंतव्य तक पहुँचता है। इस रचना के यात्रा पड़ावों में प्रकृति का अद्वितीय वर्णन है, जो एक लंबे समय तक आने वाले कवियों और लेखकों के लिए अनुकरण का विषय बन गया।

रामधारी सिंह 'दिनकर' जी ने प्राकृतिक विषय को ही ध्यान में रखकर ''**हिन्द महासागर में छोटा सा हिन्दुस्तान**'' नामक यात्रा वृत्तांत में लिखा है–

''मॉरीशस वह देश है, जिसका कोई भी हिस्सा समुद्र से 15 मील से ज्यादा दूर नहीं है। मॉरीशस वह देश है, जहाँ की जनसंख्या के 67 प्रतिशत लोग भारतीय मूल के हैं। मॉरीशस वह देश है, जिसकी राजधानी पोर्टलुई की गलियों के नाम कलकत्ता(कोलकाता), मद्रास(चेन्नई), हैदराबाद और बम्बई(मुम्बई) हैं तथा जिसके एक पूरे मोहल्ले का नाम काशी है। मॉरीशस वह देश है, जहाँ बनारस भी है, गोकुल भी है और ब्रह्म स्थान भी।''

संदर्भ– अक्षरा, कक्षा 6

2– **सामाजिक विषय–** सामाजिक विषयों के अंतर्गत समाज के विभिन्न रूपों का अध्ययन किया जाता है। सामाजिक विषयों के अध्ययन के लिए ही 'समाज शास्त्र' नामक विषय का आविर्भाव हुआ है। इसके अंतर्गत सामाजिक परिदृश्य का व्यवस्थित अध्ययन किया जाता है।

महात्मा गाँधी ने अपनी आत्मकथा 'सत्य के लिए मेरे प्रयोग' में लिखा है कि–

मैंने 'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक भी देखा था। बार– बार उसे देखने की इच्छा होती। हरिश्चन्द्र के सपने आते। बार–बार मेरे मन में यह बात उठती थी कि सभी हरिश्चन्द्र की तरह सत्यवादी क्यों न बनें? यही बात मन में बैठ गयी कि चाहे हरिश्चन्द्र की भाँति कष्ट उठाना पड़े, पर सत्य को कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

संदर्भ– फुलवारी कक्षा 4 पाठ 'जब मैं पढ़ता था'

3– **ऐतिहासिक विषय–** ऐतिहासिक विषय के अंतर्गत हम जिस विषय का अध्ययन करते हैं उसमें अब तक घटित घटनाओं का काल क्रमानुसार वर्णन होता है। दूसरे शब्दों में कहें तो प्राचीनता से नवीनता

की ओर आने वाली, मानव जाति से संबंधित घटनाओं का वर्णन ऐतिहासिक विषय के अंतर्गत आता है। जैसे–रानी लक्ष्मीबाई, भगत सिंह, सुभाष चन्द्र बोस, महात्मा गांधी आदि।

जूही की तोपें गजब ढा रही थीं। अंग्रेज नायक ने इन तोपों का मुँह बंद करना तय किया। हजार सवार बढ़ते जाते थे, मरते जाते थे, परन्तु उन्होंने इस तरफ की तोपों को चुप कराने का निश्चय कर लिया था। रानी ने जूही की सहायता के लिए कुमुक भेजी। उसी समय उनको खबर मिली कि पेशवा की अधिकांश ग्वालियरी सेना और सरदार 'अपने महराज' की शरण में चले गये। मुन्दर ने रानी से कहा, 'सवेरे अस्तबल का प्रहरी रिस–रिस कर अपने सरकार का स्मरण कर रहा था। मुझे संदेह हो गया था कि ग्वालियरी कुछ गड़बड़ी करेंगें।'

संदर्भ– प्रज्ञा कक्षा 8 पाठ 'झाँसी की रानी'

4– भौगोलिक विषय– भौगोलिक विषय के अंतर्गत प्राकृतिक संसाधन, सौरमण्डल, पर्यावरण, जीव–जंतुओं, नदियों, पर्वतों, मिट्टी आदि का अध्ययन मुख्य रूप से किया जाता है। हिन्दी साहित्य की बहुत सी रचनाओं में भौगोलिक विषयों का समावेश किया गया है।

"गंगोत्री, यमुनोत्री या फिर नर्मदाकुंड– ये वे स्थान हैं, जहाँ नदी पहाड़ की कोख से निकलकर पहाड़ की गोद में आती है। पहाड़ के गर्भ में छुपा हुआ पानी यहाँ अवतरित होता है। नवजात शिशु की तरह नदी यहाँ धवल, उज्ज्वल, और कोमल होती है।"

संदर्भ– प्रज्ञा कक्षा 8 पाठ अमरकंटक से डिंडौरी'

5– राजनैतिक विषय– हिन्दी के साहित्यकारों ने राजनैतिक विषयों के अंतर्गत राजनैतिक चेतना से संबंधित विषयों का समावेश किया है। भारतीय आजादी की चेतना से प्रभावित होकर प्रचुर साहित्य हिन्दी में लिखें गए हैं। 'सुमित्रा नन्दन पन्त' की कविता 'बापू के प्रति', प्रसाद की 'पेशोला की प्रतिध्वनि', निराला की कविता 'जागो फिर एक बार', महादेवी वर्मा की कविता 'जाग तुझको दूर जाना' आदि इसी प्रकार की रचनाएँ हैं।

आज जीत की रात
पहरुए, सावधान रहना
खुले देश के द्वार
अचल दीपक समान रहना।
प्रथम चरण है नए स्वर्ग का
है मंजिल का छोर
इस जन–मन्थन से उठ आयी
पहली रत्न हिलोर
अभी शेष है पूरी होना
जीवन मुक्ता डोर
क्योंकि नहीं मिट पायी दुःख की
विगत साँवली कोर

संदर्भ– प्रज्ञा कक्षा 8 पाठ 'पहरुए, सावधान रहना'

6— आर्थिक विषय— आर्थिक विषय के अंतर्गत, समाज की आर्थिक गतिविधियों का अध्ययन किया जाता है। प्रशिक्षुओं को विभिन्न उदाहरणों की सहायता से बताएँगे कि अर्थव्यवस्था की गतिशीलता हमारे जीवन को कैसे प्रभावित करती है। किसी देश की अर्थव्यवस्था मजबूत रहती है तो वह देश अपने देश के नागरिकों को अनेक समुन्नत सुविधाएँ प्रदान करता है। इससे नागरिकों का सर्वांगीण विकास सुचारु रूप से होता है।

''ठीक—ठीक पाँच पैसे लगेंगे, लेना हो तो लो, नहीं चलते बनो। हामिद ने कलेजा मजबूत करके कहा— तीन पैसे लोगे। यह कहता हुआ आगे बढ़ गया कि दुकानदार की घुड़कियाँ न सुने।''

संदर्भ— मंजरी कक्षा 6, पाठ 'ईदगाह'

7— वैज्ञानिक विषय— इसके अंतर्गत प्रशिक्षुओं को वैज्ञानिक उपलब्धियों से संबंधित साहित्यिक रचनाओं के विषय में बताया जाता है। इससे प्रशिक्षुओं को संबंधित विषय का सहज ज्ञान हो जाता है। इसके उदाहरण के रूप में 'सुमित्रा नन्दन पन्त' की कविता 'चन्द्र लोक में प्रथम बार' और जयप्रकाश भारती का वैज्ञानिक लेख, 'पानी में चंदा और चाँद पर आदमी' को देख सकते हैं।

मुझे प्रयोग में लाने के लिए बैंक अपने खाताधारक को एक प्लास्टिक कार्ड देते हैं जिसे ए०टी०एम० कार्ड कहते हैं। इसमें कार्ड का नंबर और कुछ गोपनीय जानकारी होती है। इसके प्रयोग के लिए बैंक एक गोपनीय नंबर भी देता है जिसे पिन(पर्सनल आइडेंटिफिकेशन नंबर) कहते हैं।

8— सांस्कृतिक विषय— सांस्कृतिक विषयों के अंतर्गत संस्कृति से संबंधित पक्षों का अध्ययन किया जाता है। संस्कृति के अंतर्गत हमारे रहन—सहन का ढंग, हमारी सामाजिक परंपराओं, वेश—भूषा आदि का अध्ययन किया जाता है। संक्षिप्त शब्दों में, ''संस्कृति हमारे जीवन को अर्थ देने वाली प्रक्रिया है।'' इसके उदाहरण के रूप में डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के निबंध, 'भारतीय संस्कृति' और वासुदेव शरण अग्रवाल का निबंध 'कला और संस्कृति' देख सकते हैं।

''पिछले दस—पन्द्रह वर्षों में हमारी खान—पान की संस्कृति में एक बड़ा बदलाव आया है। इडली, डोसा, वड़ा—साँभर, रसम अब केवल दक्षिण भारत तक सीमित नहीं हैं। ये उत्तर भारत के भी हर शहर में उपलब्ध हैं और अब तो उत्तर प्रदेश की 'ढाबा' संस्कृति पूरे देश में फैल चुकी है।''

संदर्भ— प्रज्ञा कक्षा 8 पाठ 'खान—पान की बदलती तस्वीर'

9— धार्मिक और नैतिक विषय— धार्मिक और नैतिक विषयों के अध्ययन के लिए भक्ति काल के कवियों की रचनाओं का उदाहरण देकर समझा सकते हैं। नैतिक विषयों के रूप में रहीम, कबीर और बिहारी के दोहों का उदाहरण दिया जा सकता है।

वर दे, वीणावादिनी वर दे!
प्रिय स्वतन्त्र—रव, अमृत मन्त्र नव
भारत में भर दे!
काट अन्ध— उर के बन्धन—स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर,
कलुष— भेद तम हर, प्रकाश भर
जगमग जग कर दे!

संदर्भ— प्रज्ञा कक्षा 8 पाठ 'वीणावादिनी वर दे'

10– डिजिटल विषय– वैज्ञानिक उन्नति के क्रम में हमने एक नयी आभासी डिजिटल दुनियाँ बना ली है। डिजिटल दुनियाँ के उदाहरण के रूप में 'अवतार' फिल्म का नाम लिया जा सकता है। अब 3 डी0 आयाम वाली फिल्में बन रही हैं। इनको देखने के लिए 3 डी॰ क्षमता वाले चश्मों (उपकरणों) का प्रयोग किया जाता है। जिससे किसी दृश्य की लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई, इन तीनों आयामों से अलग दुनिया का अनुभव होता है।

परिवेशीय विषयों, सामाजिक धटनाओं एवं स्वानुभव चर्चा

चर्चा भाषा शिक्षण की वह विधि है जिसमें शिक्षक और छात्र अथवा कक्षा के छात्र आपसे में किसी प्रकरण (समस्या) पर स्वतंत्र रूप से अपने विचारों का आदान–प्रदान करते हैं।

चर्चा के उद्देश्य

- चर्चा द्वारा बच्चों की झिझक या डर दूर करना।
- बच्चों में अपनी बात स्वतंत्र रूप से क्रमबद्ध तरीके से कहने की क्षमता विकसित करना।
- छात्रों में तर्क, चिन्तन व कल्पना शक्ति का विकासकरना।
- छात्रों में सहयोगिता पूर्ण भावना विकसित करना।

चर्चा पर ध्यान देने योग्य बातें

- चर्चा की विषय–वस्तु छात्रों के अनुभव या आस–पास के परिवेश से जुड़ी हो।
- केवल सवाल ही सवाल न हो बल्कि विषय पर चर्चा भी हो।
- हाँ या ना वाले प्रश्न न हो बालक बच्चों की अभिव्यक्ति के लिए उपयुक्त वातावरण भी हो।
- छात्रों संबधित विषय पर स्वतन्त्र अभिव्यक्ति का अवसर दिया जाय तथा उनकी बात ध्यानपूर्वक सुनी जाय ।
- किसी घटना या दृश्य के बारे में छात्रों से पूछा जाय।
- ऐसी बातें करें जिसमें बच्चा स्वये पूष्टाने को प्रेरित हो।

चर्चा के गुण

- छात्र सक्रिय रहकर कार्य करते हैं।
- छात्रों का आत्म विश्वास बढ़ता है।
- छात्रों की तर्कशक्ति व निर्णय क्षमता विकसित होती है।
- छात्रों में सहयोग की प्रवृति विकसित होती है।
- छोटी कक्षाओं के लिए उपयोगी है।

बोध परीक्षण

1. परिवेश से क्या आशय है?
2. पर्यावरण को प्रभावित करने वाली प्राकृतिक घटनाओं का नाम लिखिए।
3. कुछ सामाजिक घटनाओं का उल्लेख कीजिए।
4. किसी सामाजिक घटना का वर्णन कीजिए, जिसने आपको प्रभावित किया हो।
5. किसी प्राकृतिक स्थान के भ्रमण का वृत्तांत अपने शब्दों में लिखिए।

समेकन

हमारे आस–पास की अनेक वस्तुएँ हमसे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़ी रहती हैं। जिनका हमारे जीवन पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है। परिवेश के प्रभाव के रूप में रचनाकार प्रकृति चित्रण, सामाजिक घटनाओं, राजनैतिक घटनाओं, सामाजिक संबंधों आदि से प्रभावित होकर, उन्हें अपनी रचना में समाहित करता है। कथा सम्राट प्रेमचन्द 'परिवेशीय विषयों' के सजीव चित्रण के कारण ही बहुत सफल रचनाकार माने गये हैं। प्रेमचन्द ने 'साहित्य को राजनीति के आगे चलने वाली मशाल कहा है।' इस सूत्र वाक्य में भी प्रेमचन्द ने साहित्य पर 'परिवेशीय विषयों' के पड़ने वाले प्रभाव की ओर संकेत किया है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपनी कृति रामचरित मानस में अनगिनत अनुभवजनित परिवेशीय विषयों को समाहित किया है। कबीर के दोहों में तत्कालीन परिस्थितियों का इतना सजीव और ओजस्वी चित्रण है कि मध्यकालीन समाज की उथल–पुथल और मानवीय मनोदशा को पाठक स्पष्ट रूप से समझ जाते हैं।

वस्तुतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि अधिगमकर्ता का अनुभव, उसके परिवेशीय विषयों से स्पष्ट रूप से समृद्ध होता रहता है।

स्व आकलन

1. **निम्नलिखित कहानियों को कहानीकारों के नाम के साथ मिलाइए–**

कहानी का नाम	कहानीकार का नाम
1. हार की जीत	प्रेमचन्द
2. ईदगाह	सुदर्शन
3. शाप मुक्ति	रमेश उपाध्याय

2. **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–**

(क) हमें अपने बड़ों का .... करना चाहिए।
(ख) दीपावली रोशनी का .... है।
(ग) पृथ्वी और शुक्र .... हैं।
(घ) आसमान में रंग–बिरंगी .... उड़ रही हैं।
(च) बैगन, कटहल, आलू और टमाटर .... के नाम हैं।

विचार विश्लेषण

1. 'परिवेशीय विषयों' से क्या आशय है?
2. 'परिवेशीय विषयों में क्या–क्या शामिल है?
3. परिवेशीय घटनाओं का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है?
4. अपने आस–पास के परिवेश का ज्ञान रखना, हमारे लिए क्यों आवश्यक है?

इकाई 3

गद्य, पद्य के अंशों का शुद्ध उच्चारण, लय एवं उतार-चढ़ाव के साथ पढना, बोलना

3.1 गद्य : परिभाषा, प्रमुख विधाएँ एवं शिक्षण के उद्देश्य
3.2 पद्य : परिभाषा एवं भेद 3.3 गद्य और पद्य में अंतर
3.4 वाचन और पटन, डिकोडिंग और पटन एवं वाचन के भेद
3.5 शुद्ध उच्चारण : महत्त्व, ध्वनियों का वर्गीकरण एवं अक्षर और उच्चारण के स्थान 3.6 आक्षरिक उच्चारण के नियम
3.7 अशुद्ध उच्चारण : कारण एवं उनका निराकरण
3.8 उच्चारण स्थानों का ज्ञान कराना

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु, गद्य एवं पद्य विधाओं में अंतर कर लेते हैं।
2. प्रशिक्षु, गद्यांश को विराम चिह्नों का ध्यान रखते हुए शुद्ध उच्चारण के साथ वाचन कर लेते हैं।
3. प्रशिक्षु,पद्यांश का उचित लय एवं आरोह–अवरोह के साथ पाठ कर लेते हैं।
4. प्रशिक्षु, बच्चों को गद्यांश एवं पद्यांश का शुद्ध पठन अथवा वाचन करने में सक्षम बना लेते हैं।
5. प्रशिक्षु, गद्य एवं पद्य के वाचन में बच्चों को सक्षम बनाने हेतु विभिन्न रोचक गतिविधियों का प्रयोग कर लेते हैं।

विधा के आधार पर हिन्दी लेखन मुख्यतः दो भागों में विभाजित मिलती है– गद्य एवं पद्य। हिन्दी गद्य शैली का इतिहास अत्यंत विस्तृत है। आधुनिक काल से पूर्व हिन्दी में गद्य साहित्य अत्यधिक न्यून मात्रा में तथा अविकसित रूप में मिलता है। पूर्ववर्ती समय में हिन्दी गद्य के अविकसित रहने का कारण क्या रहा होगा इस प्रश्न पर विद्वानों के बीच कोई संतोषजनक समाधान उपलब्ध नहीं है। गद्य में एक कहावत है– 'यह तो निरा गद्य है' (अर्थात रस विहीन और महत्त्वहीन है) का प्रभाव शायद पूर्ववर्ती युग पर भी पड़ा है। विद्वानों का मानना था कि प्रत्येक भाषा के साहित्य का आरंभ ही पद्य से होता है। अतः हिन्दी साहित्य में भी वैसा ही होना स्वाभाविक है। कुछ विद्वानों के मतानुसार संस्कृत में पद्य का काफी महत्त्व था। जिसके कारण बाद की समस्त भारतीय भाषाओं ने भी संस्कृत में वर्णित इस आदर्श का अनुपालन किया। अतः हिन्दी में भी पहले गद्य का विकास नहीं हुआ।

पद्य का प्रभाव भारतीय भाषाओं पर पहले से अत्यधिक रहा किंतु गद्य का प्रभाव भी कम नहीं रहा। संस्कृत में एक प्रसिद्ध उक्ति है कि गद्य कवियों के लिए कसौटी है। इस कथन का अभिप्राय शायद यही रहा होगा कि चिंतन तो व्यवस्थित रूप से गद्य में ही किया जा सकता है। व्यवस्थित चिंतन कवि के लिए सदैव ही कठिन काम रहा होगा अर्थात गद्य लिखना कवियों के लिए कसौटी भी रहा होगा और चुनौती भी। यह कोई सर्वमान्य सिद्धांत नहीं है कि प्रत्येक साहित्य का आरंभ पद्य से ही हुआ है। यदि यह धारणा सर्वथा सत्य होती तो संस्कृत गद्य के अनेक रूपों जैसे– नाटक, कथा एवं आख्यायिका आदि की अत्यंत समृद्ध एवं सुविक्षित परंपरा कैसे होती? हिन्दी के प्रारंभिक युगों में गद्य का विकास ना होना संस्कृत के आदर्शों का पालन करना नहीं अपितु उन्हें त्याग देना ही मुख्य कारण है।

काव्य का अर्थ केवल पद्य तक सीमित रखने के कारण आरंभिक हिन्दी लेखन में काव्य का ही प्रणयन अधिक हुआ। संस्कृत में काव्य शब्द का प्रयोग गद्य और पद्य दोनों अर्थों में किया गया है।

गद्य–पद्य में शुद्ध उच्चारण, लय एवं उतार–चढ़ाव के साथ उच्चरित करना भावानुभूति के प्रदर्शन हेतु अत्यंत ही आवश्यक है। शुद्ध उच्चारण न होने पर अर्थ का अनर्थ हो जाता है; यथा–

यद्यपि बहु नाधीषे तथापि पठ पुत्रक व्याकरणम्।
स्वजनः श्वजनो मा भूत्सकलः शकलः सकृच्छकृत।।

अर्थात, हे पुत्र ! यद्यपि तुम बहुत नहीं पढ़ते हो, फिर भी व्याकरण पढ़ो जिससे स्वजन (बंधु–बांधव) 'श्वजन' (कुत्ता) न हो जाए, 'सकल' (संपूर्ण) 'शकल' (टुकड़ा या खंड) न हो जाए तथा 'सकृत' (एक बार) 'शकृत' (मल या विष्ठा) न हो जाए।

यहाँ अशुद्ध उच्चारण होने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है। **'स्वजन'** (बंधु–बान्धव) के उच्चारण में यदि दन्त्य **'स'** की जगह तालव्य **'श'** का उच्चारण करते हैं तो **'स्वजन'** की जगह **'श्वजन'** होकर अर्थ कुत्ता हो जाएगा। उसी प्रकार **'सकल'** (संपूर्ण) में दंत्य **'स'** के स्थान पर तालव्य **'श'** रखने पर **'सकल'** (संपूर्ण) का **'शकल'** (टुकड़ा) हो जाता है, वैसे ही **'सकृत'** (एक बार) के स्थान पर **'शकृत'** (मल या विष्ठा) हो जाता है।

अतः गद्य–पद्य के वाचन में शुद्ध उच्चारण का बहुत महत्त्व है।

शिक्षण, संभाषण अथवा वाचन में उच्चारण की शुद्धता पर हमें अवश्य ही ध्यान देना चाहिए, क्योंकि अभिव्यक्ति मनुष्य के व्यक्तित्व का दर्पण है। हिन्दी भाषा ध्वन्यात्मक भाषा है, इस कारण अशुद्ध उच्चारण या वाचन का प्रभाव पूर्ण रूप से वर्तनी पर पड़ता है। शुद्ध लिखने हेतु शुद्ध उच्चारण व वाचन अत्यंत ही आवश्यक है।

प्रशिक्षकों हेतु निर्देश

1. प्रशिक्षक को प्रशिक्षण से पूर्व गद्य–पद्य की रूपरेखा (कार्य योजना) तैयार कर लेनी चाहिए।
2. विषय वस्तु से संबंधित संभावित प्रश्नों का समाधान पूर्व में ही कर लेना चाहिए।
3. पाठ–योजना के अनुसार शिक्षण सामग्री एवं सहायक शिक्षक सामग्री का संयोजन कर लेना चाहिए तथा प्रशिक्षुओं को उनके प्रयोग के विषय में बताना चाहिए।
4. प्रशिक्षण सामग्री में तकनीकी का प्रयोग करना चाहिए।
5. पाठ–योजना के अनुसार उपयुक्त ऑडियो–वीडियो सामग्री का चयन कर लेना चाहिए।
6. प्रशिक्षण सामग्री से संबंधित गतिविधियों का चयन पहले से ही कर लेना चाहिए।
7. प्रशिक्षक पद्य का वाचन उचित लय, उतार–चढ़ाव के साथ तथा गद्य का वाचन विराम चिह्नों का ध्यान रखकर शुद्ध उच्चारण के साथ करना बताएँगे।
8. गद्य–पद्य में आने वाले कठिन शब्दों का शब्दार्थ/भावार्थ (प्रसंगानुसार), व्याख्या (उपसर्ग/प्रत्यय) करेंगे।

प्रशिक्षुओं हेतु निर्देश

1. प्रशिक्षु गद्य तथा पद्य को उचित उतार–चढ़ाव के साथ पढ़ने का अभ्यास करेंगे।
2. प्रशिक्षु कहानी तथा कविता के माध्यम से गद्य एवं पद्य से संबंधित ज्ञान का विकास करेंगे।
3. गद्य तथा पद्य के माध्यम से भाषण तथा संवाद कौशल को विकसित करेंगे।
4. विभिन्न रोचक गतिविधियों के माध्यम से गद्य एवं पद्य में वर्णित मानवीय मूल्यों तथा सामाजिक मूल्यों से अवगत कराएँगे।

गतिविधि

❖ प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से परिषदीय विद्यालयों के हिन्दी विषय की पाठ्य पुस्तक में से पाठ का नाम और संबंधित विषय की विधा बताने के लिए कहेंगे। उसके बाद दिए गए उत्तरों को श्यामपट्ट पर लिखकर उनको गद्य और पद्य के विषय में बताएँगे।

गतिविधि का नाम : आओ विधा पहचानें

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : परिषदीय प्राथमिक अथवा उच्च प्राथमिक की हिन्दी की पाठ्य पुस्तकें।

उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

प्रशिक्षक गद्य को पढ़कर प्रशिक्षुओं से पढ़ने के लिए कहेंगे तथा पद्य को उतार–चढ़ाव के साथ लय में पढ़कर या प्रशिक्षुओं से पढ़वाकर गद्य और पद्य के बीच अंतर को समझाएँगे।

प्रस्तुतीकरण

3.1 गद्य की परिभाषा

एक ऐसी रचना जो छंद, ताल, लय एवं तुकबंदी से मुक्त हो तथा विचारपूर्ण हो उसे गद्य कहते हैं। **गद्य** शब्द **'गद्'** धातु के साथ **'यत्'** प्रत्यय जोड़ने से बना है। **'गद्'** का अर्थ होता है– **बोलना, बतलाना या कहना।**

डॉ० भगीरथ मिश्रा के अनुसार– ''किसी कथानक, चरित्र या विचार की कल्पना और अनुभूति के माध्यम से गद्य में सरल, रोचक अभिव्यक्ति गद्य है। वह मुक्त छंद, व्याकरण सम्मत, रमणीय वाक्य रचना होती है। साधारणतः मनुष्य के द्वारा व्यवहार में लाई जाने वाली भाषाएँ गद्य की श्रेणी में आती हैं।''

3.1.1 गद्य की प्रमुख विधाएँ

गद्य विधा के अंतर्गत कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, संस्मरण, व्यंग्य, आत्मकथा, एकांकी, आलोचना, रेखाचित्र इत्यादि लिखे जाते हैं। इसमें से प्रमुख विधाओं का पहला वर्ग– जिसमें नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानी, निबंध और आलोचना को रखा जा सकता है। दूसरा वर्ग गौण या प्राचीन गद्य विधाओं का है, जिसमें जीवनी, आत्मकथा, यात्रा–वृत्तान्त, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, डायरी, भेंटवार्ता, पत्र, साहित्य आदि को रखा जा सकता है।

3.1.2 गद्य शिक्षण के उद्देश्य

गद्य, शिक्षण की परंपरागत विधि में शिक्षक पहले गद्यांश का वाचन करते हैं फिर उसे बच्चों को पढ़ने के लिए कहते हैं। शिक्षक गद्यांश में आए कठिन शब्दों का निवारण करते हैं तथा बाद में सभी वाक्यों का सरल अर्थ बताते हुए गद्यांश का अर्थ स्पष्ट करते हैं। गद्य शिक्षण की इस विधि का प्रयोग कुछ उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किया जाता है जो निम्नवत् है–

- ➢ सामान्य उद्देश्य
- ➢ विशिष्ट उद्देश्य

सामान्य उद्देश्य

1. भाषा के प्रति ज्ञान और अभिरुचि जागृत करना।
2. शुद्ध वाचन की योग्यता विकसित करना।
3. व्याकरण सम्मत भाषा का विकास करना।
4. शब्द भंडार को समृद्ध करना।
5. नैतिक एवं चारित्रिक विकास करना।
6. तार्किक चिंतन एवं मनन करने की शक्ति को विकसित करना।

विशिष्ट उद्देश्य

1. **अभिव्यक्ति–** भावों और विचारों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने की क्षमता का विकास करना।
2. **भाषा से संबंधित तत्वों का बोध कराना –** शब्द–रचना, वाक्य–रचना, संधि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय, शुद्ध शब्दों का ज्ञान, शुद्ध उच्चारण आदि की क्षमता का विकास करना।
3. विश्लेषणात्मक क्षमता विकसित करना।

विधाओं के आधार पर साहित्य का वर्गीकरण

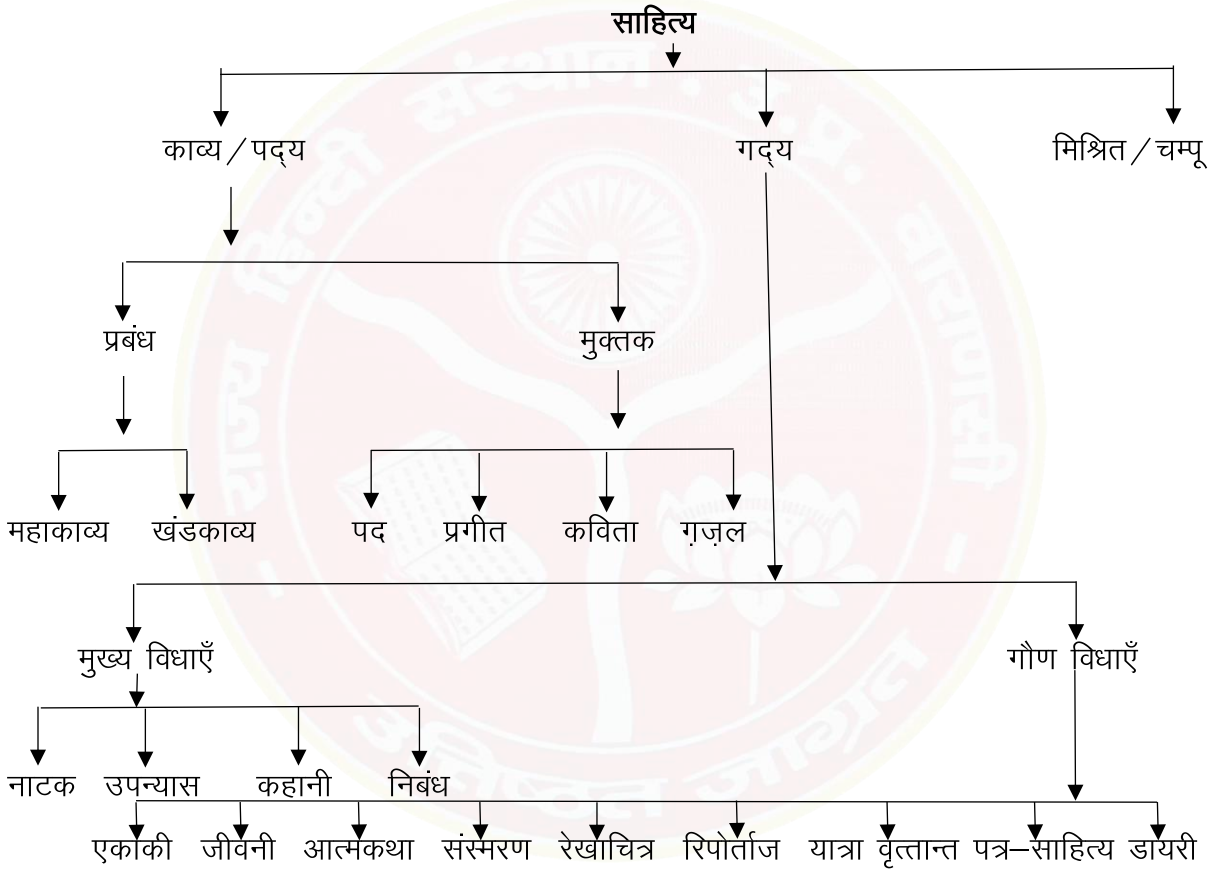

3.2 पद्य / कविता / काव्य की परिभाषा

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, "जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान दशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है उसे कविता कहते हैं। छंदबद्ध या छंदमुक्त ऐसी संगीतात्मक रचना अर्थात जिसे संगीत की तरह गाया जा सके, जिसमें भाव एवं कल्पना की प्रधानता हो पद्य या काव्य कहलाती है।

3.2.1 काव्य के प्रकार या भेद

काव्य दो प्रकार के होते हैं, जो निम्नवत हैं–
(अ) प्रबंध काव्य
(ब) मुक्तक काव्य

(अ) प्रबंध काव्य– इसमें कोई प्रमुख कथा/काव्य आदि से अंत तक क्रमबद्ध रूप में चलती है। कथा का क्रम बीच में कहीं से भी टूटता नहीं है। गौण कथाएँ बीच–बीच में सहायक बनकर आती हैं। जैसे– रामचरितमानस, पृथ्वीराज रासो।

प्रबंध काव्य के दो भेद होते हैं–

- **महाकाव्य–** इसमें किसी ऐतिहासिक या पौराणिक महापुरुष के संपूर्ण जीवन चरित्र का आद्योपांत वर्णन होता है। जैसे रामचरितमानस, कामायनी।
- **खंडकाव्य–** इसमें किसी के संपूर्ण जीवन चरित का वर्णन न होकर केवल जीवन के किसी एक महत्त्वपूर्ण अंश का ही वर्णन होता है। जैसे रश्मिरथी, तुमुल, पंचवटी, अग्रपूजा।

(ब) मुक्तक काव्य– जिस काव्य में प्रत्येक पद पूर्वापर संबंध से मुक्त होता है और प्रत्येक पद संपूर्ण अर्थ को व्यक्त करने में स्वतंत्र रूप से समर्थ होता है, उसे मुक्तक काव्य कहते हैं। जैसे– बिहारी सतसई, कबीर के दोहे, ग़ज़लें इत्यादि।

3.3 गद्य और पद्य में अंतर

गद्य	पद्य
1. गद्य छंद, ताल, लय और तुकबंदियों से मुक्त रचना होती है।	1. पद्य छंद, ताल, लय और तुकबंदियों से युक्त रचना होती है।
2. गद्य में लयात्मकता नहीं होती है। इसे गाया नहीं जा सकता है।	2. पद्य में लयात्मकता होती है। यह गेय है अर्थात इसे गाया जा सकता है।
3. गद्य विधा के अंतर्गत कहानी उपन्यास, नाटक, निबंध, आत्मकथा, आलोचना आदि है।	3. पद्य के अंतर्गत कविता, गीत, प्रगीत, ग़ज़ल, खण्ड काव्य, महाकाव्य इत्यादि आते हैं।
4. गद्य का संबंध हमारे विचारों से होता है।	4. पद्य का संबंध हमारी भावनाओं से होता है।
5. गद्य में अलंकारों का प्रयोग कम होता है।	5. पद्य में अलंकारों का प्रयोग अधिक होता है।
6. गद्य में व्याकरण का कठोर अनुशासन होता है।	6. पद्य में व्याकरण का अनुशासन शिथिल होता है।

3.4 वाचन और पठन

गतिविधि

❖ प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से परिषदीय विद्यालयों के हिन्दी विषय की पाठ्य पुस्तक में से पाठ का नाम और संबंधित विषय की विधा बताने के लिए कहेंगे। उसके बाद दिए गए उत्तरों को श्यामपट्ट पर लिखकर उनको गद्य और पद्य के विषय में बताएँगे।

गतिविधि का नाम : आइए पढ़ते हैं।

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : कन्नड़, नेपाली तथा हिन्दी गद्यांश या पद्यांश लिखा हुआ तीन चार्ट।

उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

(प्रशिक्षक कन्नड़ भाषा के चार्ट को प्रशिक्षुओं को दिखाते हुए प्रश्न पूछेंगे)

ಪ್ರಣಯ ಸಿದ್ಧಾಂತ

ಕರ್ಮವಂತೆ ಧರ್ಮವಂತೆ
ಕೆಲಸವಂತೆ ಕೀರ್ತಿಯಂತೆ
ದೇಶವಂತೆ ಭಕ್ತಿಯಂತೆ
ಆತ್ಮವಂತೆ ಮುಕ್ತಿಯಂತೆ:
ಎಲ್ಲ ಕೂಡಲೊಂದು ಸೊನ್ನೆ
ನೀನಿಲ್ಲದೆ, ನನ್ನ ಚೆನ್ನೆ!

- ಕುವೆಂಪು

प्रशिक्षक– क्या आप इसे पढ़ सकते हैं?
प्रशिक्षु– ...(संभावित उत्तर)।
प्रशिक्षक– चार्ट में लिखे वर्णों का ज्ञान न होने के कारण आपको इसे पढ़ने में कठिनाई हो रही है।

"नरोउ तिमी जस्को लागि तिमी रोएको छौ नि उ तिम्रो आसुँको योग्य छैन। जो तिम्रो आसुँको योग्य छ नि उस्ले त कहिले रुवाउने छौन।"

(प्रशिक्षक नेपाली भाषा के चार्ट को प्रशिक्षुओं को दिखाते हुए प्रश्न पूछेंगे)

प्रशिक्षक– क्या आप इसे पढ़ सकते हैं?
प्रशिक्षु– ...(संभावित उत्तर)।
प्रशिक्षक– क्या आप इसका अर्थ समझ सकते हैं?
प्रशिक्षु– ...(संभावित उत्तर)।

प्रशिक्षक– आप इन वर्णों का उच्चारण का सकते हैं, क्योंकि आपको इनका ज्ञान हैं लेकिन इस भाषा की समझ न होने के कारण आप इसका अर्थ ग्रहण नहीं कर पा रहे हैं।

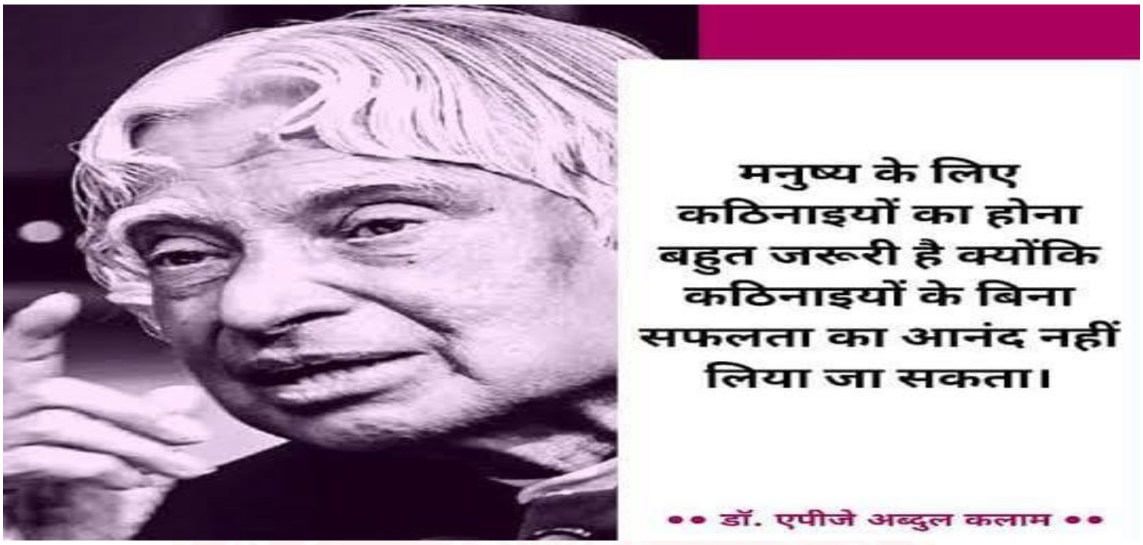

(प्रशिक्षक हिन्दी भाषा के चार्ट को प्रशिक्षुओं को दिखाते हुए प्रश्न पूछेंगे)

प्रशिक्षक– क्या आप इसे पढ़ सकते हैं?
प्रशिक्षु– ...(संभावित उत्तर)।
प्रशिक्षक– क्या आप इसका अर्थ समझ सकते हैं?
प्रशिक्षु– ...(संभावित उत्तर)।
प्रशिक्षक– आप इन वर्णों का उच्चारण कर पा रहे हैं, क्योंकि आपको इनका ज्ञान हैं साथ ही इस भाषा की समझ होने के कारण आप इसका अर्थ ग्रहण भी कर रहे हैं।

इस प्रकार प्रथम चार्ट में जहाँ हम न तो कन्नड़ भाषा के वर्णों को पहचानते हैं और न ही उनकी समझ रखते हैं वहीं द्वितीय चार्ट में हम नेपाली भाषा के वर्णों को तो पहचान लेते हैं लेकिन उनकी समझ नहीं रखते हैं। इसे डिकोडिंग कहते हैं। तृतीय चार्ट में हम हिन्दी भाषा के वर्णों/शब्दों को पहचानते हैं साथ ही उनकी समझ भी रखते हैं। इसे पठन या वाचन भी कहते हैं।

3.4.1 डिकोडिंग व पठन

लिपि संकेतों (वर्णों) को पहचान कर उच्चारण करना = डिकोडिंग

लिपि संकेतों (वर्णों) को पहचान कर उच्चारण करना × अर्थबोधन या (भाषायी) समझ = पठन या वाचन

प्रश्न यह उठता है कि यदि डिकोडिंग (वर्ण पहचान) एवं अर्थबोधन (भाषायी समझ) मिलकर पठन का निर्माण करते हैं तो दोनों के बीच योग चिह्न (+) क्यो नहीं लगा है? गुणा चिह्न (×) क्यों लगा है?

इसको हम निम्नांकित तालिका से समझ सकते हैं–

	वर्ण/पहचान		भाषायी समझ		पठन
पहली स्थिति	0.5	×	1	=	0.5
दूसरी स्थिति	1	×	0.5	=	0.5
तीसरी स्थिति	0.5	×	0.5	=	0.25
चौथी स्थिति	1	×	1	=	1

जहाँ 1 = 100 %

यदि हम अक्षर पहचान (डिकोडिंग) व भाषायी समझ का योग (+) कर पठन का निर्माण करते तो चारों स्थितियों में शत–प्रतिशत या उससे ज्यादा पठन होगा। जैसे; तीसरी स्थिति में आधा वर्ण पहचान व आधे भाषायी समझ से पूर्ण पठन का निर्माण हो सकता था।

गतिविधि (आइए पढ़ते हैं) में जब हमने कन्नड़ गद्यांश देखा तो हमारा अक्षर ज्ञान व भाषायी समझ दोनों शून्य ही थी। अतः पठन शून्य रहा। दूसरे गद्यांश (नेपाली) में वर्ण पहचान शत–प्रतिशत (1) था लेकिन भाषायी समझ शून्य (0) होने के कारण पठन शून्य होगा। यह तभी संभव है जब दोनों के मध्य गुणा (×) का संबंध हो (1 × 0 = 0)।

यदि योग किया जाता तो नेपाली भाषा वाले उदाहरण में वर्ण पहचान (1), भाषायी समझ (0) = पठन (1) होता अर्थात् बिना समझे भी पठन पूर्ण होता। फिर डिकोडिंग और पठन में कोई अंतर न रह जाता। तीसरे उदाहरण (हिन्दी) में वर्ण पहचान (1) व भाषायी समझ (1) = पठन (1) होगा।

अर्थात कहा जा सकता है कि लिपि संकेतों को मन में अथवा मुखर रूप में धारा प्रवाह ढंग से उच्चारित करते हुए उनके द्वारा निर्मित शब्दों व वाक्यों का अर्थ ग्रहण करना ही पठन अथवा वाचन है।

किसी भी लिखित सामग्री को पढ़ना ही वाचन कहलाता है। वाचन शब्द 'वाक्' धातु से बना है। जिसका अर्थ है शब्द, वाणी अथवा कथन। यदि वाचन के विस्तृत अर्थ को देखा जाए तो निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि ध्वनियों के प्रतीकों एवं लिपिबद्ध शब्दों को गति के साथ पढ़कर अर्थ ग्रहण की प्रक्रिया ही वाचन या पठन है।

बी0 एम0 सक्सेना के अनुसार– "शिक्षा के क्षेत्र में वाचन से तात्पर्य सार्थक लिपि चिह्नों को पहचानना मात्र न होकर उनके अर्थ ग्रहण करने से है।"

3.4.2 वाचन के भेद

वाचन को मूलतः दो भागों में विभक्त कर सकते हैं–

- सस्वर वाचन
- मौन वाचन

सस्वर वाचन– लय सहित पढ़ते हुए अर्थ ग्रहण करने को सस्वर वाचन कहते हैं। यह वाचन की प्रारंभिक अवस्था होती है। सस्वर वाचन के लिए लिपियों की पहचान आवश्यक है।

मौन वाचन– लिखित सामग्री को बिना आवाज निकाले पढ़ना मौन वाचन कहलाता है। शब्दों के उच्चारण के बिना वाचन करना ही मौन वाचन है। इसमें मुँह बंद रहता है व होंठों में भी कोई गति नहीं होती है।

सस्वर वाचन के उद्देश्य

- उच्चारण में शुद्धता होना।
- यति, गति, लय में योग्यता प्रदान करना।
- शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण के साथ पढ़ना।
- विराम चिह्नों का ध्यान रखकर पढ़ना।
- विषय वस्तु को पढ़कर अर्थ एवं भाव ग्रहण करने की योग्यता प्रदान करना।

सस्वर वाचन का महत्त्व

- शब्द भंडार में वृद्धि होती है।
- इससे स्वराघात और बलाघात का भी समुचित ज्ञान हो जाता है।
- सस्वर वाचन से संकोच, हिचकिचाहट और झिझक कम होती है।
- अक्षर विन्यास भी शुद्ध होता है।
- इससे नवीन शब्दों, सूक्तियों, लोकोक्तियों व मुहावरों का ज्ञान होता है।

सस्वर वाचन के भेद

- ➢ आदर्श वाचन
- ➢ अनुकरण वाचन

आदर्श वाचन– आदर्श वाचन के द्वारा शब्दों को शुद्ध, व्याकरण सम्मत एवं प्रभावशाली रूप में बोला जाता है। यह प्रायः शिक्षक के द्वारा किया जाता है ताकि वह बच्चों के सामने उत्तम वाचन का उदाहरण प्रस्तुत कर सकें। आदर्श वाचन के भी दो प्रकार हैं–

1. व्यक्तिगत वाचन
2. सामूहिक या समवेत वाचन

अनुकरण वाचन– सामान्यतः अनुकरण वाचन बच्चों के द्वारा किया जाता है। आदर्श वाक्य से ही प्रेरित होकर बच्चे अनुकरण वाचन करते हैं।

ये दोनों वाचन शिक्षक द्वारा भी हो सकता है तथा बच्चों द्वारा भी हो सकता है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आदर्श वाचन व अनुकरण वाचन बच्चे व शिक्षक दोनों कर सकते हैं।

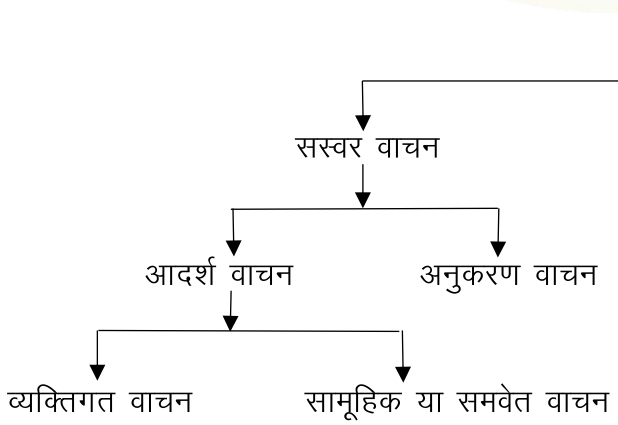

मौन वाचन– शब्दों को बिना उच्चारण के वाचन करना मौन वाचन है। गद्यांश के अर्थ एवं भाव को समझने के लिए मौन वाचन बहुत उपयोगी है। मौन वाचन के समय होठ बंद रहते हैं।

जड़ महोदय का कथन है– ''जब छात्र पैरों से चलना सीख जाता है तो घुटनों के बल खिसकना छोड़ देता है। इसी प्रकार भाषा के क्षेत्र में बच्चा जब मौन वाचन की कुशलता प्राप्त कर लेता है तो सस्वर वाचन का अधिक प्रयोग छोड़ देता है।''

मौन वाचन के उद्देश्य– दैनिक जीवन में व्यक्ति मौन वाचन का अत्यधिक प्रयोग करता है। मौन वाचन ध्यान केंद्रीकरण हेतु आदर्श है। जीवन में इसका अत्यधिक महत्त्व है। मौन वाचन के निम्नलिखित उद्देश्य है–

1. बच्चों में बोध शक्ति का विकास करना।
2. द्रुत गति से पठन का अभ्यास करना।
3. शब्द भंडार, भाषा भंडार, मुहावरा एवं लोकोक्तियों के भंडार को विकसित करना।
4. स्वाध्याय की ओर प्रेरित करना और साहित्य में रुचि उत्पन्न करना।
5. थकान को कम करके शरीर में ऊर्जा का संचार करना।
6. कल्पना शक्ति का विकास करना।
7. कम से कम समय में विषय की गहराई की समझ उत्पन्न करना।
8. एक ही कक्षा–कक्ष में कई कक्षाओं एवं विषयों के बच्चों को अध्ययन में व्यस्त रखना।

3.5 शुद्ध उच्चारण

हिन्दी भाषा को सीखने में शुद्ध उच्चारण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शुद्ध उच्चारण के द्वारा व्यक्ति एक निश्चित अर्थ को समझ पाता है। उच्चारण वह तरीका है जिससे किसी शब्द या भाषा को बोला जाता है। हिन्दी भाषा को तभी समझा जा सकता है जब उसका उच्चारण शुद्ध रूप में किया जाए। अशुद्ध उच्चारण हिन्दी भाषा को सीखने में अत्यंत बाधक होता है।

बच्चों को उच्चारण संबंधी ज्ञान प्रारंभिक शिक्षा के समय ही प्रदान करना चाहिए। जिस समय बच्चों को स्वरों और व्यंजनों की शिक्षा प्रदान की जा रही हो उसी समय उनके उच्चारण पर ध्यान देना चाहिए ताकि वे शब्दों का सही उच्चारण कर सकें। जब वे अपने विचारों को दूसरों के समक्ष प्रस्तुत करें तो दूसरा उसे सहजता से समझ सके।

3.5.1 शुद्ध उच्चारण का महत्त्व

हिन्दी भाषा में उच्चारण का विशेष महत्त्व होता है। क्योंकि उच्चारण की अशुद्धि से अर्थ का अनर्थ हो जाता है। जैसे वाक्य है– **'विपत्ति काल में स्वजन ने मेरी सहायता की।'** यदि इसके स्थान पर **'विपत्ति काल में श्वजन ने मेरी सहायता की'** तो उपहास का पात्र बनेगा क्योंकि **'स्वजन'** का अर्थ **'अपने'** होता है जबकि **'श्वजन'** का अर्थ **'कुत्ता'** होता है।

3.5.2 शुद्ध उच्चारण हेतु ध्वनियों का वर्गीकरण

स्वर	व्यंजन	शरीर अवयव	वर्ग
अ, आ	क, ख, ग, घ, ङ, ह, विसर्ग (:)	कंठ	कंठ्य
ई, इ	च, छ, ज, झ, ञ, य, श	तालु	तालव्य
ऋ	ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ष	मूर्धा	मूर्धन्य
लृ	त, थ, द, ध, न, ल, स	दंत	दन्त्य

उ, ऊ	प, फ, ब, भ, म	ओष्ठ	ओष्ठ्य
ए, ऐ		कंठ तालु	कंठ्य तालव्य
ओ, औ		कंठ ओष्ठ	कंठोष्ठ्य

3.5.3 उच्चारण हेतु अक्षर एवं उच्चारण के स्थान

अक्षर / वर्ण	उच्चारण स्थान
अ (मध्य स्वर)	मुख में जीभ का न अग्र भाग ऊपर उठे न पश्च भाग ही।
आ. उ, ओ, औ (पश्च)	जीभ का पिछला भाग ऊपर उठता है।
इ, ई, ए, ऐ (अग्र)	जीभ का अग्र भाग ऊपर उठता है।
क, ख, ग, घ, ङ (कंठ्य)	जीभ के पिछले भाग से कोमल तालु स्पर्श करता है।
च, छ, ज, झ, ञ (तालव्य)	जीभ का अग्रभाग कठोर तालु से स्पर्श करता है।
ट, ठ, ड, ढ, ण (मूर्धन्य)	जीभ की उल्टी हुई नोक का निचला भाग मसूड़ों को स्पर्श करता है।
त, थ, द, ध, न (दन्त्य)	जीभ की नोंक ऊपर दाँतो को स्पर्श करती है।
प, फ, ब, भ, म, (ओष्ठ्य)	होंठ साँस को रोकते हैं।
व (दन्तोष्ठ्य)	नीचे वाला होठ ऊपर के दाँतो को स्पर्श करता हैं।
न, र, ल (वर्त्स्य)	जीभ ऊपरी मसूड़ों को छूती है।
ह (काकल्य)	साँस तीव्र वेग में स्वर यंत्र पर संघर्ष करती है।
ङ, ञ, ण, न, ल (अनुनासिक)	वायु नासिका पंथ से निकलती है।

3.6 आक्षरिक उच्चारण के नियम

1. कौन सा अक्षर किस स्थान से उच्चरित होता है? इसका ज्ञान बच्चों को देना चाहिए। शिक्षक को उस अक्षर का स्वयं उच्चारण कर बच्चों से शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराना चाहिए।
2. क्ष को क्ष के रूप में बोला जाता है न कि छ के रूप में जैसे– क्षत्रिय, रक्षा।
3. ष को हिन्दी में ख के रूप में नहीं बोला जाता है। जैसे– वर्षा।
4. ज्ञ को ग्य के रूप में न बोलकर ज्ञ के रूप में बोला जाय। जैसे– ज्ञान।
5. ण का उच्चारण स्वर सहित होने पर ठीक ण की तरह होता है किंतु स्वर रहित होने पर उसका उच्चारण न के समान होता है। जैसे– पण्डित।
6. ञ् तत्सम शब्दों में संयुक्त अक्षर बनाने के काम आता है और उच्चारण न् के समान होता है। जैसे– चंचल
7. ऋ को रि के रूप में बोला जाता है। जैसे– ऋतु।
8. ङ भी तत्सम शब्दों में प्रयुक्त होता है और इसका उच्चारण न की तरह होता है। जैसे– गंगा–गंङ्गा।

3.7 अशुद्ध उच्चारण के कारण

भाषा में अशुद्ध उच्चारण के अनेक कारण होते हैं। यहाँ पर कुछ प्रमुख कारणों का उल्लेख किया जा रहा है–

1. अशुद्ध उच्चारण वाले व्यक्तियों का प्रभाव–

यदि शिक्षक या किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा अशुद्ध उच्चारण किया जाता है तो बच्चे उनका अनुकरण करते हैं और वे भी अशुद्ध उच्चारण करना सीख जाते हैं।

2. भौगोलिक प्रभाव–

भौगोलिक प्रभाव से भी स्वर यंत्र की बनावट में अंतर आ जाता है पहाड़ी लोगों का उच्चारण मैदानी क्षेत्र के उच्चारण से बिल्कुल ही भिन्न होता है।

3. क्षेत्रीय भाषा का प्रभाव–

क्षेत्रीय भाषाओं के प्रभाव के कारण उच्चारण में अशुद्धता आती है जैसे पंजाबी में क, ख, ग, घ के बदले का, खा, गा एवं घा का उच्चारण किया जाता है। बंगाल में व के स्थान पर हर जगह ब का उच्चारण किया जाता है। तमिल में थ के बदले त बोला जाता है।

4. अक्षरों और मात्राओं का अस्पष्ट ज्ञान–

जब तक सभी ध्वनियों और वर्णों व मात्राओं का सही ज्ञान नहीं होगा तब तक उच्चारण में अशुद्धि देखने को मिलती रहेगी।

5. शारीरिक विकार–

शारीरिक विकार भी जब उच्चारण यंत्र में पैदा हो जाते हैं तो उच्चारण को अशुद्ध बना देते हैं। जैसे– कोई तोतला बोलने वाला बच्चा र को ल बोलता है।

6. मनोवैज्ञानिक कारण–

उच्चारण पर मनोवैज्ञानिकता का प्रभाव पड़ता है। भय, संकोच, शीघ्रता, विलंब आदि से उच्चारण में दोष आ जाते हैं। इससे तुतलाना, लापरवाही आदि का विकास होता है और उच्चारण दोषपूर्ण हो जाता है।

7. प्रयत्न लाघव–

ध्वनियों व शब्दों के उच्चारण में पूर्ण सावधानी न रखने पर यह दोष उत्पन्न हो जाता है।

3.7.1 उच्चारण संबंधी त्रुटियों का निराकरण

प्रारंभिक स्तर पर ही बच्चों की भाषाओं में त्रुटियाँ होने पर यदि उसका निराकरण कर दिया जाए तो उच्चारण शुद्ध हो सकता है जो इस प्रकार किया जा सकता है–

शुद्ध शब्द	अशुद्ध उच्चारण	टिप्पणी
गोशाला, गोस्वामी	गौशाला, गौस्वामी	ओ का उच्चारण औ की तरह
त्योहार	त्यौहार	ओ का उच्चारण औ की तरह
प्रशंसा	प्रसंशा	ध्वनियों को पलट देना
चिह्न, ब्रह्मा	चिन्ह, बम्हा	ध्वनियों को पलट देना
ज्ञान	ग्यान	ज्ञ को ग्य बोलना
जाना, पानी	जाणा, पाणी	न को ण बोलना
भरत, दशरथ	भरथ, दशरत	त को थ और थ को त बोलना
कवि, मुनि, शान्ति	कवी, मुनी, शान्ती	लिखते 'इ' हैं लेकिन बोलते ई हैं।
वृक्ष	व्रक्ष	लिखना ऋ बोलना र

पढ़ना	पड़ना	ढ़ को ड़ बोलना
विनय, विषय	बिनय, बिषय	व को ब बोलना
गड्ढा	गड्डा	ढ को ड बोलना
लड़का	लरका	ड़ को र बोलना
कक्षा	कच्छा	क्ष को च्छ बोलना

3.7.2 उच्चारण दोषों के निराकरण के उपाय

जब बच्चा पहली बार स्कूल जाता है तब वार्तालाप करने से शिक्षक को पता चल जाता है कि बच्चा उच्चारण संबंधी कौन सी त्रुटि कर रहा है। इन त्रुटियों को जानने के बाद एक शिक्षक यह भी जानने का प्रयास करता है कि बच्चे इस प्रकार की त्रुटियाँ क्यों कर रहे हैं? इस बात की जानकारी कर लेने के बाद ही शिक्षक बच्चों के उच्चारण को ठीक करने के लिए विभिन्न प्रकार के उपाय का प्रयोग करते हैं क्योंकि शुद्ध उच्चारण के साथ मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का विकास करना हिन्दी भाषा की शिक्षा का एक उद्देश्य है। इसके लिए शिक्षक निम्नलिखित उपायों का प्रयोग कर सकते हैं–

1. **ध्वनि तत्त्व का ज्ञान कराना–** बच्चे को जब भाषा का ज्ञान हो जाए और वह लिखने का कार्य आरंभ करें तब बच्चे को हिन्दी भाषा के ध्वनि तत्व का पूरा ज्ञान कराना चाहिए। प्रत्येक ध्वनि के लिए अलग–अलग वर्ग निश्चित है अतः बच्चों को ध्वनियों का विस्तृत एवं स्पष्ट ज्ञान कराना चाहिए।
2. **हिन्दी ध्वनियों का वर्गीकरण–** ध्वनि तत्त्वों का प्रारंभिक ज्ञान कराने के पश्चात हिन्दी ध्वनियों का वर्गीकरण समझाना चाहिए। उच्चारण की प्रकृति, उच्चारण स्थान, बोध, प्रयत्न एवं आभ्यंतर प्रयत्न के आधार पर ध्वनियों का अलग–अलग ढंग से वर्गीकरण सिखाना चाहिए।
3. **हिन्दी की विशेष ध्वनियों का अभ्यास कराना–** हिन्दी भाषा में कुछ ध्वनियाँ ऐसी हैं जिनमें सूक्ष्म अंतर है। इन अंतरों का स्पष्ट ज्ञान बच्चों को कराना चाहिए। जैसे– न और ण, व और ब, स, श और ष, ड और ड़, ढ़ और क्ष, छ आदि। इन ध्वनियों का सही उच्चारण करने का अभ्यास शब्दों के उदाहरणों से बार–बार कराना चाहिए; जैसे–

न– कन, मन, नमक, नल

ण– कण, क्षण, रण, गुण, गण, ...

व– पवन, केवल, वकील, वतन, ...

ब– बकरी, बल, कब, तब, ...

स– उसका, इसका, सरल, सहज, ...

श– शलजम, शुभ, शोभा, ...

ष– कृषक, वर्षा, षड्यंत्र, षडानन, षष्टी, ...

ड– डमरू, डम–डम, डगर, डगमग, ...

ड़– पड़ा, खड़ा, पेड़, लड़का, लड़की, ...

ढ– ढाल, ढाल, ढाबा, ढोलक, ढीला, ...

ढ़– बूढ़ा, बूढ़ी, कढ़ी, पढ़ना, चढ़ना, ...

छ– छाता, छत, छड़, छह, छप्पर, ...

क्ष– कक्षा, कक्ष, क्षमा, क्षण, शिक्षा, वृक्ष, ...

3.8 उच्चारण स्थानों का ज्ञान कराना

ध्वनियों का उच्चारण करने में मुख के हर अवयवों का अपना महत्त्व होता है। उच्चारण स्थल के गलत प्रयोग से ध्वनि अशुद्ध हो जाती है। इसके लिए शिक्षक निम्नांकित साधनों की सहायता ले सकते है–

1. सिर और ग्रीवा का एक मॉडल, जिसमें हर उच्चारण अवयव को स्पष्ट रूप से दिखाया गया हो।
2. ध्वनि तंत्र का चित्र।
3. दर्पण, जिसमें बच्चा अपनी जिह्वा का विभिन्न उच्चारण स्थलों पर स्पर्श करते हुए देख सके।
4. विद्यालयों में ब्लूटूथ स्पीकर और स्मार्ट प्रोजेक्टर पर बच्चों को शुद्ध उच्चरित शब्दों तथा वाक्यों को सुना कर इस प्रकार से उच्चारण करने का अभ्यास करवा कर।

शिक्षक का उच्चारण

कक्षा में शिक्षक के बोलने का पूरा प्रभाव बच्चों पर पड़ता है। उसकी वाचन अभिक्षमता आदि को बच्चों द्वारा ध्यानपूर्वक सुना जाता है। अतः शिक्षक को अपने उच्चारण पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

गतिविधि

❖ प्रशिक्षक पाठ्यपुस्तक से किसी कविता का आदर्श पाठ लय एवं उतार–चढ़ाव के साथ करेंगे। तदुपरांत बच्चों से उसी लय में पढ़ने के लिए कहेंगे। बीच–बीच में जहाँ कहीं भी वे उच्चारण संबंधी त्रुटि करते हैं शिक्षक उन त्रुटियों को दूर करेंगे।

गतिविधि का नाम : आओ कविता पढ़ें

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : परिषदीय विद्यालय की पुस्तकें (अक्षरा, दीक्षा, प्रज्ञा)।

उद्देश्य– विषयवस्तु की विस्तृत समझ विकसित करना।

झम–झम, झम–झम मेघ बरसते हैं सावन के,
छम–छम–छम गिरती बूँदें तरुओं से छन के।
चम–चम बिजली चमक रही रे उर में घन के,
थम–थम दिन के तम में सपने जगते मन के।।

पंखों से रे, फैले–फैले ताड़ों के दल,
लम्बी–लम्बी अंगुलियाँ हैं, चौड़े करतल।
तड़–तड़ पड़ती धार वारि की उन पर चंचल,
टप–टप झरती कर मुख से जल बूँदें झलमल।।

– (कक्षा 7, पाठ : मनभावन सावन)

उपर्युक्त पंक्ति को आदर्श पाठ के रूप में गाकर प्रशिक्षक सुनाएँगे, फिर से प्रशिक्षुओं से सस्वर पाठ करने के लिए कहेंगे। बीच–बीच में जहाँ कहीं भी प्रशिक्षु उच्चारण संबंधी त्रुटि करता है तो प्रशिक्षक उन त्रुटियों को दूर करेंगे।

बोध परीक्षण

1. स्कूल में भाषा शिक्षण का वातावरण और घर का माहौल जहाँ बच्चे भाषा अर्जित करते हैं वह अलग है इस कथन से आप सहमत हैं या असहमत, क्यों?
2. कक्षा में उच्चारण संबंधित गलती, उच्चारण सुधार के लिए अत्यंत उपयोगी है इस कथन से आप सहमत हैं या असहमत, क्यों?
3. क्या आपको लगता है कि स्वतंत्र अभिव्यक्ति मातृभाषा में देना बच्चों के लिए सरल होगा अपने विचार तर्क सहित रखिए?
4. अपने आसपास के 6 से 12 साल के बच्चों द्वारा बोले जाने वाले 10 वाक्यों की सूची बनाइए। क्या बच्चों ने इनमें से कोई वाक्य गलत बोला है? इसे बच्चों ने कैसे सीखा? यदि बच्चा वाक्य का उच्चारण गलत बोलता है तो क्यों?
5. कहानी व कविता हमारे श्रवण कौशल का विकास करती है। कहानी हमारी वैचारिक दुनिया का विस्तार करती है। स्पष्ट करें?

समेकन

मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है क्योंकि ईश्वर ने उसे अभिव्यक्ति क्षमता प्रदान किया है। बोलने की क्षमता तो ईश्वर ने पशु–पक्षियों को भी दिया है किंतु उनकी कोई व्याकरण सम्मत भाषा नहीं है। व्याकरण हमें किसी भी भाषा के शुद्ध उच्चारण एवं लेखन का ज्ञान प्रदान करता है। शुद्ध उच्चारण के बिना प्रभावी मौखिक अभिव्यक्ति संभव नहीं है। बच्चों में मौखिक अभिव्यक्ति व शुद्ध–अशुद्ध वाचन की क्षमता का विकास उसके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास हेतु आवश्यक है।

स्व आकलन

1. **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–**

   (क) लिपि संकेतों को बिना अर्थ समझे केवल ध्वनि में परिवर्तित करना .... कहलाता है। (पठन / डिकोडिंग)

   (ख) डिकोडिंग में....................के सम्मिलित होने पर पठन कहलाता है।(भाषायी समझ / व्याकरण)

   (ग) यदि हिन्दी जानने वाला व्यक्ति देवनागरी में ही लिखी नेपाली भाषा को पढ़ने का प्रयास करें तो.................होगा। (पठन / डिकोडिंग)

   (घ) हिन्दी की लिपि....................है (देवनागरी / रोमन)

2. **सुमेलित कीजिए–**

महाकाव्य	पंचवटी
खंड काव्य	कामायनी
मुक्तक	चन्द्रगुप्त
दृश्य काव्य	बिहारी सतसई

3. सत्य/असत्य पहचानें–

(क) शब्दों को बिना उच्चारण के वाचन करना मौन वाचन है ।

(ख) लय सहित पढ़ते हुए अर्थ ग्रहण करने को मौन वाचन कहते हैं ।

(ग) महाकाव्य में किसी ऐतिहासिक या पौराणिक महापुरुष की संपूर्ण जीवन कथा का आद्योपांत वर्णन होता है।

(घ) खंडकाव्य में किसी की संपूर्ण जीवनकथा का वर्णन न होकर के जीवन के किसी एक ही भाग का वर्णन होता है।

4. निम्नांकित शब्दों को शुद्ध रूप में लिखिए–

चिन्ह, ब्रम्हा, ग्यान, गौशाला, गौस्वामी, त्यौहार

5. निम्नांकित वर्णों का उच्चारण स्थान लिखिए–

व .... च .... ष .... ऋ ....

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भाषायी अभिव्यक्ति हम किस प्रक्रिया द्वारा करते हैं?
   (क) लिखित (ख) मौखिक
   (ग) सांकेतिक (घ) इनमें से सभी
2. लिखित भाषा में अभिव्यक्त विचारों को पढ़ने की क्रिया कहलाती है।
   (क) लेखन (ख) वाचन
   (ग) श्रवण (घ) भाषण
3. पद्य या कविता पाठ का महत्त्वपूर्ण सोपान क्या है?
   (क) प्रस्तावना (ख) भाव विश्लेषण
   (ग) आदर्श वाचन (घ) काव्य पाठ
4. गद्य विधा से संबंधित नहीं है–
   (क) निबंध (ख) कहानी
   (ग) कविता (घ) नाटक
5. गद्य को किसकी कसौटी माना गया हैं।
   (क) लेखकों की (ख) कवियों की
   (ग) शिक्षकों की (घ) छात्रो की
6. मौन वाचन कहलाता है।
   (क) गाकर पढ़ना (ख) मन में पढ़ना
   (ग) उच्च स्वर में पढ़ना (घ) त्वरित गति से पढ़ना
7. शिक्षक द्वारा वाचन क्रिया कहलाती है।
   (क) सस्वर वाचन (ख) अनुकरण वचन
   (ग) मौन वाचन (घ) आदर्श वाचन
8. कविता शिक्षण का उद्देश्य है–
   (क) सृजनात्मक क्षमता का विकास (ख) सौंदर्यानुभूति का विकास
   (ग) कविताओं को कंठस्थ एवं संग्रह करने की प्रवृत्ति का विकास (घ) इनमें से सभी

स्व आकलन

1. सस्वर वाचन के कितने भेद हैं?
2. आदर्श वाचन क्या है?
3. गद्य की किन्हीं दो विधाओं का नाम लिखिए?
4. रेखाचित्र कौन सी विधा है?
5. कविता किस विधा में आती है?
6. दिए गए वर्णों को उच्चारण स्थानों की दृष्टि से निर्धारित स्तंभ में लिखिए–
   व, ड, द, ख, ग, छ, ज, श, त

दाँत	तालु	कण्ठ	मूर्धा	दाँत और ओष्ठ

विचार विश्लेषण

1. गद्य और पद्य की दो–दो विशेषताओं को लिखिए?
2. वाक्य क्या है? स्पष्ट करें।
3. हिन्दी शिक्षक के रूप में सस्वर–वाचन तथा आदर्श वाचन कैसे करेंगे?
4. गद्य पद्य से कैसे अलग हैं स्पष्ट करें?
5. बलाघात क्या है?
6. उच्चारण करते समय किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
7. व्यंजन के प्रकारों का वर्णन करें?
8. स्वर तथा व्यंजन को स्पष्ट करें?
9. हिन्दी भाषा के कौशलों का वर्णन करें?
10. लेखन शिक्षण के महत्त्व को स्पष्ट करें।
11. वाचन का अर्थ लिखिए ? यह कितने प्रकार का है? वर्णन करें।
12. मौखिक अभिव्यक्ति के लिए कम से कम तीन क्रियाकलापों का वर्णन करें?

परियोजना कार्य

परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में संचालित कक्षा–5 की हिन्दी पाठ्य पुस्तक के किसी गद्यांश अथवा पद्यांश का शुद्ध उच्चारण, लय एवं उतार चढ़ाव के साथ वाचन करते हुए एक वीडियो का निर्माण कीजिए।

इकाई 4 स्वतंत्र (मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति)

4.1 स्वतंत्र अभिव्यक्ति : महत्त्व एवं आवश्यकता
4.2 मौखिक अभिव्यक्ति : उद्देश्य, शिक्षण विधियां एवं उपयोगिता
4.3 लिखित अभिव्यक्ति एवं इसके साधन

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु भाषा विकास में स्वतंत्र अभिव्यक्ति की भूमिका को समझ लेते हैं।
2. प्रशिक्षु मौखिक भाषा विकास के चरणों को जानते हैं तथा बच्चों को मौखिक भाषा विकास में दक्ष कर लेते हैं।
3. प्रशिक्षु मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति की समझ रखते हैं तथा बच्चों को मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति में सक्षम बना लेते हैं।
4. प्रशिक्षु व्यक्तित्व विकास में स्वतंत्र व्यक्ति हेतु क्रियाकलापों का आयोजन करते हैं।

भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। यही नहीं यह हमारे आभ्यंतर का निर्माण, हमारा विकास, हमारी अस्मिता, सामाजिक तथा सांस्कृतिक पहचान का भी साधन है। भाषा के बिना मनुष्य सर्वथा अपूर्ण है और अपने इतिहास तथा परंपरा से विच्छिन्न है। मानव प्रधानतः अपनी अनुभूतियों तथा मनोभावों की अभिव्यक्ति मौखिक भाषा में ही करता है, क्योंकि भाव की अभिव्यक्ति का साधन साधारणतः उच्चरित भाषा ही होती है।

भाषा के माध्यम से हम केवल संप्रेषण ही नहीं करते, बल्कि जो हम सोचते और महसूस करते हैं उसे सुंदर, प्रभावशाली, व्यंजनात्मक और पैने ढंग से अभिव्यक्ति करने के लिए भाषा एक सशक्त साधन है। जब हम बोलते हैं तो हम सहमत होते हैं कि शब्द–विचारों, स्थानों और घटनाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। बच्चे जो भाषा सीखते हैं वह उनकी संस्कृति और परिवेश से जुड़ी होती है।

इस प्रकार भाषा की मानव जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका है। मनुष्य अपनी जिन विशेषताओं के कारण पशु से भिन्न है, उनमें से एक विशेषता उसके पास स्वतंत्र विचारों हेतु अभिव्यक्ति की विविधता है। वैसे तो किसी भी वस्तु या विचार को परिभाषित करना उसके क्षेत्र को सीमित करना है किंतु समझ की दृष्टि से हम परिभाषा का सहारा तो ले ही सकते हैं। अभिव्यक्ति को हम निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित कर सकते हैं–

- **"अभिव्यक्ति स्थूल या सूक्ष्म वस्तु के प्रति की गई सांवेगिक प्रतिक्रिया है।"**
- **"अभिव्यक्ति ज्ञानेंद्रियों द्वारा प्राप्त अनुभूति का प्रत्युत्तर है।"**

प्रशिक्षक हेतु निर्देश

1. प्रशिक्षक को प्रशिक्षण से पूर्व स्वतंत्र (मौखिक–लिखित) अभिव्यक्ति की रूपरेखा (कार्य–योजना) तैयार कर लेनी चाहिए।
2. स्वतंत्र अभिव्यक्ति से संबंधित संभावित प्रश्नों का समाधान पूर्व में ही कर लेना चाहिए।
3. स्वतंत्र अभिव्यक्ति हेतु प्रयोगात्मक कार्यों से प्रशिक्षुओं को अवगत कराना चाहिए।
4. स्वतंत्र अभिव्यक्ति से संबंधित उपयुक्त ऑडियो–वीडियो सामग्री का चयन पूर्व में ही कर लेना चाहिए।
5. स्वतंत्र अभिव्यक्ति हेतु प्रशिक्षुओ को नई तकनीकी उपागमों से अवगत कराना चाहिए।
6. प्रशिक्षुओं के बीच में चर्चा परिचर्चा तथा गोष्ठियों का आयोजन करना चाहिए।

प्रशिक्षुओं हेतु निर्देश

1. बच्चों के साथ मित्रवत् व्यवहार करते हुए उन्हें स्वतंत्र अभिव्यक्ति हेतु तैयार करेंगे।
2. बच्चों में छोटे–छोटे कथा–कहानियों के माध्यम से मौखिक तथा लिखित अभिव्यक्ति को विकसित करेंगे।
3. बच्चों के साथ मिलकर उन्हें वाद–विवाद संबंधी ज्ञान प्राप्त कराएँगे।
4. बच्चों में अपने परिवेश से संबंधित बातों को सबके सम्मुख अभिव्यक्त करने का कौशल विकसित करेंगे।
5. बच्चों से किसी घटना, प्रसंग, वस्तु, प्राणी, दृश्य प्रक्रियाओं, चित्रों पर अपने विचारों/भावों को मौखिक रूप सें व्यक्त करने का क्रियाकलाप करवाएँगे।

गतिविधि–1

गतिविधि का नाम : आओ बात करें।

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : सामान्य परिवेशीय वस्तुएँ।

उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

❖ बच्चों को मौखिक अभिव्यक्ति में दक्ष बनाने के लिए प्रशिक्षक कुछ सामान्य प्रश्नों से शुरुआत कर सकते हैं–

1. आपको खाने में क्या–क्या अच्छा लगता है?
2. आपकी माताजी ने आज नाश्ता में क्या बनाया?
3. आपको कौन सा गाना अच्छा लगता है?
4. आपका पसंदीदा फल कौन सा है?
5. आपको कौन सा मौसम अच्छा लगता है और क्यों?
6. अपनी मनपसंद कोई कविता सुनाओ।
7. आप कहाँ घूमना पसंद करेंगे और क्यों?
8. आप अपने गाँव/परिवेश के विषय में बताइए।

गतिविधि–2

गतिविधि का नाम : आओ बात करें।

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : पशु–पक्षियों के चित्र।

उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

❖ भाषा के सृजनात्मक विकास के लिए आवश्यक है कि बच्चों में स्वतंत्र रूप से बोलने और लिखने की कला का विकास हो। इसके लिए बच्चों के स्तर और परिवेश को ध्यान में रखते हुए उन्हें स्वतंत्र अभिव्यक्ति के लिए प्रेरित करना चाहिए। प्रशिक्षु बच्चों को पशु–पक्षियों के चित्र दिखाकर उनसे कुछ प्रश्न पूछेंगे–

प्रश्न– आपको अपने आस–पास कौन–कौन से जानवर देखने को मिलते हैं?

उत्तर– ....(संभावित उत्तर)।

प्रश्न– उनमें से आपको किन–किन जानवरों को पालना तथा उनके साथ रहना पसंद है?

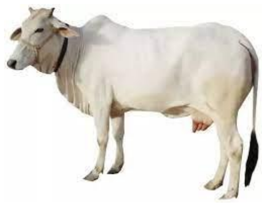

उत्तर– ....(संभावित उत्तर)।
प्रश्न– पालतू जानवरों के बीमार होने पर उन्हें इलाज के लिए आप कहाँ ले जाते हैं?
उत्तर– ....(संभावित उत्तर)।

4.1 स्वतंत्र अभिव्यक्ति का महत्त्व

भाषा के माध्यम से किया गया भाव प्रकाशन दो रूप लेता है––

1. लिखित
2. मौखिक

लिखित अभिव्यक्ति में वह लिखित भाषा के प्रतीकों तथा भाव चित्रों का प्रयोग करता है। मौखिक अभिव्यक्ति में लिखित भाषा गौण तथा मौखिक भाषा भाव प्रकाशन की प्रधान माध्यम होती है।

4.1.1 स्वतंत्र अभिव्यक्ति की आवश्यकता

गांधी जी ने अपनी शिक्षा प्रणाली में मौखिक अभिव्यक्ति पर इसलिए बल दिया क्योंकि यह अभिव्यक्ति लिखित अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक है। इस शिक्षा में पहले बच्चों को आसपास की घटनाओं, आधारभूत क्राफ्ट की प्रक्रियाओं तथा अन्य प्रकार के विषयों पर मौखिक अभिव्यक्ति हेतु प्रेरित किया जाता था तब वे उनको लिपिबद्ध करते थे।

गांधी जी के शब्दों में– ''मौखिक अभिव्यक्ति बच्चों को बलपूर्ण, उत्साह युक्त, जीवन शक्ति से पूर्ण लिखने में समर्थ बनाती है। इसका कारण यह है कि मौखिक भाषा में निपुण बच्चे लेखन में कुशलता सहज ढंग से प्राप्त कर लेते हैं। इन्हीं में से अनेक प्रतिभाशाली छात्र साहित्यकार बन जाते हैं।''

यदि विद्यार्थी को शुद्ध उच्चारण और आवश्यक गति से बोलने का अभ्यास करा दें तो वह एक दिन अवश्य ही शुद्ध लेखों को लिखने में दक्ष बनेगा।

लैंबॉर्न का कथन पूर्णतः सत्य है कि– ''सुंदर लेख वस्तुतः विचार पूर्ण संभाषण ही है।''

जीवन के सामान्य अवसरों पर अभिव्यक्ति सहज रूप से हो जाती है किंतु विद्यालयी जीवन में इसके लिए प्रयत्न अपेक्षित है। विद्यालय में अभिव्यक्ति शिक्षण के लिए किए गए प्रयत्न सामान्य जीवन में भी अभिव्यक्ति को प्रभावित करते हैं क्योंकि अभिव्यक्ति एक कौशल है और इस कौशल के अधिक विकास के लिए विद्यालयों में सुनियोजित प्रयत्न किए ही जाने चाहिए।

अच्छी कक्षा वह है जिसमें शिक्षक और बच्चों के बीच संवाद की स्थिति अधिगम के लिए अनुकूल वातावरण बनाती है।

4.2 मौखिक अभिव्यक्ति

मनुष्य जब अपने विचारों को दूसरे के समक्ष रखने के लिए भाषा का बोलकर प्रयोग करता है तो उसे मौखिक अभिव्यक्ति कहा जाता है।

मौखिक भाव प्रकाशन व्यक्ति की प्रधान आवश्यकता है और शिक्षा ऐसी सोद्देश्य क्रिया है जिसके द्वारा शिक्षण की आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती है। इसलिए शिक्षक को बच्चों के समक्ष भाव प्रकाशन के सभी साधन प्रस्तुत कर उनके व्यक्तित्व का विकास करना चाहिए।

4.2.1 मौखिक अभिव्यक्ति के उद्देश्य

मौखिक अभिव्यक्ति को बच्चों में प्रवीण करने के लिए हिन्दी भाषा के शिक्षक को कुछ बातों का ध्यान रखना अति आवश्यक है–

1. ऐसी गतिविधियों का निर्माण करें कि बच्चों ने जो देखा हो, सुना हो, पढ़ा हो तथा अनुभव किया हो उनका वर्णन शुद्ध भाषा में कर सकें।
2. ऐसी गतिविधियों के साथ हिन्दी पाठ का शिक्षण करवाएँ जिससे कि बच्चे निःसंकोच होकर अपने विचार व्यक्त कर सकें।
3. गद्य एवं पद्य का पहले स्वयं वाचन करें, जिसमें पद्य को लय ताल के साथ गाकर सुनाएँ ताकि बच्चे भी अनुकरण कर शुद्ध उच्चारण, उचित स्वर, गति एवं उचित हाव–भाव के साथ बोलना एवं पढ़ना सीख जाएं।
4. ऐसे सुंदर वातावरण का निर्माण करें जो बिल्कुल भय रहित हो। शिक्षक एवं बच्चे निःसंकोच होकर एक दूसरे से बात करें ताकि उनमें अपने विचारों को निःसंकोच कहने का गुण विकसित हो जाए।
5. प्रत्येक शनिवार को वाद–विवाद, अंत्याक्षरी तथा भाषण आदि का आयोजन करें। वाद–विवाद का विषय चुनते समय बच्चों की आयु, योग्यता, मानसिक स्तर और रूचि का ध्यान रखें। जैसे– प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों को साधारण जीवन, घर का वातावरण तथा उनके परिवेशीय संसाधन से संबंधित विषय दिए जाएँ। इससे बच्चों में धारा प्रवाह एवं प्रभावशाली तरीके से बोलने की कला विकसित होगी।
6. कक्षा का माहौल भयमुक्त रखें ताकि बच्चे अपनी इच्छानुसार कविता, संगीत, कहानी एवं चुटकुले सुना सकें जिससे कि बच्चों में उतार–चढ़ाव के साथ बोलने का कौशल विकसित हो सके।

4.2.2 मौखिक अभिव्यक्ति की शिक्षण विधियाँ

भाषा के बिना विद्यालय अथवा परिवार में सीखना–सिखाना दोनों ही असंभव कार्य है। मौखिक कार्य भाषा शिक्षण का प्रमुख आधार होता है। अतः भाषा शिक्षण करते समय प्राथमिक स्तर पर ही मौखिक अभिव्यक्ति का विकास किया जाना चाहिए ताकि बच्चों की अभिव्यक्ति में प्रवाहमयता, शुद्धता तथा मधुरता आ सके। इसके लिए प्रशिक्षु निम्नलिखित विधियों को अपनी शिक्षण गतिविधि में शामिल कर सकते हैं, जिससे बच्चों में मौखिक अभिव्यक्ति का विकास हो सके।

1. **सस्वर वाचन–** पाठ्य पुस्तक पढ़ाते समय प्रशिक्षु पहले स्वयं अनुच्छेद का आर्दश वाचन करें,उसके बाद बच्चों से अनुकरण वाचन करवाएँ। इसके लिए प्रशिक्षु द्वारा बच्चों को छोटी–छोटी कविता, बाल–गीत आदि कंठस्थ करानी चाहिए।
2. **कविता पाठ–** जब बच्चे प्राथमिक स्तर पर होते हैं तो उनकी प्रवृत्ति कविता एवं कहानी सुनने की होती है। प्रशिक्षु शिक्षक छोटी–छोटी कविताएँ कंठस्थ कराकर उन्हें कविता पाठ अथवा वाचन के लिए प्रेरित करें। उचित हाव–भाव के साथ संचालन करने से मौखिक अभिव्यक्ति का विकास होता है।
3. **चित्र वर्णन विधि–** यह विधि मौखिक अभिव्यक्ति के लिए सर्वोत्तम विधि है। प्राथमिक स्तर के बच्चे चित्र देखने में रुचि लेते हैं। अतः किसी चित्र को दिखाकर बच्चों से चित्र वर्णन करने का अभ्यास कराना चाहिए; जैसे– बच्चे को शेर तथा बकरी का चित्र दिखाकर उन जानवरों के बारे में पूछ सकते हैं, चित्र को दिखाकर कहानी सुना सकते हैं। यह विधि बहुत ही प्रभावी होती है।

4. **अभिनय–** अभिनय के अंतर्गत शिक्षक पाठ में आए एकांकी एवं कहानियों का अभिनय करवा सकते हैं। इससे बच्चों को पाठ अच्छे से याद हो जाएगा तथा एकांकी का अभिनय करने से उनका भाषा संबंधी उच्चारण शुद्ध होगा और संकोच की प्रवृत्ति दूर होगी।
5. **कहानी कथन विधि–** कहानी सुनना बच्चों को बहुत प्रिय होता है। अतः प्रशिक्षु शिक्षक पहले स्वयं बच्चों को हाव–भाव के साथ कहानी सुनाएँ तथा फिर बारी–बारी से बच्चों से कहानी सुने। इससे सभी बच्चों को बोलने का अवसर मिलेगा तथा बच्चों में श्रवण–कौशल एवं मौखिक अभिव्यक्ति–कौशल दोनों के विकास में सहायता मिलेगी।
6. **अंत्याक्षरी–** प्रायः बच्चों को कविता में बहुत रुचि होती है और उनको गाना सुनना और गीत गाना बहुत प्रिय होता है। शिक्षक को चाहिए कि सप्ताह में एक दिन अंत्याक्षरी प्रतियोगिता अवश्य करावाएँ। इससे बच्चों में मौखिक अभिव्यक्ति का विकास होगा तथा शिक्षक एवं बच्चों के संबंधों में भी आत्मीयता आएगी।
7. **सामूहिक वाचन–** कुछ बच्चे बहुत संकोची प्रवृत्ति के होते हैं। वे अकेले बोलना नहीं पसंद करते। ऐसे बच्चों को सामूहिक वाचन की गतिविधियाँ कराई जा सकती हैं; जैसे– प्रार्थना या सांस्कृतिक कार्यक्रमों में ऐसे बच्चों को प्रतिभाग कराकर उनकी मौखिक अभिव्यक्ति का विकास किया जा सकता है।
8. **समूह चर्चा–** समूह चर्चा उच्च प्राथमिक कक्षाओं के लिए उपयुक्त रहती है। जैसे बच्चों को ग्रुप में बाँटकर कुछ विषय दें तथा उस पर चर्चा करवाएँ। इसमें बच्चों को चर्चा के लिए तैयार किया जाता है। इसमें एक प्रकार से विचार–विमर्श होता है। इसमें बच्चों में अपनी बातों को प्रभावी ढंग से रखने की क्षमता का विकास होता है। बच्चे इस योग्य बन जाते हैं कि वे अपनी कही हुई बात की सार्थकता सिद्ध कर सकें।
9. **प्रश्नोत्तर विधि–** इस विधि से शिक्षक पाठ पढ़ाने के उपरांत छोटे–छोटे प्रश्नों को पूछ कर आसानी से पता लगा सकते हैं कि बच्चों को पाठ कितना समझ में आया । यह विधि बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।
10. **भाषण–** भाषण मौखिक अभिव्यक्ति को विकसित करने का उपयुक्त साधन है। शिक्षक को चाहिए कि बच्चों को उनकी रुचि व ज्ञान के आधार पर उपयुक्त शीर्षक पर भाषण देने का अवसर दें।
11. **बालसभा एवं बाल संसद –** मौखिक अभिव्यक्ति को विकसित करने के लिए यह एक प्रभावी कार्यक्रम है। शिक्षकों के द्वारा विद्यालय में बाल संसद का गठन करवाएँ ताकि उससे बच्चे केवल कुशल वक्ता या श्रोता ही नहीं बने अपितु उनमें स्वस्थ संसदीय प्रवृत्ति का भी विकास होता है।

4.2.3 मौखिक अभिव्यक्ति की उपयोगिता

बच्चों के विकास की दृष्टि से मौखिक अभिव्यक्ति प्रारंभ से अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही है। भाषा शास्त्री इस विचार से पूर्ण सहमत हैं कि पहली कक्षा के प्रथम छह मास तक पठन एवं लेखन कार्य प्रारंभ ही नहीं किया जाना चाहिए। इस समय बच्चे को केवल संभाषण ही सिखाना चाहिए। 'ज्ञात से अज्ञात की ओर' शिक्षण–सूत्र इस तथ्य का प्रमाण है कि मौखिक कार्य ही भाषा शिक्षण का आधार हो क्योंकि यह भाषा की नींव तैयार करता है। मौखिक भाषा की निम्नलिखित उपयोगिता है–

1. भाषा का उद्गम मौखिक रूप में ही हुआ है बच्चा अनुकरण द्वारा मौखिक बात सुनकर बोलना सीखता है।
2. मौखिक अभिव्यक्ति से ही बच्चे और शिक्षक अपने विचारों को व्यक्त करते हैं।

3. मौखिक अभिव्यक्ति ही भाषा में निपुणता बढ़ाती है; जिससे बच्चे आगे चलकर अच्छे वक्ता बनते हैं।
4. मौखिक अभिव्यक्ति से बच्चा प्रभावी ढंग से सुनकर और बोलकर समाज के अन्य सदस्यों के साथ निकटतम संबंध स्थापित करता है। प्रभावपूर्ण वक्ता संकोची स्वभाव के व्यक्ति की अपेक्षा समाज में अति शीघ्र संपर्क स्थापित कर लेता है।

इन्हीं उपयोगिता की वजह से प्राथमिक स्तर पर लिखित अभिव्यक्ति की अपेक्षा मौखिक कार्य/अभिव्यक्ति पर अधिक बल दिया जाता है और शिक्षक अपने शिक्षण द्वारा सुनने और बोलने के कौशलों का विकास करता है।

मौखिक अभिव्यक्ति का महत्त्व जीवन में सबसे अधिक है। छोटी कक्षाओं में सामान्य बातचीत द्वारा मौखिक अभिव्यक्ति के विकास का प्रयास करें तथा मौखिक कौशल के विकास के लिए उच्च प्राथमिक कक्षाओं में औपचारिक बातचीत के साथ–साथ कहानी, कथन ,घटना, चित्र, वर्णन, भाषण, विनय, काव्य–पाठ जैसे क्रियाकलापों का आयोजन अपने शिक्षण के दौरान अवश्य करें। कुछ गतिविधियाँ नीचे दी जा रही हैं जो आपको कक्षा–शिक्षण में सहायक होगी।

गतिविधि–1

गतिविधि का नाम : खेलें खेल–कहानी।

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : संबंधित कहानी के फ्लैश कार्ड

उद्देश्य– विषयवस्तु की विस्तृत समझ विकसित करना।

❖ कक्षा के कुछ बच्चों में तो अभिनय की विशेष प्रतिभा होती है। जब प्रशिक्षु कक्षा मे जाएँ तो कोई भी कहानी लें। जैसे– प्यासा कौआ, बोलती गुफा। उनके पाठ्य–पुस्तक से फ्लैश कार्ड पर कहानी के पात्रों को बना लें। कुछ बच्चों को पात्र वाले कार्ड बाँट देंगे और पाठ्यपुस्तक से उन पात्रों द्वारा बोले गए अंशों को तैयार करवा देंगे।

❖ फिर बच्चे बारी–बारी से अपने अभिनय करेंगे। इससे पाठ भी आसानी से ग्राहय हो जाएगा तथा मौखिक अभिव्यक्ति का विकास भी बच्चों में होगा। अभिनय से उनके अंदर आत्म विश्वास भी बढ़ेगा।

गतिविधि–2

गतिविधि का नाम : दृश्य वर्णन।

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : प्राकृतिक वातावरण का चित्र

उद्देश्य– विषयवस्तु की विस्तृत समझ विकसित करना।

❖ प्रशिक्षक प्राकृतिक वातावरण के दृश्य का एक पोस्टर बना लें और सामने दीवार पर लगा दें। फिर प्रशिक्षुओं से उन प्राकृतिक दृश्यों के बारे में प्रश्न पूछें; जैसे–

1. इस चित्र में आपको क्या क्या दिखाई दे रहा है?
2. पर्वत से संबंधित कोई कविता सुनाइए।
3. सूर्य को और किन नामों से जानते हैं?
4. चिड़िया उड़कर कहाँ–कहाँ जाती है?
5. पानी नीला क्यों दिखाई दे रहा है?

4.3 लिखित अभिव्यक्ति

मानव अपने भाव, विचार तथा अनुभवों को अभिव्यक्त करने के लिए जो समाज सम्मत, ध्वन्यात्मक संकेत साधनों का प्रयोग करता है, उसे मौखिक भाषा कहते हैं। जब इस भाषा को लिपि के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाता है तो उसे **लिखित भाषा** कहते हैं।

दूसरे शब्दों में–

"भाषा की ध्वनियों को लिपिबद्ध करना ही लिखना है तथा इस लेखन के माध्यम से अपने भावों और विचारों को व्यक्त करना ही लिखित अभिव्यक्ति है।"

लिखित अभिव्यक्ति किसी लिपि के माध्यम से की जाती हैं। जिस प्रकार मौखिक अभिव्यक्ति में कथन भंगिमा उसकी प्रभावशीलता में वृद्धि करती है। ठीक उसी प्रकार लिखित अभिव्यक्ति में लेखन–शैली प्रभाव उत्पन्न करने में विशेष भूमिका का निर्वहन करती है। लिखित अभिव्यक्ति की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

- सुपाठ्यता
- सुस्पष्टता
- दोषरहित वर्तनी
- वाक्य–रचना
- विराम–चिह्न
- अनुच्छेदवार लेखन
- क्रमबद्धता
- सामाजिक–शिष्टाचार
- शब्द चयन
- प्रस्तुति की मौलिकता

4.3.1 लिखित अभिव्यक्ति के साधन

लिखित अभिव्यक्ति के अनेक साधन हैं; जैसे–

- पत्र लेखन
- निबंध लेखन
- नाट्य लेखन
- कविता लेखन
- कहानी लेखन
- घटना/प्रसंग/अनुभव/दृश्य–वर्णन
- सोशल मीडिया इत्यादि

उपर्युक्त गतिविधियाँ बच्चों में लेखन कौशल का विकास करती हैं।

गतिविधियाँ

गतिविधि–1

गतिविधि का नाम : देखें और लिखें।

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : चित्र

उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

❖ चित्र को देखकर पाँच वाक्य लिखिए–

गतिविधि–2

गतिविधि का नाम : आपका अनुभव।

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : चित्र

उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

- ❖ प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं के समक्ष कुछ परिस्थितियाँ रखेंगे और उनसे कहेंगे कि वे अपनी कल्पना के आधार पर उनसे संबंधित कुछ वाक्य बोलें और लिखें। बच्चों के समक्ष कुछ ऐसी परिस्थितियाँ रखी जा सकती हैं–

1. यदि आप अपने स्कूल के हेडमास्टर होते तो .... ।
2. यदि आपके पास भी पंख होते तो.. ।
3. यदि आप अपनी कक्षा के मॉनीटर होते तो.. ।
4. यदि आप अपने गाँव के प्रधान होते तो.. ।

गतिविधि–3

गतिविधि का नाम : शब्द पढ़कर वाक्य बनाइए।

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : शब्द कार्ड

उद्देश्य– विषयवस्तु की विस्तृत समझ विकसित करना।

- ❖ प्रशिक्षु बच्चों को कुछ शब्द देंगे और उन शब्दों को लेकर वाक्य बनाने के लिए कहेंगे। जैसे– मान लीजिए आप कक्षा–3, और कक्षा–4 के बच्चों को पढ़ाने गए हैं। आप उनके स्तर के अनुसार पहले से ही शब्द कार्ड बनाकर रख लेंगे।
- ❖ जैसे– किसी कार्ड पर माँ, पापा, बहन, सेब, डॉक्टर, पुलिस, गुलाब आदि। अब बच्चों को इन शब्दों से वाक्य बना कर अपनी कॉपी में लिखने को कहेंगे। जैसे–

1. मेरी माँ का नाम सीता है।
2. मेरे पिताजी मुम्बई गये हैं।
3. मेरी बहन मुझे प्यार करती है।
4. सेब बहुत मीठा फल है।

नोट– उपर्युक्त गतिविधियों में से समयानुसार तीनों या कम से कम एक गतिविधि करवाएँ।

बोध प्रश्न

1. मौखिक अभिव्यक्ति से आप क्या समझते हैं?
2. मौखिक अभिव्यक्ति के विकास हेतु आप पाँच साधनों के बारे में बताइए।
3. स्वतंत्र अभिव्यक्ति से आप क्या समझते हैं? यह कितने प्रकार का होता है? वर्णन करें।
4. पत्र लेखन, वाद–विवाद किस तरह की अभिव्यक्ति है? संक्षेप में लिखिए।
5. मौखिक अभिव्यक्ति के विकास हेतु दो गतिविधियाँ बताइए।
6. लिखित अभिव्यक्ति के लिए दो कार्यपत्रक का निर्माण कीजिए।
7. एक शिक्षक को कक्षा में किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए, जिससे बच्चों में मौखिक अभिव्यक्ति का विकास हो सके। व्याख्या कीजिए।

समेकन

स्वतंत्र अभिव्यक्ति के माध्यम से लेखन में प्रभावशीलता उत्पन्न होती है। सामान्य रूप से देखा जाता है कि जहाँ लेखन कार्य नियंत्रित एवं प्रतिबंधित रूप में होता है तो वहाँ बच्चा, शिक्षक एवं पुस्तक का अनुकरण करता है परंतु जब उसे स्वतंत्रता प्रदान की जाती है तो इसकी संभावना बढ़ जाती है कि उसके लिखित विचारों/भावों/वर्णनों/रचनाओं में मौलिकता होगी। इस प्रकार स्वतंत्र अभिव्यक्ति में बच्चों का लेखन कार्य प्रभावी और मौलिक होता है।

प्रशिक्षु जब कक्षा–कक्ष में शिक्षण करने जाएँगे तो बच्चों के मौखिक अभिव्यक्ति विकास हेतु उनसे सरल और सहज चर्चा करेंगे जिससे उनकी झिझक दूर होगी और वे निर्भय और उत्साहित होकर चर्चा/प्रश्नोत्तर में प्रतिभाग करेंगे। उनके सीखनें में गति आएगी।

इकाई 5

स्तरानुकूल गद्य एवं पद्य में शब्दों, वाक्यांशों, विराम-चिह्नों तथा समान ध्वनियों को समझना

5.1 विराम चिह्नों के नाम संकेत एवं उदाहरण
5.2 तुक/तुकांत

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु गद्य एवं पद्य के शब्दों, वाक्यांशों, विरामचिह्नों एवं समान ध्वनियों को उचित आरोह–अवरोह के साथ पढ़ लेते हैं।
2. प्रशिक्षु हिन्दी पाठ्य–पुस्तक में संकलित कविताओं, कहानियों को रुचि के साथ पढ़ लेते हैं।
3. प्रशिक्षु पद्य में तुकांत, लय एवं तुक को समझ लेते हैं तथा पठित अंश में आए तुकांत शब्दों को ढूँढ कर पढ़ लेते हैं।
4. प्रशिक्षु गद्य एवं पद्य में अंतर कर लेते हैं।
5. प्रशिक्षु, बच्चों में शब्दों वाक्यांशों, विराम चिह्नों एवं समान ध्वनियों को समझने की क्षमता विकसित कर लेते हैं।

मानव का जन्म से ही ध्वनियों से गहरा नाता है। बच्चा जन्म लेते ही रोना शुरु करता है और लोग उसे चुप कराने के लिए पुचकारते हैं। यहीं से मानव के जीवन में ध्वनियों का समावेश हो जाता है। जैसे–जैसे बच्चा बड़ा होता जाता है, वह अनेक ध्वनियों से परिचित होता जाता है। शिक्षा के शुरुआती चरण में ध्वनियों का व्यवस्थित रूपांतर 'वर्णों' में होता जाता है। अब बच्चा वर्णों और 'वर्णमाला' के विषय में सीखता है। इसके बाद 'शब्द' निर्माण की प्रक्रिया शुरू होती है। फिर बच्चा क्रमशः कुछ वाक्यांशों और वाक्यों को बनाना सीखता है। वाक्य निर्माण की प्रक्रिया में वह विराम चिह्नों आदि से परिचित होता है। इसके बाद वह गद्यांश और पद्यांश के सही भाव को समझने की ओर प्रवृत्त होता है।

प्रशिक्षकों हेतु निर्देश

1. प्रशिक्षु की भाषा सरल एवं मधुर हो।
2. शब्दों का उच्चारण शुद्ध हो।
3. शब्दों एवं वाक्यों में विराम–चिह्नों का विशेष ध्यान रखा जाए।
4. ध्वनियों, वाक्यों का उच्चारण करते समय वाचन–तारतम्यता का विशेष ध्यान रखा जाए।

प्रशिक्षुओं हेतु निर्देश

बच्चों का मन–मस्तिष्क अत्यंत कोमल एवं भावुक होता है। उन पर किसी बात का प्रभाव बड़ी शीघ्रता से पड़ता है, इसलिए यह ध्यान देना होगा कि जब प्रशिक्षु बच्चों में गद्य एवं पद्य ध्वनियों, शब्दों, वाक्यों, वाक्यांशों, समानार्थी शब्दों आदि की समझ विकसित कर रहे हों तो निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना अति आवश्यक है–

1. बच्चों को उनके परिवेश से जोड़ते हुए विषय की चर्चा करेंगे।
2. बच्चों के साथ परस्पर आत्मीय संबंध बनाएँ।
3. बच्चों को अभिव्यक्ति का पूरा अवसर दें।

4. बच्चों के साथ, 'आओ! मिलकर करें', पद्धति पर शिक्षण कार्य करेंगे।
5. सस्वर वाचन/आदर्श वाचन एवं ध्वनियों का उच्चारण स्पष्ट हो।
6. बच्चों को ध्वनियों के स्पष्ट उच्चारण हेतु उच्चारण स्थान की जानकारी का अभ्यास कराया जाएगा। जैसे–

   क, ख, ग, घ, ङ. – कंठ्य
   त, थ, द, ध, न – दंत्य

7. वाचन में विराम–चिह्नों का विशेष ध्यान दिया जाएगा।
8. गद्य एवं पद्य के उच्चारण के समय आए लय, तुक, आरोह एवं अवरोह का ध्यान रखा जाए तथा उनका अनुकरण वाचन कराया जाएगा।

गतिविधि

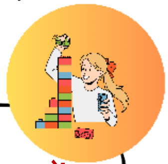

गतिविधि का नाम : आइए चिह्नों को पहचानें।

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : चार्ट पर लिखी कविता।

उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

हुआ सवेरा
अंधकार को दूर भगाया,
हुआ सवेरा, सूरज आया!
चिड़िया 'चीं–चीं' चहक लगाती।
कोयल मीठा गान सुनाती।
सात रंग की तितली रानी,
डाली–डाली झूमती जाती।
आलस हमने दूर भगाया,
फुर्ती में जग सारा आया।
खिली धूप ने जग नहलाया,
हुआ सवेरा, सूरज आया !

चार्ट पर लिखी गयी कविता शिक्षक/प्रशिक्षु प्रदर्शित करेंगे और बच्चों को पढ़ाते हुए पूछेंगे–

प्रशिक्षक– इसमें कौन–कौन सा विराम–चिह्न, कहाँ–कहाँ लगा है?
प्रशिक्षु– ....(संभावित उत्तर)।
प्रशिक्षक– बच्चों! पद्यांश में आए तुकांत, समान ध्वनियों वाले शब्दों को पहचानिए।
प्रशिक्षु– ....(संभावित उत्तर)।
प्रशिक्षक– बच्चों! आज हम गद्य–पद्य में आए शब्दों, वाक्यांशों, विराम–चिह्नों, एवं समान ध्वनियों का अध्ययन करेंगे।

प्रस्तुतीकरण

इस संसार में ध्वनि की सत्ता निर्विवाद है। पक्षियों का कलरव, झरनों एवं नदियों की कल–कल, सूखे पत्तों पर चलने की खड़खड़ाहट आदि जीवन में प्रयुक्त होने वाली घटनाओं एवं क्रियाओं में हम ध्वनियों के प्रयोग को स्पष्ट सुनते एवं समझते हैं। ध्वनियों से वर्णविन्यास, वर्ण से शब्द, शब्दों के समूह के एक व्यवस्थित क्रम में प्रयोग से वाक्य का निर्माण होता है। प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के पाठों में गद्य को समझने के लिए बच्चों को शब्दों का अर्थ, वाक्य में जहाँ–जहाँ रुकने की आवश्यकता है उन स्थलों पर प्रयुक्त विराम–चिह्नों की पहचान होना अत्यंत आवश्यक है,

वहीं पद्य को समझने के लिए उसका वाचन करते समय कहाँ रुकना है, कहाँ बिना रुके वाचन करना है, कहाँ वाचन समाप्त करना है, कहाँ शब्दों पर बल देना है और कहाँ तुकांत अर्थात् समान ध्वनियों वाले शब्दों से काव्य पंक्ति का तुक मिलाना आदि को ध्यान में रखना होता है। इस प्रकार तुक एवं विराम–चिह्नों का ज्ञान बच्चों में होना चाहिए।

प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के गद्य–पद्य में निहित शब्दों, वाक्यांशों, विराम–चिह्नों एवं तुक के ज्ञान के माध्यम से ही गद्यांश एवं पद्यांश के अर्थ स्पष्टीकरण में बच्चे सक्षम हो सकते हैं। अतः उपर्युक्त विषयों का भाषागत ज्ञान बच्चों के लिए आवश्यक है।

भाषा ध्वनि संकेतों के परंपरागत और रूढ़–दोनों रूपों में प्रयुक्त होती है। हम भाषा के सार्थक ध्वनि–संकेतों से विचारों का आदान–प्रदान करते हैं। भाषा के यह सार्थक ध्वनि–संकेत समाज के संचालन के साथ–साथ उनके विचार–विनिमय में सहायक होते हैं। ध्वनि–संकेत या वर्ण मिलकर सार्थक शब्द का निर्माण करते हैं। शब्दों से वाक्य का निर्माण होता है।

गद्य अथवा पद्य में काव्य पंक्तियों के अंतर्गत कुछ चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। इन चिह्नों का प्रयोग वाक्य में रुकने अथवा ठहरने के लिए किया जाता है।

'विराम' का अर्थ होता है–**'रुकना' अर्थात् वे शब्द जो बोलते और पढ़ते समय रुकने का संकेत देते हैं; विराम–चिह्न कहलाते हैं।**

विराम–चिह्नों के द्वारा निम्नलिखित कार्य संपन्न होते हैं–

1. वाक्य के अर्थ को स्पष्ट करने के साथ–साथ भाषा को सुंदरता प्रदान करते हैं।
2. भावों का सम्यक् बोध कराते हैं।
3. अभिव्यक्ति को व्यवस्थित करके सुसंबद्ध रूप में प्रस्तुत करते हैं।
4. भाषा शिल्प सौंदर्य से युक्त हो जाती हैं।
5. विराम–चिह्न अर्थ का अनर्थ होने से बचाते हैं।
6. रस–बोध में वृद्धि करते हैं।
7. अर्थगत अनुशासन को बनाए रखते हैं।
8. वाक्य के पठन की गति–यति, आरोह–अवरोह व लय का निर्धारण करते हैं।

विराम–चिह्न का प्रयोग अभीप्सित स्थान पर न होने से अर्थ एकदम से बदल जाते हैं, यथा–

रोको, मत जाने दो।
रोको मत, जाने दो।

पढ़ो, मत घूमो।
पढ़ो मत, घूमो।

आधुनिक हिन्दी भाषा में निम्नलिखित विराम–चिह्नों का प्रयोग होता है–

1. **अल्प विराम (,)–** इसका अर्थ है– 'थोड़ी देर के लिए रुकना'।
   उदाहरण–रमेश, मोहन, सोहन और राजेश स्कूल जाते हैं। रमेश, मोहन, सोहन आदि संज्ञाओं के बाद 'अल्प विराम' लगा होने का तात्पर्य है– इन संज्ञाओं को पढ़ते समय थोड़ा ठहरना है।

2. **अर्द्ध विराम (;)–** अल्प विराम (,) से कुछ अधिक और पूर्ण विराम (।) से कुछ कम रुकने की स्थिति में अर्द्धविराम (;) चिह्न का प्रयोग किया जाता है।
   उदाहरण– आपको जो अच्छा लगे, करें; बस अपने काम से काम रखें।

3. **अपूर्ण विराम (:)**– अर्द्ध विराम की अपेक्षा अधिक और पूर्ण विराम से कम रुकना पड़े तो अपूर्ण विराम (:) का प्रयोग किया जाता है; जैसे– साकेत : एक अध्ययन।
4. **पूर्ण विराम (।)**– प्रश्नवाचक और विस्मयादिबोधक वाक्यों को छोड़कर वाक्य के अंत में पूर्ण विराम (।) लगाया जाता है। जैसे– राम घर जाता है।
5. **प्रश्नवाचक चिह्न (?)**– जब वाक्य के द्वारा प्रश्न किया गया हो, वहाँ वाक्य के अंत में प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे– तुम क्या कर रहे हो?
6. **विस्मयादिबोधक चिह्न (!)**– हर्ष, उल्लास, आश्चर्य, व्यंग्य, करुणा आदि भावों की अभिव्यक्ति के समय विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे– हाय राम! यह क्या हो गया।
7. **योजक चिह्न (–)**– दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाने वाला चिह्न होने के कारण इसे योजक कहते हैं; जैसे– रात–दिन परिश्रम करके मैंने परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया।
8. **उद्धरण चिह्न (' ', " ")**– उद्धरण चिह्न के दो प्रकार हैं– इकहरा (' ') एवं दुहरा (" ")। जहाँ किसी पुस्तक का कोई वाक्य या अवतरण ज्यों–का–त्यों उद्घृत किया जाए, वहाँ दोहरा उद्धरण चिह्न (" ") का प्रयोग किया जाता है; वहीं पुस्तक, समाचार पत्र, लेखक का उपनाम, लेख का शीर्षक इत्यादि उद्घृत करते समय इकहरे उद्धरण चिह्न (' ') का प्रयोग किया जाता है; जैसे– गांधी जी ने कहा, "करो या मरो।"
   'कामायनी', 'रामचरितमानस', सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' आदि।

5.1 विराम चिह्नों के नाम, संकेत एवं उदाहरण

क्र० सं०	विराम चिह्नों के नाम	चिह्नों के संकेत	उदाहरण
1	अल्प विराम	,	वह दूर से, बहुत दूर से आया था।
2	अर्द्ध विराम	;	फलों में आम को सर्वश्रेष्ठ फल माना गया है; किन्तु श्रीनगर में और ही किस्म के फल विशेष रूप से पैदा होते हैं।
3	अपूर्ण विराम	:	उसने कहा: आओ ।
4	पूर्ण विराम	।	वह घर आ रहा है।
5	प्रश्न चिह्न	?	आप कौन हैं? तोता परेशान होकर बोला–अब क्या करें?
6	विस्मयादिबोधक चिह्न	!	हे भगवान! ऐसा कैसे हो गया।
7	योजक चिह्न एवं दुहरा चिह्न	–	मैना ने पूछा–भाई, मुझे बड़ी जोर की प्यास लगी है। माता–पिता जय–पराजय लाभ–हानि राष्ट्र–भक्ति
8	उद्धरण चिह्न	' '	'तुलसीकृत रामचरितमानस' एक अनुपम कृति है।
9	विवरण चिह्न	:–	पुरुषार्थ चार हैं:– धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष।
10	निर्देश चिह्न	–	महेश– तुम यहाँ कब आए?
11	कोष्ठक चिह्न	( )	आपकी सामर्थ्य (शक्ति) हर कोई जानता है।
12	इकहरा अवतरण चिह्न	' '	महर्षि वाल्मीकि ने 'रामायण' की रचना की।
13	दोहरा अवतरण	" "	कृष्ण– "मैं गाय चराने जाऊँगा।"

5.2 तुक/तुकांत

जहाँ गद्य के पठन में विराम–चिह्नों का अत्यंत महत्त्व है, वहीं पद्य में विराम–चिह्नों के साथ तुक अथवा तुकांत का ज्ञान बच्चों के लिए आवश्यक है। जब किसी कविता का पाठ किया जाता है तो पहले आदर्श पाठ फिर उसके बाद सस्वर पाठ कराया जाना चाहिए। कठिन शब्दों का अर्थ स्पष्ट करने के बाद काव्य पंक्ति में विराम चिह्न लगे स्थानों पर रुकने का अभ्यास बच्चों को कराना चाहिए। उसके बाद बताना होगा कि काव्य पंक्तियों के अंत में ध्वनियों के समान होने पर तुक मिलता है। कविता को लोकप्रिय बनाने और उसके प्रभाव को बढ़ाने में तुक का विशेष योगदान होता है। तुक को 'अन्त्यानुप्रास' भी कहते हैं। वर्णों की आवृत्ति जब वर्णसाम्य के रूप में कविता की पंक्ति अथवा चरण के अंत में होती है तब वह तुक कहलाती है; जैसे–

'उठो लाल अब आँखे खोलो,
पानी लायी हूँ मुँह धो लो।
बीती रात कमल–दल फूले
उनके ऊपर भौंरे झूले।''
चिड़ियाँ चहक उठी पेड़ो पर
बहने लगी हवा अति सुंदर।

माँ कह एक कहानी,
राजा था या रानी,
माँ कह एक कहानी।'
तू है हठी मानधन मेरे,
सुन उपवन में बड़े सवेरे।
तात भ्रमण करते थे तेरे
जहाँ सुरभि मनमानी।'

पहली कविता में खोलो–धो लो, फूले–झूले, पर–सुंदर इसी प्रकार दूसरी कविता में कहानी, रानी, मेरे, सवेरे आदि शब्दों के पंक्ति के अंत में प्रयुक्त होने के कारण इन्हें तुकांत भी कहते हैं।

इस प्रकार गद्य पठन एवं वाचन में विराम–चिह्नों के प्रयोग से प्रभावशीलता रोचकता तथा पद्य के पठन एवं वाचन में विराम–चिह्नों के साथ–साथ तुक से कविता के सौंदर्य एवं आस्वादन में वृद्धि होती है।

गतिविधि

गतिविधि का नाम : पहचानो और लिखो।

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : परिषदीय प्राथमिक अथवा उच्च प्राथमिक की हिन्दी की पाठ्य पुस्तकें।

उद्देश्य– विषयवस्तु की विस्तृत समझ विकसित करना।

❖ प्रशिक्षु, कक्षा में बच्चों को परिषदीय पाठ्यपुस्तक की कहानी 'प्यासी मैना' का एक गद्यांश देकर उनसे शब्दों और विराम–चिह्नों को पहचान कर लिखने के लिए कहेंगे–

गौरैया ने कहा– ''आओ! मेरे साथ।''

सभी उड़ते हुए एक मकान के आँगन में पहुँचे। आँगन में बहुत से गमलों में रंग–बिरंगे फूल खिले थे। आसपास बहुत से हरे–भरे पौधे भी उगे हुए थे। पौधों की छाया में बड़ा सा मिट्टी का कुंडा पानी से भरा हुआ रखा था।

तोता उत्साह से बोला– "अरे देखो! उस कुंडे में पानी है। वहाँ हुदहुद पानी पी रहा है।"

कबूतर ने कहा– '"अरे वाह! वहाँ तो एक गिलहरी भी है।"

निर्देश– शिक्षक कक्षा को दो समूहों में बाँट देंगे जिसमें एक समूह अपनी पर्ची पर विराम–चिह्नों का नाम जैसे– अल्पविराम, पूर्णविराम, उद्धरण–चिह्न तथा दूसरा समूह अपनी पर्ची पर समान ध्वनि वाले शब्द, जैसे– हरे–भरे एवं रंग–बिरंगे लिखेगा।

बोध परीक्षण

1. गद्य किसे कहते हैं?
2. पद्य किसे कहते हैं?
3. गद्य एवं पद्य में क्या अंतर है?
4. लय एवं तुक किसे कहते हैं?
5. तुकांत किसे कहते हैं?
6. विराम चिह्न किसे कहते हैं?
7. योजक चिह्न कहाँ लगाया जाता है?

समेकन

प्रशिक्षुओं के पूर्व ज्ञान का उपयोग करते हुए गद्य एवं पद्य के अंतर को स्पष्ट कराया गया। लय एवं तुकांतता जहाँ कविता के सौंदर्य में वृद्धि करते हैं वहीं विचारों के अजस्र प्रवाह गद्य को समृद्ध करतें हैं। गद्य एवं पद्य में प्रयुक्त होने वाले विराम चिह्नों से भाषा की सुंदरता तथा स्पष्टता में वृद्धि होती है। गद्य और पद्य का सर्जन देश–काल एवं वातावरण के प्रभाव से निर्मित होता है। जिस देश एवं काल की रचना होती है,उसमें उस समय की प्रवृत्तियाँ समाहित रहती हैं।

स्व–आकलन

1. किस विकल्प में विराम चिह्नों का सही प्रयोग हुआ है––
   (क)''जीवन विश्व की संपत्ति है'' –प्रसाद
   (ख)''जीवन, विश्व की संपत्ति है'' –प्रसाद
   (ग) जीवन विश्व की, संपत्ति है? –प्रसाद
   (घ) जीवन विश्व की संपत्ति है! –प्रसाद
2. मौखिक अभिव्यक्ति में नहीं आता है–
   (क) वार्तालाप (ख) भाषण
   (ग) वाद–विवाद (घ) कविता लेखन।
3. पूर्ण विराम का प्रयोग किया जाता है–
   (क) वाक्य के आरंभ में (ख) वाक्य के मध्य में
   (ग) वाक्य के अंत में (घ) रेखा के रूप में।
4. वाचन के प्रकार हैं–
   (क) सस्वर वाचन (ख) मौन वाचन
   (ग) 'क' तथा 'ख' दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं।
5. बच्चों को कहानी सुनाते समय बीच–बीच में उनकी कल्पनाशीलता को जागृत करने के लिए प्रश्न करना चाहिए–
   (क) वर्णनात्मक प्रश्न (ख) विकासात्मक प्रश्न
   (ग) व्याख्यात्मक प्रश्न (घ) विश्लेषणात्मक प्रश्न।
6. गद्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है–
   (क) कहानी (ख) उपन्यास
   (ग) निबंध (द) इनमें से सभी।

7. आरंभिक अवस्था के बच्चों में कहानी शिक्षण की सर्वाधिक उपयुक्त विधि है–
   (क) भाषण विधि (ख) वार्तालाप
   (ग) प्रश्नोत्तर विधि (घ) कहानी कथन विधि।
8. उच्चारण शिक्षण का उपयुक्त अवसर है–
   (क) प्राथमिक स्तर (ख) माध्यमिक स्तर
   (ग) स्नातक स्तर (घ) तीनों।

विचार विश्लेषण

1. गद्य एवं पद्य में अंतर स्पष्ट कीजिए।
2. काव्य को कितने भागों में बाँटा गया हैं?
3. शब्दों के कितने भेद होते हैं?
4. एक अच्छी कहानी की क्या विशेषताएँ होती हैं?

प्रोजेक्ट कार्य

1. विराम चिह्नों के प्रयोग पर एक मॉडल का निर्माण कीजिए।

इकाई 6
उपसर्ग, प्रत्यय एवं सामासिक पदों की पहचान तथा प्रयोग

6.1 उपसर्ग : संस्कृत, हिंदी एवं उर्दू के उपसर्ग
6.2 दो उपसर्गों से निर्मित शब्द
6.3 प्रत्यय : संस्कृत, हिंदी एवं उर्दू के प्रत्यय
6.4 उपसर्ग और प्रत्यय में अंतर
6.5 समास एवं इसके भेद

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु, उपसर्ग की परिभाषा बता लेते हैं।
2. प्रशिक्षु, उपसर्ग का प्रयोग करके नए शब्दों का निर्माण कर लेते हैं।
3. प्रशिक्षु, शब्दों का विच्छेद करके उपसर्ग एवं मूल शब्द के अर्थ बता लेते हैं।
4. प्रशिक्षु, गद्य एवं पद्य में उपसर्ग से बने शब्दों को पहचान कर अलग कर लेते हैं।
5. प्रशिक्षु, बच्चों को उपसर्ग के पहचान, प्रयोग एवं विभेदीकरण में सक्षम बना लेते हैं।

भाषा भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। भाषा की थाती शब्द भंडार है। शब्द एवं वाक्य के निर्माण में जिन महत्त्वपूर्ण तत्त्वों का प्रयोग किया जाता है उनमें उपसर्गों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उपसर्ग, भाषा के वे छोटे सार्थक खंड हैं; जो किसी शब्द के आरंभ में जुड़कर नए शब्द का निर्माण करते हैं तथा शब्दों के अर्थ में व्यापक बदलाव करते हैं।

उपसर्गों के प्रयोग से मूल शब्द के अर्थ में चमत्कारिक बदलाव देखने को मिलते हैं। हिन्दी भाषा के शब्द भंडार की वृद्धि में उपसर्गों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

प्रशिक्षकों हेतु निर्देश

1. प्रशिक्षक को कक्षा में जाने से पूर्व, प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा (कार्य–योजना) तैयार कर लेनी चाहिए।
2. विषय–वस्तु से संबंधित संभावित प्रश्नों का समाधान कर लेना चाहिए।
3. पाठ योजना के अनुसार शिक्षण सामग्री एवं सहायक शिक्षण सामग्री का संयोजन कर लेना चाहिए।
4. प्रशिक्षण–सामग्री में तकनीकी उपागमों का प्रयोग सीख लेनी चाहिए।
5. पाठ–योजना के अनुसार, उपयुक्त ऑडियो, वीडियो का चयन कर लेना चाहिए।
6. प्रशिक्षण–सामग्री से संबंधित गतिविधियों का चयन कर लेना चाहिए।

प्रशिक्षुओं हेतु निर्देश

1. पाठ्य सामग्री से संबंधित पूर्व ज्ञान की आवश्यकतानुसार चर्चा करें।
2. आवश्यकतानुसार शिक्षण–सामग्रियों पेन, पेंसिल और नोटबुक के साथ कक्षा कक्ष में बैठेंगे।

''विवेकानंद ने विदेश में जाकर भारतीय संस्कृति का प्रचार प्रसार किया''। इस वाक्य में देश मूल शब्द है जिसका अर्थ अपने देश से होता है। मूल शब्द देश में **वि** उपसर्ग लगने पर विदेश शब्द बनता है। जिसका अर्थ दूसरे देश से होता है। जैसे अमेरिका, ब्रिटेन, चीन। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि शब्दों में उपसर्ग लगने से उसके अर्थ में परिवर्तन होता है।

6.1 उपसर्ग

गतिविधि

गतिविधि का नाम : आओ शब्द बनाएँ।

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : शब्द कार्ड, उपसर्ग कार्ड।

उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

❖ प्रशिक्षु, कक्षा में बच्चों को परिषदीय पाठ्यपुस्तक की कहानी 'प्यासी मैना' का एक गद्यांश देकर उनसे शब्दों और विराम–चिह्नों को पहचान कर लिखने के लिए कहेंगे–

प्रशिक्षक कक्षा को दो समूहों में बाँट देंगे और एक समूह में शब्द कार्ड तथा दूसरे समूह में उपसर्ग कार्ड बाँट देंगे। अब पहला समूह उपसर्ग–कार्ड से कोई एक उपसर्ग बोलेगा और दूसरा समूह शब्द–कार्डों में से उस उपसर्ग से मेल खाता हुआ कोई शब्द बोलकर एक नया शब्द बनाएगा।

प्रस्तुतीकरण

'उपसर्ग' दो शब्दों के योग से बना है, उप + सर्ग। **'उप'** का अर्थ है– 'समीप' तथा **'सर्ग'** का अर्थ है– **'सृष्टि करना'**। इस प्रकार उपसर्ग उस शब्दांश को कहते हैं जो किसी शब्द के आरंभ में जुड़कर, उस शब्द के नए अथवा विशेष अर्थ का बोध कराता है। दूसरे शब्दों में उपसर्ग का अर्थ हुआ निकट, पूर्वार्ध में बैठकर, नवीन अर्थ वाले शब्द की रचना करना। **'उपसर्ग'** किसी शब्द के पहले जोड़े जाने पर विशिष्ट अर्थ की संरचना को जन्म देता है। जैसे– **'हार'** में **'प्र'** उपसर्ग जुड़ जाने से **'प्रहार'** शब्द हो जाता है। इस उदाहरण में **'हार'** शब्द में **'प्र'** उपसर्ग जुड़ जाने से अर्थ एकदम से परिवर्तित हो गया है।

हिन्दी भाषा में तीन प्रकार के उपसर्ग प्रयोग किए जाते हैं–

1. संस्कृत के उपसर्ग
2. हिन्दी के उपसर्ग
3. उर्दू के उपसर्ग

6.1.1 संस्कृत के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्ग से बने शब्द
अति	अधिक, ऊपर, उस पार	अत्याचार, अतिरिक्त, अतिशय, अत्यंत, अत्युक्ति, अतिक्रमण
अधि	ऊपर, श्रेष्ठ	अधिकरण, अधिकार, अधिराज, अध्यात्म, अध्यक्ष, अधिपति
अप	बुरा, अभाव, हीनता, विरुद्ध	अपकार, अपमान, अपशब्द, अपराध, अपहरण, अपकीर्ति, अपव्यय, अपवाद
अनु	पीछे, समानता, क्रम, पश्चात	अनुशासन, अनुज, अनुपात, अनुवाद, अनुचर, अनुकरण, अनुरूप, अनुस्वार, अनुशीलन
आ	ओर, सीमा, समेत, कमी, विपरीत	आकाश, आदान, आजीवन, आगमन, आरंभ, आचरण, आमुख, आकर्षण, आरोहण
अव	हीनता, अनादर, पतन	अवगत, अवलोकन, अवनत, अवस्था, अवसान, अवज्ञा, अवरोहण, अवतार, अवनति, अवशेष

उप	निकटता, सदृश, गौण, सहायक, हीनता	उपकार, उपकूल, उपनिवेश, उपदेश, उपस्थिति, उपवन, उपनाम, उपासना, उपभेद
नि	भीतर, नीचे, अतिरिक्त	निदर्शन, निपात, नियुक्त, निवास, निरूपण, निवारण, निम्न, निषेध, निरोध, निदान, निबंध
निर्	बाहर, निषेध, रहित	निर्वास, निराकरण, निर्भय, निरपराध, निर्वाह, निर्दोष, निर्जीव, निरोग, निर्मल
परा	उलटा, अनादर, नाश	पराजय, पराक्रम, पराभव, परामर्श, पराभूत
परि	आसपास, चारों ओर, पूर्ण	परिक्रमा, परिजन, परिणाम, परिधि, परिपूर्ण
प्र	अधिक, आगे, ऊपर, यश	प्रकाश, प्रख्यात, प्रचार, प्रबल, प्रभु, प्रयोग, प्रगति, प्रसार, प्रयास
प्रति	विरोध, बराबरी, प्रत्येक, परिवर्तन	प्रतिक्षण, प्रतिनिधि, प्रतिकार, प्रत्येक, प्रतिदान, प्रतिकूल, प्रत्यक्ष
वि	भिन्नता, हीनता, असमानता, विशेषता	विकास, विज्ञान, विदेश, विवाद, विशेष, विस्मरण, विराम, वियोग, विभाग, विकार, विमुख, विनय, विनाश
सम्	पूर्णता, संयोग	संकल्प, संग्रह, संतोष, संन्यास, संयोग, संस्कार, संरक्षण, संहार, सम्मेलन, संस्कृत, सम्मुख, संग्राम
सु	सुखी, अच्छा, भाव, सहज, सुंदर	सुकृत, सुगम, सुलभ, सुदूर, स्वागत, सुयश, सुभाषित, सुवास, सुजन
अन्	नहीं, बुरा	अनंत, अनादि, अनेक, अनुपयोगी, अनुचित,

6.1.2 हिंदी के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्ग से बने शब्द
अन	निषेध अर्थ में	अनमोल, अलग, अनजान, अनकहा, अनदेखा
अध	आधे अर्थ में	अधजला, अधखिला, अधपका, अधकचरा, अधकच्चा, अधमरा
उन	एक कम	उनतीस, उनचास, उनसठ
भर	पूरा ,ठीक	भरपेट, भरपूर, भरदिन
दु	बुरा, हीन, विशेष	दुबला, दुर्जन, दुर्बल, दुकाल
नि	अभाव, विशेष	निगोड़ा, निडर, निकम्मा
अ	अभाव, निषेध	अछूता, अथाह, अटल
क	बुरा, हीन	कपूत, कचोट
कु	बुरा	कुचाल, कुरूप, कुचक्र
औ	हीन, निषेध	औगुन, औघर, औसर, औसान
सु	अच्छा	सुडौल, सुजान, सुघड़, सुफल
पर	दूसरा, बाद का	परलोक, परोपकार, परसर्ग, परहित
बिन	बिना, निषेध	बिनब्याहा, बिनबादल, बिनपाए, बिनजाने

6.1.3 उर्दू के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्ग से बने शब्द
ला	बिना	लाचार, लाजवाब, लापरवाह, लापता
बद	बुरा	बदसूरत, बदनाम, बददिमाग, बदमाश, बदकिस्मत

बे	बिना	बेकाम, बेअसर, बेरहम, बेईमान, बेरहम
कम	थोड़ा, हीन	कमसिन, कमखयाल, कमजोर, कमदिमाग, कमजात
गैर	के बिना, निषेध	गैरकानूनी, गैरजरूरी, गैर हाजिर, गैर सरकारी
खुश	श्रेष्ठता के अर्थ में	खुशनुमा, खुशगवार, खुशमिजाज, खुशबू, खुशदिल, खुशहाल
ना	अभाव	नाराज, नालायक, नाद, नामुमकिन, नादान, नापसंद, नादान
अल	निश्चित	अलबत्ता, अलगरज
बर	ऊपर, पर, बाहर	बरखास्त, बरदाश्त, बरवक्त
बिल	के साथ	बिलआखिर, बिलकुल, बिलवजह
हम	बराबर, समान	हमउम्र, हमदर्दी, हमसफर
दर	में	दरअसल, दरहकीकत
फिल	में प्रति	फिलहाल
ब	और, अनुसार	बनाम, बदौलत, बदस्तूर, बगैर
बा	सहित	बाकायदा, बाइज्जत, बाअदब, बामौका
सर	मुख्य	सरताज, सरदार, सरपंच, सरकार
बिला	बिना	बिलावजह, बिलाशक
हर	प्रत्येक	हरदिन, हरसाल, हरएक, हरबार

6.2 दो उपसर्गों से निर्मित शब्द

निर् + आ + करण = निराकरण
प्रति + उप + कार = प्रत्युपकार
सु + सम् + कृत = सुसंस्कृत
अन् + आ + हार = अनाहार
सम् + आ + चार = समाचार
अन् + आ + सक्ति = अनासक्ति
अ + सु + रक्षित = असुरक्षित
सम् + आ + लोचना = समालोचना
सु + सम् + गठित = सुसंगठित
अ + नि + यंत्रित = अनियंत्रित
अति + आ + चार = अत्याचार
अ + प्रति + अक्ष = अप्रत्यक्ष

हार, मान, वार, ज्ञान वन इन शब्दों में वि अप, परि, उप उपसर्गों को जोड़कर क्रमशः विहार, अपमान, परिवार, विज्ञान, उपवन आदि नए शब्दों का निर्माण किया जा सकता है। जैसे– **हार** शब्द का अर्थ पराजय से है परंतु **वि** उपसर्ग जुड़ने के बाद **विहार** शब्द बनता है जिसका अर्थ भ्रमण करने से है । इस प्रकार मूल शब्दों के पूर्व में उपसर्ग लगने से उनके अर्थ बदल जाते हैं।

आइए! समझते हैं

किसी शब्द के पूर्व में जुड़ने वाले शब्दांश को उपसर्ग कहते हैं; जो विशेष अर्थ प्रकट करते हैं।
जैसे– अप+मान = अपमान
अ+सफल = असफल

ध्यातव्य– कुछ शब्दों के पहले 'अ' उपसर्ग जोड़ देने से बनने वाला शब्द उसका 'विलोम–शब्द' बन जाता है।

बोध परीक्षण

1. उपसर्ग किसे कहते हैं?
2. उपसर्ग के कितने प्रकार हैं?
3. हिन्दी उपसर्गों की संख्या कितनी हैं?
4. 'प्रयोग' शब्द में कौन सा उपसर्ग है?
5. 'परा' उपसर्ग से दो शब्दों का निर्माण कीजिए?

समेकन

प्रस्तुत प्रकरण में शब्द एवं अर्थ निर्माण की प्रक्रिया में उपसर्ग के महत्त्व को बताया गया है। उपसर्ग प्रकरण के अंतर्गत शिक्षण की विविध गतिविधियों का प्रयोग किया गया है तथा उपसर्ग के विभिन्न प्रकारों को बोध–प्रश्नों के माध्यम से बताया गया है।

स्व आकलन

1. नीचे दिए गए शब्दों में प्रयुक्त उपसर्गों को उनके सामने लिखिए–

शब्द	**उपसर्ग**
प्रहार	प्र
विहार	....
आहार	....
अनुपस्थित	....
निरुत्साहित	....

2. 'बेचैन' में 'बे' उपसर्ग लगा है। इसी प्रकार 'प्र' उपसर्ग की सहायता से 'प्रबल' शब्द बनाया गया है। 'बे' और 'प्र' उपसर्ग से बने पाँच–पाँच शब्द लिखिए।

3. 'प्रबंधन' में 'प्र' उपसर्ग है इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग और मूल शब्द अलग–अलग कीजिए–

शब्द	**उपसर्ग**	**मूलशब्द**
प्रहार	....	....
विहार	....	....
प्रशिक्षण	....	....
प्रशासन	....	....
प्रगति	....	....
प्रबुद्ध	....	....
प्रशिक्षु	....	....

4. दिए गए शब्दों में उपसर्ग पहचान कर सुमेलित कीजिए–

अत्यंत	स्व
अपयश	परि
उत्थान	अति
अभिमान	उत्
परिक्रमा	अप
स्वदेश	अभि

5. निम्नलिखित उपसर्गों का प्रयोग कर नये शब्दों का निर्माण कीजिए–

उप– ...., ..., ..., ..., ...

अप– ...., ..., ..., ..., ...

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'अपकीर्ति' शब्द में उपसर्ग है?
(क) उप (ख) अप (ग) कीर्ति (घ) अव।
2. उपसर्ग कितने प्रकार के होते हैं?
(क) 2 (ख) 3 (ग) 4 (घ) 5।
3. 'अव' उपसर्ग से बना शब्द है–
(क) अवसाद (ख) अक्सर (ग) अक्षर (घ) अपमान।
4. दुर् + गति
(क) दुर्गति (ख) दुर्गति (ग) दुगति (घ) दुर्र गति।
5. 'अध्यक्ष' शब्द में उपसर्ग है–
(क) अध् (ख) अधि (ग) अध (घ) यक्ष।
6. उर्दू का उपसर्ग है–
(क) सब (ख) हम (ग) चिर् (घ) नि।
7. तद्भव उपसर्ग है–
(क) भर (ख) ना (ग) वि (घ) सम्।
8. 'निरर्थक' शब्द में कौन सा उपसर्ग है–
(क) निरा (ख) निः (ग) निर् (घ) निस्।
9. 'वि' उपसर्ग से बना शब्द नहीं है–
(क) वियोग (ख) विद्यालय (ग) विहार (घ) विनाश।
10. 'आचरण' शब्द में उपसर्ग है–
(क) आ (ख) अव (ग) अप (घ) अधि।
11. 'बे' उपसर्ग किस भाषा का है–
(क) संस्कृत (ख) हिन्दी (ग) अंग्रेजी (घ) उर्दू।
12. 'खुशबू' शब्द में उपसर्ग है–
(क) खुद (ख) खुश् (ग) खुश (घ) खूब।
13. 'गैरहाजिर' शब्द में उपसर्ग है–
(क) गैर (ख) गौर (ग) गोर (घ) गुर।
14. वे शब्दांश जो मूल शब्द से पहले जुड़कर अर्थ को बदल देते हैं, वे कहलाते हैं–
(क) प्रत्यय (ख) उपसर्ग (ग) पर्यायवाची (घ) संधि।

विचार विश्लेषण

1. उपसर्ग किसे कहते हैं?
2. उपसर्ग कितने प्रकार के होते हैं?
3. आगत उपसर्ग किसे कहते हैं?
4. अंग्रेजी भाषा से आए एवं हिन्दी भाषा में प्रयोग होने वाले किन्हीं दो उपसर्गों के नाम लिखिए?
5. अति, अध, दुर्, परा उपसर्ग से बनने वाले एक–एक शब्द बनाइए?
6. अनुमान और पर्यावरण में प्रयुक्त उपसर्ग का नाम लिखिए?

प्रोजेक्ट कार्य

कक्षा चार की हिन्दी पुस्तिका फुलवारी में 'बालगंगाधर तिलक' पाठ में आए उपसर्ग की सूची तैयार कर उसका नाम लिखिए तथा उनसे अन्य शब्द बनाइए।

6.3 प्रत्यय

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु, प्रत्यय की अवधारणा समझ लेते हैं।
2. प्रशिक्षु, प्रत्ययों का प्रयोग करके नवीन शब्दों का निर्माण कर लेते हैं।
3. प्रशिक्षु, प्रत्ययों के प्रयोग से शब्द–निर्माण की प्रक्रिया को बता लेते हैं।
4. प्रशिक्षु, शब्दों के मूल शब्द और प्रत्यय को विच्छेद करके उसके अर्थ को बता लेते हैं।
5. प्रशिक्षु, गद्य एवं पद्य में प्रयुक्त प्रत्यय–युक्त शब्दों को पहचान कर अलग–अलग कर लेते हैं।

जिस प्रकार मनुष्य में सृजन का गुण उसकी रचनात्मकता को प्रकट करता है। उसी प्रकार हिन्दी भाषा की रचनात्मकता उसके शब्दों के नए–नए निर्माण में दिखाई पड़ती है। हिन्दी के मूल शब्दों के अंत में जिन शब्दांशों को जोड़कर हम नए–नए शब्दों की निर्मित करते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं। उनके माध्यम से हिन्दी भाषा की शब्द संपदा में वृद्धि होती है।

प्रशिक्षकों हेतु निर्देश

1. शिक्षक–प्रशिक्षक को प्रशिक्षण कक्षा में जाने के पूर्व प्रशिक्षण–कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार कर लेनी चाहिए।
2. प्रशिक्षण–सामग्री से संबंधित गतिविधियों का चयन कर लेना चाहिए।
3. प्रत्यय के प्रकार को उदाहरणों के साथ प्रस्तुत करेंगे।
4. प्रत्यय संबंधी विषय को सरल उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट करेंगे।

प्रशिक्षुओं हेतु निर्देश

1. कक्षा शिक्षण में आयोजित विभिन गतिविधियों में सक्रिय रूप से प्रतिभाग करेंगे।
2. विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों का संकलन तैयार करेंगे एवं क्रियात्मक प्रशिक्षण में इनका उपयोग कक्षा शिक्षण हेतु करेंगे।

3. प्रत्यय से संबंधित पूर्व ज्ञान पर आवश्यकतानुसार चर्चा करेंगे।
4. प्रत्यय युक्त नवीन शब्दों को बनाने का प्रयास करेंगे।

गतिविधि का नाम : आओ शब्द बनाएँ।

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : शब्द कार्ड, प्रत्यय कार्ड।

उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

गतिविधि

❖ प्रशिक्षक कक्षा को दो समूहों में बाँट देंगे और एक समूह में शब्द–कार्ड तथा दूसरे समूह में प्रत्यय–कार्ड बाँट देंगे। अब पहला समूह प्रत्यय–कार्ड से कोई एक प्रत्यय बोलेगा और दूसरा समूह शब्द–कार्डों में से उस प्रत्यय से मेल खाता हुआ कोई शब्द बोलकर एक नया शब्द बनाएगा।

ज्ञान + वान = ज्ञानवान्

शरीर + इक = शारीरिक

अकेला + पन = अकेलापन

बुद्धि + मान = बुद्धिमान्

सौभाग्य + वती = सौभाग्यवती

चमक + ईला = चमकीला

प्रस्तुतीकरण

प्रत्यय दो शब्दों से मिलकर बना है– **प्रति + अय**, जिसमे **'प्रति'** का अर्थ **'साथ में'** या **'बाद में'** है और **'अय'** का अर्थ है **'चलने वाला'**। अतएव प्रत्यय का अर्थ है 'शब्दों के साथ चलने या लगने वाला'। दूसरे शब्दों में– प्रत्यय वे शब्द होते हैं जो मूल शब्द के बाद में जुड़कर उनके अर्थ में नई विशेषता ला देते हैं।

जैसे–
खेल + आड़ी = खिलाड़ी
मेल + आवट = मिलावट
पढ़ + आकू = पढ़ाकू
झूल + आ = झूला

हिन्दी में प्रत्यय तीन प्रकार के होते हैं–

प्रत्यय
- **संस्कृत प्रत्यय**
- **हिन्दी प्रत्यय**
  - **कृत् प्रत्यय**
  - **तद्धित प्रत्यय**
- **विदेशी प्रत्यय**

6.3.1 संस्कृत के प्रत्यय

1. इत – हर्षित, गर्वित, लज्जित, पल्लवित
2. इक – मानसिक, धार्मिक, मार्मिक, पारिश्रमिक
3. ईय – भारतीय, मानवीय, राष्ट्रीय, स्थानीय
4. एय – आग्नेय, पाथेय, राधेय, कौंतेय
5. तम – अधिकतम, महानतम, वरिष्ठतम, श्रेष्ठतम
6. वान – धनवान, बलवान, गुणवान, दयावान
7. मान – श्रीमान, शोभायमान, शक्तिमान, बुद्धिमान
8. त्व – गुरुत्व, लघुत्व, बंधुत्व, नेतृत्व
9. शाली – वैभवशाली, गौरवशाली, प्रभावशाली, शक्तिशाली
10. तर – श्रेष्ठतर, उच्चतर, निम्नतर, लघुतर

6.3.2 हिन्दी के प्रत्यय

(1) कृत प्रत्यय (2) तद्धित प्रत्यय

कृत प्रत्यय– वे प्रत्यय जो धातु अथवा क्रिया के अंत में लगकर नए शब्दों की रचना करते है, उन्हें कृत प्रत्यय कहते हैं। कृत प्रत्ययों से संज्ञा तथा विशेषण शब्दों की रचना होती है।

संज्ञा की रचना करने वाले कृत प्रत्यय–

1. न – बेलन, बंधन, नंदन, चंदन
2. ई – बोली, सोची, सुनी, हँसी
3. आ – झूला, भूला, खेला, मेला
4. अन – मोहन, लेखन, पठन
5. आहट – बड़बड़ाहट, घबराहट, हड़बड़ाहट

विशेषण की रचना करने वाले कृत प्रत्यय–

1. आड़ी – खिलाड़ी, कबाड़ी
2. एरा – लुटेरा, बसेरा
3. आऊ – बिकाऊ, टिकाऊ, दिखाऊ
4. ऊ – झाडू, बजारू, चालू, खाऊ

कृत प्रत्यय के भेद–

1. कृत् वाचक
2. कर्म वाचक
3. करण वाचक
4. भाव वाचक
5. क्रिया वाचक

(1) कृत् वाचक– कर्ता का बोध कराने वाले प्रत्यय कृत् वाचक प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे–	हार	–	पालनहार, चाखनहार, राखनहार
	वाला	–	रखवाला, लिखनेवाला, पढ़नेवाला
	क	–	रक्षक, भक्षक, पोषक, शोषक
	अक	–	लेखक, गायक, पाठक, नायक
	ता	–	दाता, सुंदरता

(2) कर्म वाचक कृत प्रत्यय– कर्म का बोध करानेवाले कृत प्रत्यय कर्म वाचक कृत प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे–	औना	–	खिलौना, बिछौना
	नी	–	ओढ़नी, मथनी, छलनी
	ना	–	पढ़ना, लिखना, गाना

(3) करण वाचक कृत प्रत्यय– साधन का बोध करानेवाले कृत प्रत्यय करण वाचक कृत प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे–	अन	–	पालन, सोहन, झाड़न
	नी	–	चटनी, कतरनी, सूँघनी
	ऊ	–	झाड़ू, चालू
	ई	–	खाँसी, फाँसी

(4) भाव वाचक कृत प्रत्यय– क्रिया के भाव का बोध करानेवाले प्रत्यय भाव वाचक कृत प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे–	आप	–	मिलाप, विलाप
	आवट	–	सजावट, मिलावट, लिखावट
	आव	–	बनाव, खिचाव, तनाव
	आई	–	लिखाई, खिंचाई, चढ़ाई

(5) क्रिया वाचक कृत प्रत्यय– क्रिया शब्दों का बोध कराने वाले कृत प्रत्यय क्रिया वाचक कृत प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे–	या	– आया, बोया, खाया
	कर	– गाकर, देखकर, सुनकर
	आ	–सूखा,भूला
	ता	– खाता, पीता, लिखता

तद्धित प्रत्यय

क्रिया को छोड़कर संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि में जुड़कर नए शब्द बनाने वाले प्रत्यय, तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे–

मानव + ता = मानवता
जादू + गर = जादूगर
बाल + पन = बालपन
लिख + आई = लिखाई

तद्धित प्रत्यय के भेद–

1. कर्तृ वाचक तद्धित प्रत्यय
2. भाव वाचक तद्धित प्रत्यय

3. संबंध वाचक तद्धित प्रत्यय
4. गुण वाचक तद्धित प्रत्यय
5. स्थान वाचक तद्धित प्रत्यय
6. ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय
7. स्त्रीवाचक तद्धित प्रत्यय

(1) कर्तृ वाचक तद्धित प्रत्यय– कर्ता का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय कर्तृ वाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– आर – सुनार, लुहार, कुम्हार
ई – माली, तेली
वाला – गाड़ीवाला, रिक्शेवाला, बाँसुरीवाला

(2) भाववाचक तद्धित प्रत्यय– भाव का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय भाव वाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– आहट – कड़वाहट
ता – सुंदरता, मानवता, दुर्बलता
आपा – मोटापा, बुढ़ापा
ई – गरीबी, अमीरी

(3) संबंधवाचक तद्धित प्रत्यय– संबंध का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय संबंध वाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– इक – शारीरिक, सामाजिक, मानसिक
आलु – कृपालु, श्रद्धालु, ईर्ष्यालु
ईला – रंगीला, चमकीला, भड़कीला
तर – उच्चतर, समानांतर

(4) गुणवाचक तद्धित प्रत्यय– गुण का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय गुण वाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– वान – गुणवान, धनवान, बलवान
ईय – भारतीय, राष्ट्रीय, नाटकीय
आ – सूखा, रूखा, भूखा
ई – क्रोधी, रोगी, योगी

(5) स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय– स्थान का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय स्थान वाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– वाला – दूधवाला, चायवाला
इया – जयपुरिया, उदयपुरिया
ई – जापानी, राजस्थानी

(6) ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय– लघुता का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– इया – लुटिया, घटिया
ई – प्याली, बाली
ड़ी – पंखुड़ी, सगड़ी
ओला – खटोला, मँझोला

(6) स्त्रीवाचक तद्धित प्रत्यय– स्त्रीलिंग का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय स्त्रीवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– आइन	–	पंडिताइन, ठकुराइन
इन	–	मालिन, कुम्हारिन, जोगिन
नी	–	मोरनी, शेरनी
आनी	–	सेठानी, देवरानी, जेठानी
इनी	–	कमलिनी, नंदिनी

6.3.3 उर्दू के प्रत्यय

उर्दू भाषा का हिन्दी के साथ लम्बे समय तक प्रचलन से रहने के कारण हिन्दी भाषा में उर्दू भाषा के प्रत्यय भी प्रयोग में आने लगे हैं।

जैसे– गी	–	ताजगी, बानगी, सादगी
गर	–	कारीगर, बाजीगर, सौदागर
ची	–	नकलची, तोपची, अफीमची
दार	–	हवलदार, जमींदार, किराएदार
खोर	–	आदमखोर, चुगलखोर, रिश्वतखोर
गार	–	खिदतमगार, मददगार, गुनाहगार
नमा	–	बाबरनामा, जहाँगीरनामा, सुलहनामा
बाज	–	धोखेबाज, नशेबाज, चालबाज
मंद	–	जरूरतमंद, अहसानमंद, अक्लमंद
आबाद	–	सिकंदराबाद, औरंगाबाद,
इन्दा	–	बाशिंदा, शर्मिंदा, परिंदा
इश	–	साजिश, ख्वाहिश, फरमाइश
गाह	–	ख्वाबगाह, ईदगाह, दरगाह
गीर	–	आलमगीर, जहाँगीर, राहगीर
आना	–	नजराना, दोस्ताना, सालाना
इयत	–	इंसानियत, खैरियत, आदमियत
ईन	–	शौकीन, रंगीन, नमकीन
कार	–	सलाहकार, लेखाकार, जानकार
दान	–	खानदान, पीकदान, कूड़ादान

6.4 उपसर्ग और प्रत्यय में अंतर

उपसर्ग	प्रत्यय
1. ये शब्द के पूर्व लगते हैं।	1. ये शब्द के बाद लगते हैं।
2.ये सार्थक होते हैं। जैसे– 'उप' का अर्थ है– समीप या छोटा।	2. ये निरर्थक होते हैं। जैसे– 'ता', 'त्व' इत्यादि का कोई अर्थ नहीं है।
3. इनके प्रयोग से अर्थ पूर्णतया बदल सकता है। यहाँ तक कि विपरीतार्थक भी हो सकता है। जैसे– 'हित' में 'अ' उपसर्ग लगाने से 'अहित' शब्द का निर्माण होता है जो 'हित' शब्द का विपरीतार्थक है।	3. इनके प्रयोग से शब्द का अर्थ मूल शब्द से संबंधित ही रहता है। जैसे– 'मनुष्य' शब्द में 'ता' प्रत्यय लगाने से 'मनुष्यता' शब्द का निर्माण होता है जिसका अर्थ मूल शब्द 'मनुष्य' से ही संबंधित है।
4. उपसर्ग बहुदिशागामी होते हैं।	4. प्रत्यय एकदिशागामी होते हैं।

बोध परीक्षण

1. प्रत्यय किसे कहते हैं और ये कितने प्रकार के होते हैं?
2. शब्द के अंत में लगने वाले शब्दांश को क्या कहते हैं?
3. 'महत्त्व' शब्द में कौन सा प्रत्यय है?
4. 'आई' और 'आवट' प्रत्यय लगाकर दो–दो शब्द बनाइए?

समेकन

शब्द एवं अर्थ निर्माण की प्रक्रिया में प्रत्यय के महत्त्व को बताया गया है। प्रत्यय प्रकरण के अंतर्गत शिक्षण की सूक्ष्मतम एवं व्यापक गतिविधियों का प्रयोग करके प्रशिक्षुओं की समझ को विकसित किया गया है। प्रत्यय के विभिन्न प्रकारों को बोध प्रश्नों के माध्यम से प्रतिपुष्ट किया गया है।

स्व आकलन

1. **'दीप्तिमान'** में **'दीप्ति'** शब्द में **'मान'** प्रत्यय जुड़ा है। शब्द के अंत में **'इ'** रहने पर **'मान'** अन्यत्र **'वान'** जोड़ते हैं। नीचे लिखे शब्दों में **मान/वान** जोड़कर नया शब्द बनाइए––

   बुद्धि – ....
   गति – ....
   गुण – ....
   शक्ति – ....

2. **'सत'** शब्द में **'त्व'** प्रत्यय जुड़कर सत्त्व बन गया है। नीचे लिखे शब्दों में **'त्व'** जोड़कर नए शब्द बनाइए–

   महत् – ....
   प्रभु – ....
   तत् – ....
   वीर – ....

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. शब्द के अंत में लगने वाले शब्दांश को क्या कहते हैं?
(क) उपसर्ग (ख) समास (ग) प्रत्यय (घ) प्रत्याहार
2. लड़कपन में प्रयुक्त प्रत्यय का नाम है–
(क) अन (ख) पान (ग) पन (घ) न
3. मित्रता' शब्द में कौन प्रत्यय है––
(क) ता (ख) ति (ग) त्राता (घ) त्र
4. 'दर्दनाक' शब्द में कौन सा प्रत्यय है––
(क) नीक (ख) नाक (ग) आक (घ) दर्द
5. उपयोगी' शब्द में कौन सा प्रत्यय है–
(क) उप (ख) योगी (ग) ई (घ) योग

6. 'चिकना + हट', के योग से बना शब्द है––
(क) चिकनाहट (ख) चिकनाई (ग) चिनकाई (घ) चिकन
7. 'बड़बड़ाना' शब्द में प्रत्यय है–
(क) आना (ख) अना (ग) अन (घ) आनी
8. 'बुझक्कड़' शब्द में प्रत्यय है––
(क) ड़ (ख) कड़ (ग) अक्कड़ (घ) बुझ

6.5 समास

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु, समास की अवधारणा समझ लेते हैं।
2. प्रशिक्षु, समास के नियमों का पालन करते हुए सामासिक पदों का निर्माण कर लेते हैं।
3. प्रशिक्षु, सामासिक शब्द रचना के अवयवों को समझ लेते हैं।
4. प्रशिक्षु, सामासिक शब्दों का समास विग्रह कर लेते हैं।
5. प्रशिक्षु, पाठ्य–पुस्तक में आये हुए सामासिक पदों को पहचान लेते हैं।

समास से तात्पर्य संक्षेपीकरण से है। जैसे– **नीलकमल** नीला है जो कमल इसका संक्षेपीकरण नीलकमल होगा। समास वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ प्रकट किया जाता है। जब दो या दो से अधिक सार्थक शब्द मिलकर एक नए सार्थक शब्द का निर्माण करते हैं तब समास हो जाता है। सम् का अर्थ अच्छी तरह से एवं आस अर्थ है रखना। समास रचना में दो या दो से अधिक पद होते हैं। पहले पद को पूर्व पद कहा जाता है तथा दूसरे पद को उत्तर पद कहा जाता है। इन दोनों से मिलकर जो नया शब्द बनता है वह समस्त पद या सामासिक पद कहलाता है। जैसे– राजपुत्र इसमें राजा पूर्व पद है तथा पुत्र उत्तर पद है। अर्थात् राजा का पुत्र।

राज → पूर्व पद
पुत्र → उत्तर पद

इस प्रकार दो सार्थक शब्द मिलकर राजपुत्र बन गया है। यहाँ पर राजा का पुत्र में विभक्ति का लोप हो गया। अब समस्त पद राजपुत्र हो गया है।

जब समस्त पदों को अलग–अलग किया जाता है तब इस प्रक्रिया को समास विग्रह कहा जाता है। जैसे– रसोईघर – रसोई का घर।

प्रशिक्षकों हेतु निर्देश

1. शिक्षक–प्रशिक्षक को प्रशिक्षण कक्ष में जाने के पूर्व प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार कर लेनी चाहिए।
2. विषय वस्तु से संबंधित संभावित प्रश्नों का समाधान कर लेना चाहिए।
3. पाठ–योजना के अनुसार, शिक्षण सामग्री का संयोजन कर लेना चाहिए।
4. प्रशिक्षण–सामग्री के तकनीकी उपागमों का प्रयोग सीख लेना चाहिए।
5. पाठ–योजना के अनुसार, उपयुक्त ऑडियो–वीडियो का चयन कर लेना चाहिए।

6. प्रशिक्षण सामग्री से संबंधित गतिविधियों का चयन कर लेना चाहिए।

प्रशिक्षुओं हेतु निर्देश

1. कक्षा शिक्षण में आयोजित विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय रूप से प्रतिभाग करेंगे।
2. विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों का संकलन तैयार करेंगे एवं क्रियात्मक प्रशिक्षण में इनका उपयोग कक्षा शिक्षण हेतु करेंगे।
3. समास से संबंधित पूर्व ज्ञान पर आवश्यकतानुसार चर्चा करेंगे।
4. नवीन सामासिक शब्दों को बनाने का प्रयास करेंगे।

गतिविधि

गतिविधि का नाम : सही मिलान कीजिए

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : सामासिक पद लिखे कार्ड, समास विग्रह लिखे कार्ड।

उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

❖ प्रशिक्षक कक्षा को दो समूहों में बाँट कर एक समूह को सामासिक पद लिखे कार्ड तथा दूसरे समूह को समास विग्रह लिखे कार्ड बाँट देंगे। अब समूह एक अपने कार्ड को एक पंक्ति में मेज पर रख देगा और दूसरा समूह उन कार्डों से मिलता जुलता कार्ड उनके सामने रखेगा; जैसे–

घुड़सवार	राजपुत्र	प्रतिदिन
घोड़े पर सवार	राजा का पुत्र	हर दिन

6.5.1 समास के भेद

- अव्ययीभाव समास
- तत्पुरुष समास
- कर्मधारय समास
- बहुव्रीहि समास
- द्विगु समास
- द्वंद्व समास

अव्ययीभाव समास– जिस समास का पहला पद अव्यय होता है, वह अव्ययी भाव समास कहा जाता है। अव्ययी भाव समास में पूर्व पद की प्रधानता होती है, जिसके कारण समस्त पद के अर्थ का निर्धारण होता है; जैसे– प्रतिदिन, बेहिसाब, प्रत्यक्ष आदि।

सामासिक पद		विग्रह
प्रत्येक	–	प्रति एक
भरपेट	–	पेट भर के
यथाशक्ति	–	जितनी शक्ति हो

तत्पुरुष समास– इस समास का उत्तर (अंतिम) पद प्रधान होता है तथा पहले पद के विभक्ति चिह्नों का लोप कर नया शब्द बनाया जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं; जैसे– रसोई के लिए घर– रसोईघर।

सामासिक पद		**विग्रह**
देशगत	–	देश को गया हुआ
रोगमुक्त	–	रोग से मुक्त
सूररचित	–	सूर द्वारा रचित

तत्पुरुष समास के निम्नलिखित भेद होते हैं–

- **कर्म तत्पुरुष** (सामासिक पद में विभक्ति चिह्न **'को'** का लोप)

मनोहर	–	मन को हरने वाला
चिड़ीमार	–	चिड़ियों को मारने वाला

- **करण तत्पुरुष** (सामासिक पद में विभक्ति चिह्न **'से/के द्वारा'** का लोप)

मनचाहा	–	मन से चाहा
स्वरचित	–	स्व द्वारा रचित

- **संप्रदान तत्पुरुष** (सामासिक पद में विभक्ति चिह्न **'के लिए'** का लोप)

गुरुदक्षिणा	–	गुरु के लिए दक्षिणा
विद्यालय	–	विद्या के लिए आलय

- **अपादान तत्पुरुष** (सामासिक पद में विभक्ति चिह्न **'से'** अलग होने के अर्थ में का लोप)

पापमुक्त	–	पाप से मुक्त
पथभ्रष्ट	–	पथ से भ्रष्ट

- **संबंध तत्पुरुष** (सामासिक पद में विभक्ति चिह्न **'का/के/की'** का लोप)

राजपुत्र	–	राजा का पुत्र
सीमारेखा	–	सीमा की रेखा

- **अधिकरण तत्पुरुष** (सामासिक पद में विभक्ति चिह्न **'में/पर'** का लोप)

कार्यकुशल	–	कार्य में कुशल
आपबीती	–	आप पर बीती

- **नञ् तत्पुरुष** (सामासिक पद 'अ/अन्' से शुरू होता है।)

अज्ञान	–	न ज्ञान
अनाधिकार	–	न अधिकार

कर्मधारय समास– जिस समास का एक पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है अथवा एक पद उपमान और दूसरा पद उपमेय होता है, उसे कर्मधारय समास कहते हैं; जैसे– वचनामृत, नीलकंठ आदि।

सामासिक पद		**विग्रह**
नीलांबर	–	नीला है जो अंबर
परमानंद	–	परम है जो आनंद
प्राणप्रिय	–	प्राणों के समान प्रिय

बहुव्रीहि समास– जहाँ पहला और दूसरा पद मिलकर किसी अन्य अर्थ की ओर संकेत करते हैं वहाँ बहुव्रीहि समास होता है; जैसे– विषधर, त्रिनेत्र, लंबोदर आदि।

सामासिक पद		**विग्रह**
मुरलीधर	–	मुरली को धारण करता है जो अर्थात– श्री कृष्ण

गजानन	–	गज जैसे आनन वाला है जो अर्थात– गणेश
चक्रपाणि	–	चक्र है पाणि (हाथ) में जिसके अर्थात– विष्णु

द्विगु समास– जिस समास का पहला पद संख्यावाचक विशेषण हो, वह द्विगु समास कहलाता है। जैसे– नवरात्र, त्रिभुज, शताब्दी आदि।

सामासिक पद		**विग्रह**
तिरंगा	–	तीन रंगों का समूह
पंचमुखी	–	पाँच मुख वाला
सप्ताह	–	सात दिनों का समूह

द्वंद्व समास– जिस समास के दोनों पद प्रधान हों तथा उनके बीच योजक चिह्न (–) लगा रहता है। समास का विग्रह करने पर 'और' 'तथा' या 'एवं' लगता है, वह द्वंद्व समास कहलाता है; जैसे– राधा–कृष्ण, अकबर–बीरबल, दिन–रात, आदि।

सामासिक पद		**विग्रह**
अन्न–जल	–	अन्न और जल
पाप–पुण्य	–	पाप और पुण्य
राजा–प्रजा	–	राजा और प्रजा

बोध परीक्षण

1. दो या दो से अधिक पद जब मिलकर जब एक पद हो जाते हैं तो उसे क्या कहते हैं?
2. समास के मुख्यतः कितने भेद हैं?
3. 'यथाशक्ति' पद में कौन सा समास है?
4. 'राष्ट्रपुरुष' पद में कौन सा समास है?
5. 'दशानन' शब्द का समास विग्रह करें?
6. 'अनपढ़' पद में कौन सा समास है?

समेकन

इस प्रकार समास से अभिप्राय संक्षेपीकरण से है। जब दो या दो से अधिक सार्थक पद आपस में मिलकर एक नए सार्थक शब्द की संरचना करते है तब समास हो जाता है। दो पदों के बीच की विभक्ति का लोप हो जाता है। दोनों पदों में कभी पहला पद और कभी अन्य पद प्रधान हो जाता है। काव्य की विधा गद्य–पद्य में समासिक शब्दों के प्रयोग से काव्य में चमत्कार आ जाता है। समासयुक्त ललित–कोमल कांत पदावलियों के द्वारा भाषा लालित्यपूर्ण हो जाती है। प्रशिक्षु समासिक शैली से परिचित होते हुए उनका व्यवहारिक प्रयोग गद्य–पद्य के पठन एवं लेखन कौशल मे कर सकेंगे।

स्व आकलन

1. **निम्नलिखित समस्त पदों का विग्रह कीजिए तथा समास का नाम भी लिखिए–**

समस्त पद	**विग्रह**	**समास**
राजकुमार	....	....
महावीर	....	....

मेघनाथ	....	....
आजीवन	....	....
यशप्राप्त	....	....
पुस्तकालय	....	....
दालरोटी	....	....

2. निम्नलिखित विग्रहों के समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए—

विग्रह	समस्त पद	समास
पाँच नेत्रों का समाहार		
परम है जो आनंद		
जल की धारा		
गृह में प्रवेश		
कमल के समान नयन		
हानि या लाभ		
यश को प्राप्त		

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. परस्पर संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक स्वतंत्र सार्थक पदों के संक्षिप्त रूप को क्या कहते हैं—
   (क) उपसर्ग (ख) प्रत्यय (ग) समास (घ)वाक्य
2. जिस समास का पहला पद अव्यय हो, उसे कहते हैं—
   (क) बहुव्रीहि समास (ख) द्वंद्व (ग) अव्ययीभाव समास (घ) तत्पुरुष समास
3. उभय पद की प्रधानता किस समास में होती है—
   (क) तत्पुरुष (ख) द्वंद्व (ग) अव्ययीभाव समास (घ) बहुव्रीहि
4. विशेष्य, विशेषण भाव को दर्शाने वाले समास को कहते हैं—
   (क) नञ (ख) द्विगु (ग) कर्मधारय (घ) बहुव्रीहि
5. 'दीनानाथ' शब्द का समास विग्रह होगा—
   (क) दीनों का नाथ (ख) दीननाथ (ग) दिननाथ (घ) दीर्घनाथ
6. 'प्रेम से आतुर' का समस्त पद होगा—
   (क) प्रेमपूर्ण (ख) प्रेम सागर (ग) प्रेमनाथ (घ) प्रेमातुर
7. 'गुणों से हीन' का सामासिक पद होगा—
   (क) गुणी (ख) गुणवान (ग) गुणरहित (घ) गुणहीन
8. 'बेकाम' शब्द का समास विग्रह होगा—
   (क) कामवाला (ख) काम न करनेवाला (ग) बिना काम के (घ) कर्मठ

विचार विश्लेषण

1. समास कितने प्रकार के होते हैं?
2. कर्मधारय समास किसे कहते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
3. द्विगु समास किसे कहते हैं? उदाहरण सहित बताइए।
4. अव्ययीभाव समास में कौन सा पद प्रधान होता है?
5. सामासिक पद किसे कहते हैं?
6. समास किसे कहते हैं? बहुव्रीहि समास के उदाहरण बताइए।
7. समास विग्रह किसे कहते हैं? किसी एक समास का नाम तथा उसका एक उदाहरण लिखिए।

प्रोजेक्ट वर्क

1. पठित, पाठों से सामासिक पदों का संकलन तैयार करके चार्ट पेपर पर प्रस्तुत करें।
2. समास के भेदों को वृक्ष शैली में चार्ट पेपर पर प्रस्तुत करें।

इकाई 7

संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया-विशेषण, वचन, लिंग तथा काल को पहचानना

7.1 संज्ञा एवं इसके प्रकार
7.2 सर्वनाम एवं इसके प्रकार
7.3 क्रिया, धातु एवं इसके भेद
7.4 कर्म के आधार पर क्रिया भेद
7.5 विशेषण एवं इसके प्रकार
7.6 क्रिया विशेषण एवं इसके भेद
7.7 वचन एवं इसके प्रकार
7.8 लिंग एवं इसके प्रकार
7.9 काल एवं इसके प्रकार

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु, संज्ञा की अवधारणा को समझ लेते हैं।
2. प्रशिक्षु, संज्ञा के विभिन्न प्रकारों को जान लेते हैं तथा अपने आस–पास की वस्तुओं मे निहित संज्ञा पद को पहचान लेते हैं।
3. विद्यालयीय बच्चों को संज्ञा प्रकरण समझाने की विधियों/गतिविधियों से अवगत करा लेते हैं।
4. बच्चों मे संज्ञा पदों को पहचानने व उनमें विभेद करने की क्षमता का विकास कर लेते हैं।

हम अपने दैनिक जीवन में अनेक तरह की वस्तुओं का प्रयोग करते हैं; जैसे– पुस्तक, कलम, बर्तन, कपड़ा, टी०वी०, पंखा, आदि। हम जिस स्थान पर रहते हैं, वहाँ भी हम अनेक व्यक्तियों (जैसे– माता–पिता, भाई–बहन आदि और उनका कुछ न कुछ नाम होता है; जैसे– मोहन, गीता, अब्दुल, गुरुमीत), जीव–जंतुओं (तोता, कौवा, गौरैया, गाँव, भैंस आदि), वनस्पतियों इत्यादि से घिरे रहते हैं। इस प्रकार हम जिन भी वस्तुओं एवं व्यक्तियों से घिरे हैं, उन सबका कुछ न कुछ नाम होता है तथा हर वस्तु अपने नाम से ही पहचानी जाती है।

गतिविधि

गतिविधि का नाम : शब्द अंत्याक्षरी

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : शब्द चार्ट।

उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

❖ प्रशिक्षक, प्रशिक्षुओं को पंक्तिबद्ध होकर बैठने का निर्देश देंगे। अब प्रशिक्षक, प्रशिक्षुओं के बीच शब्द अंत्याक्षरी खेल का आयोजन करेंगे। इस खेल में पहला प्रशिक्षु कोई शब्द बोलेगा। उसके बाद अगला प्रशिक्षु पहले शब्द के अंतिम वर्ण से प्रारंभ होने वाले नए शब्द को बोलेगा।

❖ प्रशिक्षक प्रत्येक शब्द को श्यामपट्ट पर लिखतें रहेंगे। यह क्रम अंतिम प्रशिक्षु तक चलेगा। इस प्रकार हमारे पास श्यामपट्ट पर ढेर सारे शब्द होंगे। अब प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से वस्तुओं के नाम से संबंधित शब्दों को पहचानने को कहेंगे एवं चिह्नित वस्तु के नाम को लाल रंग से घेर देंगे। फिर इसी प्रकार व्यक्तियों के नाम को हरे रंग, स्थानों के नाम को नीले रंग से घेर देंगे अंत में तीन सूची बनाएँगे–

➢ व्यक्तियों के नाम
➢ वस्तुओं के नाम
➢ स्थानों के नाम

अंत में प्रशिक्षुओं को बताएँगे कि किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान एवं भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं अर्थात जिस नाम से किसी की पहचान होती है उसे ही संज्ञा कहते हैं।

प्रस्तुतीकरण

किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान एवं भाव के नाम को 'संज्ञा' कहते हैं; जैसे–

- व्यक्ति का नाम– राम, श्याम, सीता, गीता आदि।
- वस्तु का नाम– कार, कलम, पुस्तक आदि।
- स्थान का नाम– वाराणसी, लखनऊ, प्रयागराज आदि।
- भाव का नाम–सुख, दुख, गर्मी, सर्दी, बुढ़ापा आदि।

7.1 संज्ञा एवं इसके प्रकार

निम्नलिखित संकेतों के माध्यम से हम 'संज्ञा' पदों को आसानी से समझ सकते हैं–

व्यक्ति ने जाति एवं समूह के प्रति अपनी भावना को द्रव्य देकर व्यक्त किया।

व्यक्ति ↓ व्यक्तिवाचक संज्ञा
जाति ↓ जातिवाचक संज्ञा
समूह ↓ समूहवाचक संज्ञा
भावना ↓ भाववाचक संज्ञा
द्रव्य ↓ द्रव्यवाचक संज्ञा

इस प्रकार संज्ञा के पाँच प्रकार होते हैं–

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा
2. जातिवाचक संज्ञा
3. समूहवाचक संज्ञा
4. भाववाचक संज्ञा
5. द्रव्यवाचक संज्ञा।

व्यक्तिवाचक संज्ञा– किसी व्यक्ति, वस्तु एवं स्थान विशेष के नाम को 'व्यक्तिवाचक' संज्ञा कहते हैं।

जैसे– सोहन– व्यक्ति विशेष का नाम
चेतक– घोड़ा विशेष का नाम
ताजमहल– इमारत विशेष का नाम
गंगा– नदी विशेष का नाम
हिमालय– पर्वत विशेष का नाम।

जातिवाचक संज्ञा– ऐसा शब्द जिससे समान धर्म, व्यक्ति, वस्तु एवं स्थान की जाति का बोध हो, 'जातिवाचक' संज्ञा कहलाता है।

जैसे– 'मनुष्य' शब्द संपूर्ण मानव जाति का बोधक है न कि किसी व्यक्ति विशेष का; अतः जातिवाचक संज्ञा है। अन्य उदाहरण– देवता, नगर, नदी, पर्वत, कुत्ता, घोड़ा, इत्यादि।

भाववाचक संज्ञा– किसी व्यक्ति, वस्तु एवं स्थान इत्यादि के गुण–धर्म एवं अनुभूति के नाम को 'भाववाचक' संज्ञा कहते हैं।

जैसे– हर्ष, विषाद, ईमानदारी, प्रेम, सौंदर्य, मानवता इत्यादि।

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
राम (ईश्वर विशेष) पिंकू (मानव विशेष) भारत (राष्ट्र विशेष) तुलसीदास (कवि विशेष)	ईश्वर (समस्त ईश्वर) मानव (समस्त मानव) राष्ट्र (समस्त राष्ट्र) कवि (समस्त कवि)	ईश्वरत्व (गुण–धर्म) मानवता (गुण–धर्म) राष्ट्रीयता (गुण–धर्म) कवित्व (गुण–धर्म)

समूहवाचक संज्ञा– व्यक्तियों, वस्तुओं एवं स्थानों के समूह को'' समूहवाचक संज्ञा' कहते हैं।

जैसे– सेना – सैनिकों का समूह।
कक्षा – विद्यार्थियों का समूह।
दक्षेस – राष्ट्रों का समूह इत्यादि।

द्रव्य/पदार्थ वाचक संज्ञा– वे शब्द जो अन्य वस्तुओं के निर्माण में प्रयुक्त होने वाले पदार्थों के नाम के बोधक हों, 'द्रव्यवाचक' या 'पदार्थवाचक' संज्ञा कहलाते हैं।

जैसे– लोहा, सोना प्लास्टिक, लकड़ी इत्यादि।

गतिविधि

गतिविधि का नाम : संज्ञा के प्रकारों की पहचान

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : शब्द चार्ट।

उद्देश्य– विषयवस्तु की विस्तृत समझ विकसित करना।

❖ प्रशिक्षक एक बॉक्स में कुछ पर्चियों पर व्यक्तियों, वस्तुओं, स्थानों, समूहों, भावनाओं इत्यादि के नाम लिखकर रख लेंगे। फिर प्रशिक्षक एक–एक पर्ची उठाकर उसमें लिखे शब्दों को पढ़ेंगे और प्रशिक्षुओं से बताने के लिए कहेंगे कि पढ़ा गया शब्द किस प्रकार की संज्ञा है? सबसे पहले उत्तर देने वाले प्रशिक्षु को 1 अंक मिलेगा। इस प्रकार सर्वाधिक अंक अर्जित करने वाला प्रशिक्षु विजेता होगा।

बोध परीक्षण

1. संज्ञा किसे कहते हैं?
2. संज्ञा के कितने प्रकार होते हैं?
3. निम्नलिखित में संज्ञा के कौन–कौन से प्रकार हैं–
   मिठास, विशेषण, आग, हाथी, कठिनाई।

समेकन

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कोई भी शब्द जो किसी भी प्रकार के 'नाम' का बोधक हो; 'संज्ञा' कहलाता है। 'संज्ञा' पाँच प्रकार की होती हैं– व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, समूहवाचक, भाववाचक एवं पदार्थ/द्रव्यवाचक। व्यक्तिवाचक, व्यक्ति के अलावा वस्तुओं एवं स्थानों, पशु–पक्षियों के भी विशिष्ट इकाई का नाम होता है, जबकि जातिवाचक संज्ञा संपूर्ण या समष्टि जाति का। समूहवाचक संज्ञा एक समूह की एवं भाववाचक संज्ञा भावों एवं अमूर्त गुण–धर्मों की बोधक होती है। पदार्थवाचक संज्ञा उन पदार्थों की बोधक है जिससे अन्य वस्तुएँ बनती हैं।

आकलन

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) किसी व्यक्ति, वस्तु एवं स्थान के .... को संज्ञा कहते हैं।
(ख) पढ़ाई .... संज्ञा है।
(ग) संज्ञा के .... प्रकार हैं।
(घ) भाव के अलावा किसी व्यक्ति या वस्तु के .... भी भाववाचक संज्ञा के अंतर्गत आते हैं।

2. सुमेलित कीजिए–

शब्द	**संज्ञा**
रहीम	भाववाचक
तारे	समूहवाचक
दूध	जातिवाचक
लेखक	व्यक्तिवाचक
बहादुरी	द्रव्यवाचक

3. सत्य/असत्य पहचानें–

(क) जातिवाचक संज्ञा में भिन्न धर्म की वस्तुएँ आती हैं। (सत्य/असत्य)
(ख) मानव समूहवाचक संज्ञा है। (सत्य/असत्य)
(ग) पशुता जातिवाचक संज्ञा है। (सत्य/असत्य)
(घ) 'राम' व्यक्तिवाचक संज्ञा है। (सत्य/असत्य)

स्व आकलन

1. निम्नलिखित में जातिवाचक संज्ञा है–
(क) कामधेनु (ख) ऐरावत
(ग) चेतक (घ) गाय
2. अच्छाई, मानवता, बचपन किस संज्ञा के उदाहरण हैं–
(क) जातिवाचक (ख) भाववाचक
(ग) व्यक्तिवाचक (घ) पदार्थवाचक
3. 'मानव' शब्द के लिए उपयुक्त 'भाववाचक संज्ञा' का चयन कीजिए–
(क) मानवीय (ख) मानुष
(ग) मानवी (घ) मानवता
4. जातिवाचक संज्ञा शब्द है–
(क) फूल (ख) प्रसन्नता
(ग) लोहा (घ) सेना
5. 'जटिल' विशेषण के लिए निम्नलिखित में से उपयुक्त संज्ञा होगी–
(क) पाठ (ख) सड़क
(ग) समस्या (घ) किताब

6. निम्नलिखित में कौन–सा शब्द संज्ञा है–
   (क) वे (ख) तेज
   (ग) ऊँचा (घ) आकाश
7. राष्ट्र की भाववाचक संज्ञा है–
   (क) राष्ट्री (ख) राष्ट्रीय
   (ग) राष्ट्र (घ) राष्ट्रीयता
8. संज्ञा का प्रकार नहीं है–
   (क) व्यक्तिवाचक (ख) जातिवाचक
   (ग) देशवाचक (घ) भाववाचक
9. 'हरियाली' है–
   (क) जातिवाचक संज्ञा (ख) समूहवाचक संज्ञा
   (ग) भाववाचक संज्ञा (घ) विशेषण
10. 'बुढ़ापा' शब्द में कौन–सी संज्ञा है–
   (क) जातिवाचक संज्ञा (ख) भाववाचक संज्ञा
   (ग) व्यक्तिवाचक संज्ञा (घ) इनमें से कोई नहीं
11. संज्ञाओं के साथ आने वाली विभक्तियों को क्या कहते हैं–
   (क) संश्लिष्ट (ख) विश्लिष्ट
   (ग) श्लिष्ट (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं
12. 'सुंदरता' में संज्ञा हैं–
   (क) व्यक्तिवाचक (ख) समूहवाचक
   (ग) जातिवाचक (घ) भाववाचक
13. 'मित्र' की भाववाचक संज्ञा है–
   (क) मित्रवत (ख) मीत
   (ग) मित्रता (घ) मैत्री
14. 'बाजार' से किस संज्ञा का बोध होता है–
   (क) भाववाचक (ख) समूहवाचक
   (ग) जातिवाचक (घ) व्यक्तिवाचक
15. 'गरीबों की सहायता करो।' में 'गरीब' शब्द क्या है–
   (क) विशेषण (ख) विशेष्य
   (ग) जातिवाचक संज्ञा (घ) भाववाचक संज्ञा
16. 'जातिवाचक' संज्ञा है–
   (क) कामायनी (ख) आम
   (ग) रसीला (घ) वकील
17. निम्नलिखित विकल्पों में से किस विकल्प में सभी व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ हैं–
   (क) राम, रामचरितमानस, गंगा (ख) कृष्ण, कामायनी, मिठास
   (ग) लखनऊ, आम, बुढ़ापा (घ) ममता, वकील, पुस्तक
18. आपका घर जिस शहर में है, उस शहर का नाम संज्ञा का कौन–सा भेद सूचित करता है ?
   (क) व्यक्तिवाचक (ख) जातिवाचक
   (ग) समूहवाचक (घ) भाववाचक
19. बड़े–बड़ाई ना करें, बड़े न बोले बोल।
   रहिमन हीरा कब कहे, लाख टके का मोल।।

पंक्तियों में 'बड़े' शब्द का प्रयोग किस रूप में हुआ है–

(क) विशेषण (ख) संज्ञा

(ग) सर्वनाम (घ) क्रिया–विशेषण

20. 'हमारे देश में जयचंदों की कमी नहीं है','जयचंदों' शब्द संज्ञा के किस भेद के अंतर्गत आता है–

(क) व्यक्तिवाचक (ख) समूहवाचक

(ग) जातिवाचक (घ) भाववाचक

विचार विश्लेषण

1. संज्ञा किसे कहते हैं? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
2. 'भाववाचक' संज्ञा किसे कहते हैं? उदाहरण सहित लिखिए।

प्रोजेक्ट वर्क

किसी हिन्दी दैनिक समाचार पत्र के संपादकीय पृष्ठ के अंश को पोस्टर पर चिपकाते हुए उसमें उल्लिखित संज्ञा शब्दों को रेखांकित करते हुए संज्ञा के समस्त भेदों की सारिणी बनाकर उन्हें सुसंगत कॉलम में लिखिए।

7.2 सर्वनाम एवं इसके प्रकार

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. सर्वनाम की अवधारणा को समझ लेते हैं।
2. सर्वनाम के विभिन्न प्रकारों को जान लेते हैं।
3. अपने आस–पास की वस्तुओं मे निहित सर्वनाम पद को पहचान लेते हैं।
4. सर्वनाम प्रकरण को समझाने की विधियों/गतिविधियों का प्रयोग कर लेते हैं।
5. बच्चों में सर्वनाम पदों को पहचानने एवं उनमें विभेद करने की क्षमता का विकास कर लेते हैं।

हम अपने दैनिक जीवन में अनेक लोगों के संपर्क में आते हैं जिनसे हमारा कुछ न कुछ संबंध होता है। हम इन्हें इनके नाम विशेष से जानते हैं। साधारण बातचीत में इनका जिक्र आता है तो हम अक्सर इनके नाम का संबोधन न करके आप, तुम, वे आदि शब्दों का प्रयोग करते हैं। हमारे द्वारा व्यक्ति विशेष के लिए प्रयुक्त ये सभी शब्द सर्वनाम की श्रेणी में आते हैं।

गतिविधि

गतिविधि का नाम : आइए पढ़ते हैं।
समय : 10 मिनट
सहायक सामग्री : गद्यांश लिखी हुई पट्टियाँ।
उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं को गद्यांश लिखी हुई पट्टियाँ पढ़ने के लिए देंगे।

- **पट्टी 1–** राम अयोध्या के राजा थे। राम बड़े उदार थे। राम के पिता का नाम दशरथ था।
- **पट्टी 2–** राम अयोध्या के राजा थे। वे बड़े उदार थे। उनके पिता का नाम दशरथ था।

पट्टियाँ पढ़वाने के बाद प्रशिक्षक स्पष्ट करेंगे कि हमने देखा प्रथम गद्यांश में बार–बार संज्ञा के आने से गद्यांश का सौंदर्य नष्ट हो रहा था, जबकि द्वितीय गद्यांश में जब राम के स्थान पर वे, उनके, उनका आदि शब्दों का प्रयोग हुआ तो गद्यांश का सौंदर्य बढ़ गया। इस प्रकार संज्ञा के बदले 'उनके', 'उनका' शब्दों का प्रयोग करना पड़ा।

अब देखते हैं कि प्रथम गद्यांश मे किन–किन संज्ञाओं के बदले किन–किन शब्दों का प्रयोग हुआ है–

गद्यांश 1	गद्यांश 2
राम	वे
राम के	उनके

चूँकि उपर्युक्त उदाहरण में संज्ञा (राम) के स्थान पर क्रमशः 'वे' और 'उनके' शब्दों का प्रयोग हुआ। अतः 'वे' और 'उनके' शब्द 'सर्वनाम' हैं।

प्रस्तुतीकरण

सर्वनाम– संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को 'सर्वनाम' कहते हैं। जैसे– मैं, मेरा, तुम, आप, वह, वे इत्यादि।

सर्वनाम के प्रकार

सर्वनाम के छः प्रकार हैं। जिन्हें निम्न युक्ति के माध्यम से आसानी से याद कर सकते हैं–
युक्ति– **पुरुष निज संबंध में निश्चय–अनिश्चय का प्रश्न करने लगा।**

1. पुरुषवाचक सर्वनाम
2. निजवाचक सर्वनाम
3. संबंधवाचक सर्वनाम
4. निश्चयवाचक सर्वनाम
5. अनिश्चयवाचक सर्वनाम
6. प्रश्नवाचक सर्वनाम

पुरुषवाचक सर्वनाम– ऐसे सर्वनाम जिनका प्रयोग वक्ता, श्रोता या जिसके विषय में बात हो रही हो, के लिए किए जाते हैं, 'पुरुषवाचक' सर्वनाम कहलाते हैं।
पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद हैं–

- उत्तम पुरुष (वक्ता)– मैं, हम
- मध्यम पुरुष (श्रोता)– तुम, आप
- अन्य पुरुष (जिसके बारे में बात की जाय)– वह, वे इत्यादि।

निजवाचक सर्वनाम– जो सर्वनाम स्वयं या निज के बोधक हों, उन्हें 'निजवाचक' सर्वनाम कहते हैं; जैसे– आप, अपना।

- मैं अपने आप वहाँ से आया हूँ।
- आप भला तो जग भला।
- यही पशु प्रवृत्ति है कि आप–आप ही चरें।

नोट– सामान्यतया **आप** सर्वनाम का प्रयोग मध्यम पुरुष के लिए किया जाता है लेकिन निजवाचक सर्वनाम में यह स्वयं का बोध कराता है।

संबंधवाचक सर्वनाम– वे सर्वनाम जो अन्य संज्ञा या सर्वनाम के साथ संबंध व्यक्त करें, 'संबंधवाचक' सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे– उनका, उनके, मेरा, हमारा, आपका, मेरी, आपकी, हमारी, उनकी इत्यादि। अब इन्हें वाक्य में प्रयोग करके देखते हैं–

- यह मेरी कार है।
- वह आपका भाई है।

निश्चयवाचक सर्वनाम– जो सर्वनाम किसी निश्चित वस्तु, व्यक्ति, स्थान अथवा घटना का बोध कराते हैं; उन्हें 'निश्चयवाचक' सर्वनाम कहते हैं; जैसे–

- वह भेड़िया नहीं, कुत्ता है।
- यह मेरी घड़ी है।

नोट– 'वह' और 'यह' दोनों पुरुषवाचक सर्वनाम भी हैं किंतु पुरुषवाचक सर्वनाम के रूप में जहाँ ये किसी संज्ञा के बदले प्रयुक्त होते हैं वहीं निश्चयवाचक सर्वनाम के रूप में ये सीधे किसी निश्चित व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा घटना की ओर संकेत करते हैं; जैसे–

- ➢ रीता मेरी बहन है। वह मुम्बई में रहती है। (अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम)
- ➢ वह मेरी बहन है। (निश्चयवाचक सर्वनाम)

(इन सर्वनामों को **संकेतवाचक सर्वनाम** भी कहते हैं।)

अनिश्चयवाचक सर्वनाम– जो सर्वनाम किसी निश्चित वस्तु, व्यक्ति, स्थान अथवा घटना का बोध नहीं कराते हैं, उन्हें 'अनिश्चयवाचक' सर्वनाम कहते हैं; जैसे–

- बाहर कोई आया है।
- दूध में कुछ गिरा है।
- किसी ने मेरी कलम चुरा ली है।
- कहीं वर्षा हो रही है।

प्रश्नवाचक सर्वनाम– जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग प्रश्न पूछने हेतु किया जाता है, उन्हें 'प्रश्नवाचक' सर्वनाम कहते हैं; जैसे– क्या, क्यों, किसे, किसने, कहाँ, कब, कितने, कैसे इत्यादि।

- प्लेट किसने तोड़ी?
- राकेश कहाँ गया?

दूसरे शब्दों में **प्रश्नवाचक शब्द ही प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।**

बोध परीक्षण

1. सर्वनाम को परिभाषित कीजिए।
2. सर्वनाम के कितने प्रकार होते हैं? समस्त प्रकारों के नाम लिखिए।
3. निजवाचक सर्वनाम को स्पष्ट कीजिए।

समेकन

इस प्रकार इस प्रशिक्षण सत्र में हमने सर्वनाम की परिभाषा एवं स्वरूप तथा सर्वनाम के समस्त प्रकारों का अध्ययन किया। सर्वनाम संज्ञा के प्रतिस्थानी होते हैं। इस अध्याय में सर्वनाम के प्रकार याद रखने के लिए बताई गयी युक्ति –**"पुरुष निज संबंध में निश्चय अनिश्चय का प्रश्न करने लगा"** एक प्रकार से दार्शनिक वाक्य प्रतीत हो रहा है किंतु इसमें सर्वनाम के छः प्रकार निहित हैं– पुरुषवाचक, निजवाचक, संबंधवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक एवं प्रश्नवाचक। आशा है आप सभी ने इन प्रकारों को विधिवत समझ लिया होगा।

स्व आकलन

1. **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–**

(क) आजकल..............................कहाँ रहते हैं।	(मैं/आप)
(ख) ....मेरी पुस्तक है।	(कोई/यह)
(ग) दाल में ....गिर गया है।	(कुछ/कोई)
(घ) भारत का प्रधानमंत्री ....है।	(क्या/कौन)

2. सुमेलित कीजिए–

शब्द	**सर्वनाम**
(क) वह/यह/ये/वे	(प्रश्नवाचक सर्वनाम)
(ख) अपने आप	(पुरुषवाचक सर्वनाम)
(ग) क्या/कौन/किसकी	(निजवाचक सर्वनाम)
(घ) मेरा, उसकी	(संबंधवाचक सर्वनाम)

3. सत्य/असत्य पहचानें–

(क) निश्चयवाचक सर्वनाम का उपयोग व्यक्ति या वस्तु की निकटता या दूरी के संकेत के लिए किया जाता है। (सत्य/असत्य)

(ख) जिन सर्वनाम शब्दों से प्रश्न का बोध होता है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। (सत्य/असत्य)

(ग) संबंधवाचक सर्वनाम में आप का प्रयोग करते हैं। (सत्य/असत्य)

(घ) 'मैं' शब्द अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम है। (सत्य/असत्य)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द कहलाते हैं–
   (क) संज्ञा (ख) विशेषण
   (ग) सर्वनाम (घ) क्रिया–विशेषण।
2. सर्वनाम के कितने भेद हैं?
   (क) आठ (ख) छः
   (ग) बारह (घ) इनमें से कोई नहीं।
3. निश्चयवाचक सर्वनाम है–
   (क) यह, वह (ख) कोई, कुछ
   (ग) आप (घ) मैं, तू।
4. '<u>जिसकी</u> लाठी, <u>उसकी</u> भैंस', में रेखांकित शब्द है–
   (क) निश्चयवाचक सर्वनाम (ख) निजवाचक सर्वनाम
   (ग) पुरुषवाचक सर्वनाम (घ) संबंधवाचक सर्वनाम।
5. 'यह काम मैं ही कर लूँगा' पंक्तियों में है–
   (क) संबंधवाचक सर्वनाम (ख) निजवाचक सर्वनाम
   (ग) निश्चयवाचक सर्वनाम (घ) पुरुषवाचक सर्वनाम।
6. 'संज्ञा' के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द को क्या कहते हैं–
   (क) सर्वनाम (ख) विशेषण
   (ग) क्रिया (घ) अव्यय।
7. 'मुझे' किस प्रकार का सर्वनाम है–
   (क) उत्तम पुरुष (ख) मध्यम पुरुष
   (ग) अन्य पुरुष (घ) इनमें से कोई नहीं।

8. सर्वनाम के प्रकार या भेद हैं–

(क) 4 (ख) 5

(ग) 6 (घ) 7

9. निश्चयवाचक सर्वनाम कौन–सा है–

(क) क्या (ख) कुछ

(ग) कौन (घ) यह

10. इनमें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कौन–सा है–

(क) कौन (ख) जो

(ग) कोई (घ) वह

11. 'यह' घोड़ा अच्छा है' इस वाक्य में 'यह' क्या है–

(क) संज्ञा (ख) सर्वनाम

(ग) विशेषण (घ) सार्वनामिक विशेषण।

12. 'जो', 'सो' के प्रयोग से संबंधित सर्वनाम को पहचाने–

(क) प्रश्नवाचक (ख) पुरुषवाचक

(ग) निजवाचक (घ) संबंधवाचक।

13. 'मैं' उत्तम पुरुष एक वचन सर्वनाम का उत्तम पुरुष बहुवचन सर्वनाम रूप है–

(क) तू (ख) तुम

(ग) हम (घ) तुम लोग।

14. निजवाचक सर्वनाम के संबंधवाची रूप के एकवचन की पहचान करें–

(क) आप (ख) स्वयं

(ग) अपना (घ) सभी गलत।

15. यह मकान मेरे भाई का है। रेखांकित पद है–

(क) संज्ञा (ख) संकेतवाचक सर्वनाम

(ग) विशेषण (घ) क्रिया–विशेषण।

16. 'जैसा करोगे, वैसा भरोगे'–में कौन सा सर्वनाम है–

(क) पुरुषवाचक (ख) प्रश्नवाचक

(ग) संबंधवाचक (घ) निजवाचक।

17. हिन्दी में अन्य पुरुष के निश्चयवाचक सर्वनाम का अविकारी रूप है–

(क) वह (ख) उन

(ग) उस (घ) उन्हें

18. निम्न में सर्वनाम शब्द है–

(क) नींद (ख) रोग

(ग) सफाई (घ) कौन

19. 'मुझे' किस प्रकार का सर्वनाम है?

(क) उत्तम पुरुष (ख) मध्यम पुरुष

(ग) अन्य पुरुष (घ) इनमें से कोई नहीं।

20. कौन–सा सर्वनाम का भेद नहीं है ?

(क) पुरुषवाचक (ख) गुणवाचक

(ग) निजवाचक (घ) प्रश्नवाचक।

विचार विश्लेषण

1. सर्वनाम किसे कहते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
2. पुरुषवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं? उदाहरण सहित लिखिए।
3. संबंधवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

प्रोजेक्ट कार्य

सर्वनाम के अध्यापन हेतु किसी उपयोगी मॉडल का निर्माण कीजिए।

7.3 क्रिया, धातु एवं उनके भेद

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु, क्रिया की अवधारणा समझ लेते हैं।
2. प्रशिक्षु, क्रिया के भेदों को पहचान लेते हैं।
3. प्रशिक्षु, कर्ता के अनुसार क्रिया का प्रयोग कर लेते हैं।
4. प्रशिक्षु, बच्चों को क्रिया व उसके भेदों को पहचानने में सक्षम बना लेते हैं।
5. प्रशिक्षु, क्रिया के शिक्षण में विभिन्न गतिविधियों का प्रयोग कर लेते हैं।

क्रियाशीलता जीवंतता की निशानी है। मनुष्य समेत संपूर्ण जीव–जंतु आजीवन कुछ न कुछ कार्य करता रहता है। मनुष्य अथवा किसी भी जीव–जंतु, यहाँ तक कि निर्जीव यंत्रों द्वारा किये गये कार्य को ही क्रिया कहते हैं।

गतिविधि

गतिविधि का नाम : आओ क्रिया पहचानें
समय : 10 मिनट
सहायक सामग्री : स्वयं प्रशिक्षु।
उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

- इस गतिविधि के अंतर्गत प्रशिक्षक विभिन्न प्रशिक्षुओं को अलग–अलग कार्य (चलना, बोलना, हँसना, गाना इत्यादि) करने को कहेंगें। अन्य प्रशिक्षुओं को उनके द्वारा किए गए कार्यों को पहचानने को कहेंगे। प्रशिक्षुओं द्वारा दिए गए उत्तरों को लिखते जाएँगे;
- जैसे– हँसना, बोलना, लिखना, चलना इत्यादि। फिर इन शब्दों पर चर्चा करते हुए ''क्रिया'' प्रकरण पर विषय प्रवेश करेंगे।

प्रस्तुतीकरण

क्रिया– "कर्ता द्वारा जो कार्य किया जाता है, उसे क्रिया कहते हैं।"

- रमेश (कर्ता) द्वारा दौड़ने (क्रिया) का कार्य; जैसे– रमेश **दौड़ता** है।
- सीमा (कर्ता) द्वारा नाचने (क्रिया) का कार्य; जैसे– सीमा **नाचती** है।
- रीता (कर्ता) द्वारा पढ़ने (क्रिया) का कार्य; जैसे– रीता **पढ़ती** है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि जिस शब्द से किसी काम का करना या होना इंगित हो, उसे क्रिया कहते हैं। जैसे—चलना, दौड़ना, नाचना, पढ़ना, इत्यादि।

धातु एवं इसके भेद

क्रिया का मूल रूप 'धातु' है। धातु से तात्पर्य है कि जिन मूल अक्षरों से क्रियाएँ बनती हैं, उन्हें 'धातु' कहते हैं। जैसे—पढ़ना शब्द को यदि लें इसमें 'पठ' धातु है और ना प्रत्यय है। इसी तरह खाना में 'खा' धातु है और 'ना' प्रत्यय है।

व्युत्पत्ति अथवा शब्द निर्माण की दृष्टि से धातुएँ दो प्रकार की होती हैं—

1. मूल धातु
2. यौगिक धातु

- मूल धातु स्वतंत्र होती है। जैसे—खा, देख, पी इत्यादि।
- यौगिक धातु किसी प्रत्यय के योग से बनती है। जैसे—खाना से खिला, पढ़ना से पढ़ा। यह मुख्यतः तीन प्रकार से बनती है।
  - धातु में प्रत्यय लगाने से, अकर्मक से सकर्मक और प्रेरणार्थक धातु बनती है।
  - कई धातुओं को संयुक्त करने से संयुक्त धातु बनती है।
  - संज्ञा या विशेषण से नामधातु बनती है।

7.4 कर्म एवं प्रयोग के आधार पर क्रिया के भेद

कर्म के आधार पर क्रिया के निम्नलिखित भेद होते हैं—

- सकर्मक क्रिया
- अकर्मक क्रिया
- द्विकर्मक क्रिया

सकर्मक क्रिया— जिन क्रियाओं का प्रभाव कर्ता पर नहीं बल्कि कर्म पर पड़ता है, वे 'सकर्मक क्रियाएँ' कहलाती हैं। इन क्रियाओं में कर्म की अपेक्षा या संभावना आवश्यक है। उदाहरण— मैं लेख लिखता हूँ। मीरा आम खाती है। भौंरा फूलों का रस पीता है।

अकर्मक क्रिया— जिन क्रियाओं का व्यापार और फल स्वयं कर्ता पर पड़े, वे अकर्मक क्रिया कहलाती हैं। उदाहरण— राकेश रोता है। बस चलती है।

द्विकर्मक क्रिया — जिन क्रियाओं के दो कर्म होते हैं, उन्हें द्विकर्मक क्रिया कहते हैं। उदाहरण— मैंने राम को पुस्तक दी। श्याम ने राम को रुपए दिए। उपर्युक्त वाक्यों में देना क्रिया के दो कर्म हैं। अतः देना द्विकर्मक क्रिया है।

प्रयोग के आधार पर क्रिया भेद

- प्रेरणार्थक क्रिया
- पूर्वकालिक क्रिया
- यौगिक क्रिया

- संयुक्त क्रिया
- नामधातु
- क्रियार्थक संज्ञा
- सहायक क्रिया

प्रेरणार्थक क्रिया– जिन क्रियाओं से इस बात का बोध हो कि कर्ता स्वयं कार्य न कर, किसी दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, वे 'प्रेरणार्थक' क्रियाएँ कहलाती हैं; जैसे–

- काटना से कटवाना
- करना से कराना या करवाना
- अन्य उदाहरण– मोहन रमेश से पत्र लिखवाता है। इस वाक्य में मोहन (कर्ता) स्वयं पत्र न लिखकर, रमेश को पत्र लिखने की प्रेरणा देता है।

पूर्वकालिक क्रिया– जब कर्ता एक क्रिया समाप्त कर उसी क्षण दूसरी क्रिया में प्रवृत्त होता है, तब पहली क्रिया 'पूर्वकालिक क्रिया' कहलाती है। जैसे– उसने नहाकर भोजन किया। इसमें नहाकर पूर्वकालिक क्रिया है क्योंकि इसमें नहाने की क्रिया की समाप्ति के साथ ही भोजन करने की क्रिया का बोध होता है।

यौगिक क्रिया– दो या दो से अधिक धातुओं और शब्दों के संयोग से या धातु में प्रत्यय लगाने से जो क्रिया बनती है उसे 'यौगिक क्रिया' कहा जाता है। जैसे–रोना–धोना, चलना–फिरना।

संयुक्त क्रिया– जो क्रिया दो या दो से अधिक धातुओं के मेल से बनती है, उसे 'संयुक्त क्रिया' कहते हैं। जैसे–घनश्याम **रो चुका**। किशोर **रोने लगा**। इन वाक्यों में रो चुका, रोने लगा संयुक्त क्रियाएँ हैं।

नाम धातु– जो धातु, संज्ञा या विशेषण से बनती है, उसे 'नाम धातु' कहते हैं। जैसे– बात से बतियाना, हाथ से हथियाना, ठंड से ठंडाना।

क्रियार्थक संज्ञा–जब क्रिया, संज्ञा की तरह व्यवहार में आए तब वह 'क्रियार्थक संज्ञा' कहलाती है। जैसे– टहलना स्वास्थ्य के लिए अच्छा है।

सहायक क्रिया– सहायक क्रियाएँ मुख्य क्रिया के रूप में, अर्थ को स्पष्ट और पूरा करने में सहायक होती हैं। कभी एक क्रिया, कभी एक से अधिक क्रिया, सहायक क्रिया होती है। हिन्दी में इन क्रियाओं का व्यापक प्रयोग होता है। इनके हेर–फेर से क्रिया का रूप बदल जाता है। जैसे–

- वह खाता है।
- मैंने पढ़ा था।
- तुम जगे हुए थे।
- वे सुन रहे थे।

इनमें खाना, पढ़ना, जगना और सुनना मुख्य क्रियाएँ हैं क्योंकि यहाँ क्रियाओं के अर्थ की प्रधानता है। शेष क्रियाएँ जैसे हैं, था, हुए थे, रहे थे सहायक क्रियाएँ हैं। यह मुख्य अर्थ को स्पष्ट और पूरा करती हैं।

गतिविधि

❖ इस गतिविधि के तहत प्रशिक्षक कम से कम 5 प्रशिक्षुओं को बुलाकर बिना बोले किसी क्रिया को प्रदर्शित करने को कहेगा।
❖ अन्य प्रशिक्षुओं को क्रिया पहचानते हुए उसके सकर्मक या अकर्मक होने की पहचान करने को कहेंगे।

गतिविधि का नाम : क्रिया पहचानो।
समय : 10 मिनट
सहायक सामग्री : स्वयं प्रशिक्षु।
उद्देश्य– विषयवस्तु की विस्तृत समझ विकसित करना।

❖ प्रशिक्षुओं के उत्तरों को क्रिया के नाम सहित श्यामपट्ट पर लिखने व उस पर चर्चा करने को कहेंगे कि यह क्यों सकर्मक या क्यों अकर्मक है?

बोध परीक्षण

1. क्रिया को सोदाहरण परिभाषित कीजिए।
2. कर्म के आधार पर क्रिया के कितने भेद होते हैं?
3. प्रेरणार्थक क्रिया किसे कहते हैं?
4. पूर्वकालिक क्रिया किसे कहते हैं?

समेकन

इस प्रकार इस सत्र में हमने क्रिया, क्रिया की परिभाषा, क्रिया के विविध भेदों को सोदाहरण समझने का प्रयास किया। आशा है आप समस्त इस अध्याय में दी गयी गतिविधियों का कक्षा–कक्ष में प्रयोग करते हुए बच्चों में क्रिया की अवधारणा को स्पष्ट कर सकेंगे।

स्व आकलन

1. **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–**
   (क) सोचना .... क्रिया है। (सकर्मक/अकर्मक)
   (ख) सकर्मक क्रिया में .... की संभावना रहती है। (कर्म/क्रिया)
   (ग) .... क्रिया में कर्ता स्वयं कार्य न करके दूसरे से करवाता है। (प्रेरणार्थक/पूर्वकालिक)
   (घ) जिन क्रियाओं में .... कर्म होते हैं,उन्हें द्विकर्मक क्रिया कहते हैं। (एक/दो/तीन/चार)

2. **सुमेलित कीजिए–**

जाना	पूर्वकालिक क्रिया
खेलना	अकर्मक क्रिया
हँसना	सकर्मक क्रिया
आकर	प्रेरणार्थक क्रिया

3. **सत्य–असत्य पहचानिए–**
   (क) कर्ता के स्थान पर प्रयुक्त शब्द क्रिया कहलाता है। (सत्य/असत्य)
   (ख) क्रिया के मूल रूप को 'धातु' कहते है। (सत्य/असत्य)
   (ग) जो 'धातु' संज्ञा या विशेषण से बनती हैं, नाम धातु कहलाती हैं। (सत्य/असत्य)
   (घ) हिन्दी में सहायक क्रिया नहीं होती। (सत्य/असत्य)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नलिखित में से सकर्मक क्रिया है?
   (क) हाथी सो रहा था। (ख) वह छत पर है।
   (ग) हाथी नहाता है। (घ) राम कार चलाता है।
2. निम्नलिखित में प्रेरणार्थक क्रिया है ?
   (क) वह सीता से पत्र लिखवाती है। (ख) तोता उड़ता है।
   (ग) बच्चा सोता है। (घ) खेल खेलता है।
3. अकर्मक वाक्य कौन सा है ?
   (क) बंदर केला खाता है। (ख) सीता ढोलक बजाती थी।
   (ग) ताजमहल आगरा में बना है। (घ) खुशबू पत्र लिख दी थी।
4. निम्नलिखित में से पूर्व कालिक वाक्य है?
   (क) राम गाना गाता है। (ख) रमेश पढ़ाई करता है।
   (ग) सीता खाना खाती है। (घ) मोहन नहाकर चला गया।
5. रमेश कल दिल्ली जाएगा इस वाक्य में **कल** शब्द है?
   (क) संज्ञा (ख) क्रिया विशेषण
   (ग) संज्ञा विशेषण (घ) कर्म
6. अकर्मक क्रिया है?
   (क) खाना (ख) उठना
   (ग) पीना (घ) लिखना
7. सकर्मक क्रिया कौन सी है?
   (क) हरीश बस पर चढ़ गया। (ख) राजू सदा रोता रहता है।
   (ग) केला छत से गिर पड़ा। (घ) सतीश ने केले खरीदे।
8. वह आसमान में उड़ता है निम्न में कौन सी क्रिया है?
   (क) अकर्मक क्रिया (ख) सकर्मक क्रिया
   (ग) प्रेरणार्थक क्रिया (घ) पूर्वकालिक क्रिया
9. चिड़िया आकाश में उड़ रही है इसमें क्रिया है?
   (क) अकर्मक (ख) सकर्मक
   (ग) समाप्ति (घ) समापिक
10. निम्नलिखित में पूर्वकालिक क्रिया?
    (क) भयंकर (ख) उभर कर
    (ग) करती हुई (घ) के रूप में
11. द्विकर्मक क्रिया में होता हैं
    (क) प्रथम कर्म अप्राणी होता है द्वितीय कर्म प्राणीविची होता है।
    (ख) प्रथम कर्म प्राणी वाची होता है और द्वितीय कर्म अप्राणीवाची होता है।
    (ग) प्रथम एवं द्वितीय कर्म अप्राणीवाची होता है।
    (घ) इनमें से कोई नहीं।
12. सकर्मक क्रिया वाला वाक्य छाँटिए।
    (क) राजू सदा रोता रहता है। (ख) हरीश बस पर चढ गया।
    (ग) कैलाश छत से गिर पड़ा। (घ) सतीश ने केले खरीदे।

13. किस वाक्य में सकर्मक क्रिया नहीं है
   (क) बच्चे फिल्म देख रहे हैं। (ख) रजत दूध पी रहा है।
   (ग) मनीषा ने कार खरीदी। (घ) मोर नाचता है।
14. किस वाक्य में अकर्मक क्रिया है?
   (क) ठूँठ खड़ा है। (ख) रजत दूध पी रहा है।
   (ग) हम सिनेमा देखते हैं। (घ) रजनी ने गाना गाया।
15. लोग रामायण पढते हैं मे कौन सी क्रिया हैं?
   (क) सकर्मक (ख) अकर्मक
   (ग) प्रेरणार्थक (घ) कोई नहीं
16. 'कमला ने शांति को पुस्तक दी' में कौन सी क्रिया हैं?
   (क) अकर्मक क्रिया (ख) द्विकर्मक क्रिया
   (ग) संयुक्त क्रिया (घ) कोई नहीं
17. कर्म के आधार पर क्रिया के कितने भेद होते है?
   (क) 1 (ख) 2
   (ग) 3 (घ) 4
18. रचना के आधार पर क्रिया के कितने भेद होते है?
   (क) 5 (ख) 4
   (ग) 6 (घ) 7
19. "माँ ने चिट्ठी लिखवाई" में कौन सी क्रिया है?
   (क) पूर्वकालिक (ख) प्रेरणार्थक
   (ग) सहायक (घ) संयुक्त
20. 'हमें किसी का दिल नहीं दुखाना चाहिए' दुखाना शब्द में कौन सी क्रिया है?
   (क) नाम धातु (ख) प्रेरणार्थक
   (ग) सहायक (घ) संयुक्त

विचार विश्लेषण

1. अकर्मक क्रिया किसे कहते हैं?
2. सकर्मक क्रिया किसे कहते हैं?
3. निम्न में से सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं को पहचानिए–
   खाना, पीना, हँसना, चलना, बोलना, सोना, रोना, मुस्कुराना
4. द्विकर्मक क्रिया किसे कहते हैं?

प्रोजेक्ट कार्य

किसी दैनिक समाचार पत्र में प्रकाशित संपादकीय में से क्रिया पदों को छाँटते हुए उनको सकर्मक, अकर्मक, प्रेरणार्थक, द्विकर्मक एवं पूर्वकालिक क्रिया की श्रेणियों में वर्गीकृत करते हुए लिखिए।

7.5 विशेषण एवं इसके प्रकार

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु, विशेषण की अवधारणा को समझ लेते हैं।
2. प्रशिक्षु, विशेषण के भेदों को पहचान लेते हैं।
3. प्रशिक्षु, विशेषण के अध्यापन की विधियों एवं रोचक गतिविधियों से अवगत हो लेते हैं।
4. प्रशिक्षु, बच्चों को विशेषण व उसके भेदों को पहचानने में सक्षम बना लेते हैं।
5. प्रशिक्षु, विशेषण के शिक्षण में विभिन्न गतिविधियों का प्रयोग कर लेते हैं।

विशेषण भाषा के महत्त्वपूर्ण तत्त्व हैं जो संज्ञाओं और सर्वनामों की विशेषताओं को वर्णित करते हैं। वे वाक्यों में रंग, आकार, संख्या, गुणवत्ता और भावना जोड़ते हैं, जिससे वाक्य अधिक विस्तृत और अभिव्यक्तिपूर्ण बनते हैं। विशेषण संवाद और वर्णनात्मक लेखन को जीवंत बनाते हैं तथा पाठकों या श्रोताओं को एक विस्तृत और समृद्ध अनुभव प्रदान करते हैं। वे व्याकरण की संरचना में भी महत्त्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि वे संज्ञाओं की प्रकृति और कार्यों को स्पष्ट करते हैं तथा संवाद की स्पष्टता और सटीकता में योगदान देते हैं। इस प्रकार, विशेषण भाषा की समृद्धि और अभिव्यक्ति के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

गतिविधि

गतिविधि का नाम : आओ विशेषण पहचानें।
समय : 10 मिनट
सहायक सामग्री : विभिन्न पशु–पक्षियों एवं वस्तुओं के चित्र।
उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

❖ इस गतिविधि के अंतर्गत प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं को विभिन्न प्रकार के चित्र दिखाएँगे; जैसे– काली गाय का चित्र, सफेद घोड़े का चित्र, पांच गेंद का चित्र इत्यादि। प्रशिक्षक चित्र दिखाते समय प्रशिक्षुओं से प्रश्न भी पूछते जाएँगे कि–

- गाय कैसी है?
- गाय किस रंग की है?
- घोड़ा कैसा है?
- घोड़ा किस रंग का है?
- चित्र में कितनी गेंदे हैं? इत्यादि।

प्रशिक्षुओं द्वारा दिए गए उत्तर के आधार पर प्रशिक्षक विशेषण शब्द की अवधारणा को स्पष्ट करेंगे।

प्रस्तुतीकरण

विशेषण

'विशेषण वे शब्द होते हैं जो किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता, अवस्था, गुण, संख्या आदि को व्यक्त करते हैं।' ये शब्द बताते हैं कि कोई व्यक्ति या वस्तु कैसी है?
जैसे– सुंदर लड़की। इसमें **सुंदर** शब्द लड़की की विशेषता बता रहा है।

विशेष्य

विशेषण जिन शब्दों की विशेषता बताते हैं वे विशेष्य कहलाते हैं; जैसे– सुंदर लड़की वाले उदाहरण में लड़की विशेष्य है क्योंकि सुंदर शब्द उसकी विशेषता बता रहा है। चूँकि विशेषण संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताते हैं अतः विशेष्य सदैव संज्ञा या सर्वनाम ही होगा।

विशेषण के प्रकार

विशेषण मुख्यतः चार प्रकार के होते हैं –

- गुणवाचक विशेषण
- परिमाणवाचक विशेषण
- संख्यावाचक विशेषण
- सार्वनामिक विशेषण

गुणवाचक विशेषण– यह विशेषण किसी संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, रूप, रंग, स्वाद आदि का वर्णन करते हैं; जैसे–

- लड़की **सुंदर** है।
- आम **कड़वा** है
- गाय **भूरी** है।
- हाथी बहुत **बड़ा** है।

परिमाणवाचक विशेषण– ये विशेषण संज्ञा की मात्रा या परिमाण का बोध कराते हैं; जैसे–

- घड़े में **भरपूर** पानी है।
- यह **दो** लीटर दूघ है।
- चाय में **थोड़ी** चीनी है।
- **पाँच सौ** ग्राम घी लाओ।

परिमाणवाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं–

- **निश्चित परिणामवाचक–** जैसे– तीन किलो आम, पाँच मीटर कपड़ा इत्यादि।
- **अनिश्चित परिणामवाचक–** जैसे– थोड़ा दूध, कुछ कपड़े इत्यादि।

संख्यावाचक विशेषण– ये विशेषण संख्या या क्रम को दर्शाते हैं; जैसे–

- विद्यालय में आम के **पाँच** पेड़ हैं।
- तालाब में **तीन** बत्तखें तैर रही हैं।
- पेड़ पर **बहुत** पक्षी हैं।
- बस में **अनेक** यात्री हैं।

इन्हें दो भागों में बाँटा जा सकता है–

- **निश्चित संख्यावाचक–** उदाहरण– तीन पुस्तकें, पहला छात्र।
- **अनिश्चित संख्यावाचक–** उदाहरण– कुछ लोग, अनेक तारे।

सार्वनामिक विशेषण– जब कोई सर्वनाम संज्ञा के पहले प्रयुक्त होकर विशेषण की भूमिका का निर्वाह करता है तो उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं; जैसे–

- वह **मेरा** घर है।
- यह **उसकी** किताब है।
- **वह** लड़की आम खाती है।
- **उस** चित्र को देखें।

गतिविधि

❖ प्रशिक्षुओं में विशेषण की समझ की जांच करने के लिए प्रशिक्षक चार्ट के माध्यम से कुछ प्रश्न करेंगे तथा उनकी विषयगत समस्याओं का सामाधान करते हुए प्रकरण का समेकन करेंगे।

गतिविधि का नाम : आओ विशेषण के प्रकार पहचानें।

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : किसी पार्क/विद्यालय/मेला का चित्र चार्ट।

उद्देश्य– विषयवस्तु की विस्तृत समझ विकसित करना।

समेकन

इस प्रकार इस सत्र में हमने विशेषण, विशेषण के प्रकार एवं उनके उदाहरण को समझा। साथ ही विशेषण को बोधगम्य बनाए जाने हेतु दो रोचक गतिविधियों को भी बताया गया, जिससे बच्चों के मस्तिष्क में विशेषण की अवधारणा स्पष्ट व स्थायी हो सके।

बोध परीक्षण

1. विशेषण की परिभाषा क्या है?
2. विशेषणों के प्रमुख प्रकार कौन–कौन से हैं?
3. 'सुंदर' शब्द विशेषण के रूप में कैसे प्रयोग किया जाता है?
4. विशेषण और प्रविशेषण में क्या अंतर है?
5. संख्या वाचक विशेषण के कितने प्रकार हैं? उनका नाम लिखिए।

स्व आकलन

1. विशेषण का मुख्य कार्य क्या होता है?
   (क) क्रिया वर्णन करना (ख) संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताना
   (ग) संवाद को जोड़ना (घ) समय बताना
2. निम्नलिखित में से कौन सा शब्द विशेषण नहीं है?
   (क) सुंदर (ख) तेज
   (ग) पर्वत (घ) छोटा
3. ''नीला आकाश'' में 'नीला' क्या है?
   (क) संज्ञा (ख) क्रिया
   (ग) विशेषण (घ) अव्यय
4. गुणवाचक विशेषण का उदाहरण क्या है?
   (क) पाँच (ख) खुश
   (ग) यहाँ (घ) जल्दी
5. ''राम एक ईमानदार आदमी है।'' यहाँ 'ईमानदार' क्या है?
   (क) संज्ञा (ख) विशेषण
   (ग) क्रिया (घ) अव्यय
6. परिमाणवाचक विशेषण का उदाहरण क्या है?
   (क) बहुत (ख) क्रूर
   (ग) पीला (घ) वहाँ
7. ''उसने तीन पुस्तकें खरीदीं।'' यहाँ 'तीन' किस प्रकार का विशेषण है?
   (क) गुणवाचक (ख) परिमाणवाचक
   (ग) संख्यावाचक (घ) सार्वनामिक
8. '<u>यह</u> गाय काली है' में रेखांकित पद किस प्रकार का विशेषण है?
   (क) गुणवाचक (ख) परिमाणवाचक
   (ग) संख्या (घ) सर्वनामिक
9. निम्न में से कौन सा शब्द विशेषण है?
   (क) दौड़ना (ख) सुंदर
   (ग) पुस्तक (घ) यहाँ
10. ''लाल गुलाब'' में 'लाल' किस प्रकार का विशेषण है?
    (क) गुणवाचक (ख) मात्रा
    (ग) संख्या (घ) परिमाण
11. गुणवाचक विशेषण का उदाहरण क्या है?
    (क) पाँच (ख) खुश
    (ग) वहाँ (घ) अक्सर
12. रमेश एक बुद्धिमान छात्र है। यहाँ 'बुद्धिमान' क्या है?
    (क) संज्ञा (ख) विशेषण
    (ग) क्रिया (घ) अव्यय
13. संख्या विशेषण का एक उदाहरण क्या है?
    (क) तेज (ख) सात
    (ग) नीला (घ) यहाँ

14. वह एक भारी बैग उठा रहा है। यहाँ 'भारी' किस प्रकार का विशेषण है?
(क) गुणवत्ता (ख) मात्रा
(ग) संख्या (घ) परिमाण
15. परिमाण संबंधी विशेषण का उदाहरण क्या है?
(क) छोटा (ख) यहां
(ग) बहुत (घ) तीन
16. 'थोड़ा पानी' में 'थोड़ा' किस प्रकार के विशेषण का उदाहरण है?
(क) गुणवाचक (ख) संख्यावाचक
(ग) परिमाणवाचक (घ) सार्वनामिक
17. 'वह कम बुद्धिमान है' में 'कम' क्या है?
(क) गुणवाचक विशेषण (ख) संख्यावाचक विशेषण
(ग) प्रविशेषण (घ) परिमाणवाचक विशेषण
18. 'मधुर आवाज' में 'मधुर' किस प्रकार के विशेषण का उदाहरण है?
(क) गुणवाचक (ख) संख्यावाचक
(ग) परिमाणवाचक (घ) भाववाचक
19. 'तुम्हारी कलम' में 'तुम्हारी' क्या है?
(क) सर्वनामिक विशेषण (ख) परिमाणवाचक विशेषण
(ग) संख्यावाचक विशेषण (घ) गुणवाचक विशेषण
20. 'सात दिनों' में 'सात' किस प्रकार का विशेषण है?
(क) गुणवाचक (ख) संख्यावाचक
(ग) परिमाणवाचक (घ) क्रमवाचक

7.6 क्रिया–विशेषण एवं उसके भेद

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु, क्रिया विशेषण की अवधारणा को समझ लेते हैं।
2. प्रशिक्षु, क्रिया विशेषण के भेदों को जान लेते हैं।
3. प्रशिक्षु, विभिन्न प्रकार के क्रिया विशेषणों के मध्य विभेद कर लेते हैं।
4. प्रशिक्षु, क्रिया विशेषण के अध्यापन की विधियों एवं रोचक गतिविधियों का प्रयोग कर लेते हैं।
5. प्रशिक्षु, स्कूली बच्चों में क्रिया विशेषण की अवधारणा के साथ ही उनके विभिन्न प्रकारों के बीच विभेद करने की क्षमता विकसित कर लेते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में कुछ न कुछ कार्य करता ही रहता है। सामान्यतः यह पाया जाता है कि कार्य के समान होने पर भी अलग–अलग व्यक्तियों द्वारा उस कार्य को करने की क्षमता अलग–अलग होती है; जैसे– किसी कार्यालय में समान कार्य होने पर भी कोई व्यक्ति उसे शीघ्रता एवं कुशलता से पूर्ण कर लेता है तथा कोई व्यक्ति विलंब से करता है। कार्य को करने की इस भिन्नता को जिन शब्दों के माध्यम से व्यक्त करते हैं, उन्हें **क्रिया विशेषण** कहते हैं।

गतिविधि

गतिविधि का नाम : तुलना करें।

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : सामान्य क्रियाकलाप लिखी हुई पर्चियाँ।

उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

❖ प्रशिक्षक सामान्य क्रियाकलापों (जैसे– ताली बजाना, हँसना, गाना, नाचना आदि) से संबंधित कुछ पर्चियाँ लिखकर लाएँगे। उसके बाद कक्षा के किन्हीं दो प्रशिक्षुओं को बुलाकर कोई भी एक पर्ची उठा कर उसमें लिखे क्रियाकलाप को करने के लिए कहेंगे। कक्षा के अन्य प्रशिक्षु उनके क्रियाकलापों का मूल्यांकन करेंगे।

प्रशिक्षु	क्रियाकलाप	अन्य प्रशिक्षुओं द्वारा किया गया मूल्यांकन
प्रशिक्षु 1	ताली बजाना	धीरे–धीरे ताली बजाया।
प्रशिक्षु 2		तेज–तेज ताली बजाया।

शिक्षक इस उदाहरण के माध्यम से यह स्पष्ट करेंगे कि क्रियाकलाप समान होने पर भी अलग–अलग व्यक्तियों के प्रस्तुतीकरण में भिन्नता होती है। इस भिन्नता को जिन शब्दों के माध्यम से व्यक्त करते हैं, उन्हे **क्रिया विशेषण** कहते हैं।

प्रस्तुतीकरण

परिभाषा– वे शब्द जो क्रिया की विशेषता बताते हैं, वे क्रिया विशेषण कहलाते हैं;जैसे– वह **तेज** चलता है।

क्रिया	–	चलता है।
क्रिया–विशेषण	–	तेज

क्रिया विशेषण के भेद

- स्थानवाचक क्रिया विशेषण
- कालवाचक क्रिया विशेषण
- परिमाणवाचक क्रिया विशेषण
- रीतिवाचक क्रिया विशेषण

क्रिया विशेषण के भेद को याद रखने की युक्ति –

काले स्थान पर रेत

कालवाचक स्थानवाचक परिमाणवाचक रीतिवाचक

स्थानवाचक क्रिया विशेषण– वे शब्द जो क्रिया की स्थान संबंधी विशेषता बताते हैं, स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं; जैसे–

- वह बाहर खेलता है।
- मैं उधर गया था।

कालवाचक क्रिया विशेषण– क्रिया की काल या समय संबंधी विशेषता के बोधक शब्द कालवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं; जैसे–

- गीता सुबह आएगी।
- सदा प्रसन्न रहो।
- वह परसों जाएगा।

परिमाणवाचक क्रिया विशेषण– क्रिया की मात्रा या परिमाण बताने वाले शब्द परिमाणवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं; जैसे–

- खूब हँसो।
- कम बोलो।
- वह बहुत पढ़ती है।

रीतिवाचक क्रिया विशेषण – वे शब्द जो किसी क्रिया के घटित होने की विधि, रीति अथवा शैली संबंधी विशेषता बतलाते हैं, रीतिवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं।

- नदी धीरे–धीरे बहती है।
- घोड़ा तेज दौड़ता है।
- वह जोर से चिल्लाती है।
- तुम मधुर गाते हो।

विशेष–कुछ शब्द ऐसे हैं जो विशेषण एवं क्रिया विशेषण दोनों होते हैं।

शब्द	विशेषण के रूप में	क्रिया विशेषण के रूप में
तेज	रेखा तेज है।	रेखा तेज चलती है।
मंद	वह मंद बुद्धि है।	कछुआ मंद चलता है।
कम	बहुत कम पैसे हैं।	कम बोलो।
थोड़ा	मुझे थोड़ा पानी चाहिए।	थोड़ा खा लो।

गतिविधि

❖ प्रशिक्षक, प्रशिक्षुओं के समक्ष एक चार्ट बनाकर लाएँगे जिस पर क्रिया विशेषण के चारों भेदों से संबंधित अनेक उदाहरण (शब्द) लिखे होंगे। इसके साथ ही चार्ट पर एक कोने में इन शब्दों को चुनने हेतु निर्देश लिखे होंगे–

गतिविधि का नाम : आओ क्रिया–विशेषण पहचानें

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : सामान्य क्रियाकलाप लिखी हुई पर्चियाँ।

उद्देश्य– विषयवस्तु की विस्तृत समझ विकसित करना।

स्थानवाचक क्रिया विशेषण को घेरने के लिए प्रयुक्त मार्कर –	(लाल)
कालवाचक क्रिया विशेषण को घेरने के लिए प्रयुक्त मार्कर –	(पीला)
परिमाणवाचक क्रिया विशेषण को घेरने के लिए प्रयुक्त मार्कर –	(हरा)
रीतिवाचक क्रिया विशेषण को घेरने के लिए प्रयुक्त मार्कर –	(नीला)

इसके बाद एक–एक प्रशिक्षु को क्रमशः बुलाकर चार्ट पेपर में लिखे क्रिया विशेषण के उदाहरणों को दिए गए निर्देश के अनुसार घेरने को कहेंगे।

बोध परीक्षण

1. क्रिया विशेषण किसे कहते हैं?
2. क्रिया विशेषण के प्रकारों का उल्लेख कीजिए।
3. निम्न में क्रिया विशेषण के भेद पहचानिए–
   (क) वह ऊपर गया।
   (ख) कृष्ण मंद–मंद मुस्काए।
   (ग) वह तब रोने लगा।
   (घ) आचार्य जी अच्छे से पढ़ाते हैं।

समेकन

इस प्रकार इस सत्र में हमने क्रिया विशेषण, क्रिया विशेषण के प्रकार एवं उनके उदाहरण को समझा। साथ ही क्रिया विशेषण को बोधगम्य बनाए जाने हेतु दो रोचक गतिविधियों को भी बताया गया, जिससे बच्चों के मस्तिष्क में क्रिया विशेषण की अवधारणा स्पष्ट व स्थायी हो सके।

स्व आकलन

1. **रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित क्रिया विशेषण चुन कर कीजिए–**

(क) गाड़ी .... लौटी।	(वह / तुरंत)
(ख) वह............खाता है।	(ज्यादा / आम)
(ग) कछुआ .... चलता है।	(धीरे–धीरे / तेज)
(घ) छोटी लड़की .... हुए आई।	(जोर से / नहीं)

2. सुमेलित कीजिए–

(क) हम तेजी से दौड़ते हैं। — (1) स्थानवाचक क्रिया विशेषण
(ख) चोर उधर भागा। — (2) परिमाणवाचक क्रिया विशेषण
(ग) जीवों पर सदैव दया करो। — (3) कालवाचक क्रिया विशेषण
(घ) बच्चे बहुत चिल्लाते हैं। — (4) रीतिवाचक क्रिया विशेषण

3. सत्य/असत्य का चयन कीजिए–

(क) क्रिया की विशेषता को बताने वाले शब्द क्रिया विशेषण कहलाते हैं। (सत्य/असत्य)
(ख) इधर–उधर, कहाँ, भीतर–बाहर शब्द, कालवाचक क्रिया विशेषण हैं। (सत्य/असत्य)
(ग) जो क्रिया की मात्रा, नाप–तौल बताते हैं, उन्हें परिमाणवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं। (सत्य/असत्य)
(घ) क्रिया विशेषण विकारी शब्द होते हैं। (सत्य/असत्य)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. कौन–सा स्थानवाचक क्रिया विशेषण है ?
(क) बहुत, अधिक (ख) अभी–अभी
(ग) यहाँ (घ) इनमें से कोई नहीं।

2. 'वह गलत होने से....................................डरती है।' वाक्य में उचित क्रिया विशेषण शब्द आएगा।
(क) तेज (ख) बहुत
(ग) धीरे–धीरे (घ) आज

3. क्रिया के अर्थ में विशेषता प्रकट करने वाले अव्यय को क्या कहते हैं–
(क) संबंधबोधक (ख) क्रिया विशेषण
(ग) समुच्चयबोधक (घ) विस्मयादिबोधक

4. कालवाचक क्रिया विशेषण है–
(क) यहाँ (ख) एक–एक
(ग) अभी–अभी (घ) सुविवाह

5. कौन–सा शब्द क्रिया विशेषण है?
(क) बहुत तेज (ख) लाल
(ग) हिरण (घ) सुबह

6. परिमाणवाचक क्रिया विशेषण अव्यय है–
(क) कहाँ (ख) अब तक
(ग) अधिक बोलना (घ) इनमें से कोई नहीं

7. किस वाक्य में परिमाणवाचक विशेषण है?
(क) पंकज अच्छा गायक है। (ख) इस बार बारिश में ओले बहुत गिरे।
(ग) खेल का मैदान लंबा है। (घ) मैं लाल कपड़ा नहीं पहनता।

8. ''वह धीरे–धीरे चलता है? इस वाक्य में 'थोड़ा' में कौन–सा क्रिया विशेषण है?
(क) परिमाणवाचक क्रिया विशेषण (ख) कालवाचक क्रिया विशेषण
(ग) स्थानवाचक क्रिया विशेषण (घ) रीतिवाचक क्रिया विशेषण

9. रीतिवाचक क्रिया विशेषण का वाक्य होगा?
(क) वह बहुत थक गया है। (ख) वह अभी–अभी गया है।
(ग) वह अंदर बैठा है। (घ) वह अब भली–भाँति नाच लेता है।

10. ''वह बाहर गया'' में कौन सा क्रिया विशेषण है?
    (क) परिमाणवाचक क्रिया विशेषण　　(ख) कालवाचक क्रिया विशेषण
    (ग) स्थानवाचक क्रिया विशेषण　　(घ) रीतिवाचक क्रिया विशेषण

विचार विश्लेषण

1. क्रिया विशेषण को सोदाहरण परिभाषित कीजिए।
2. क्रिया विशेषण के कितने भेद होते हैं? उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।

7.7 वचन एवं उसके प्रकार

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु, वचन की अवधारणा को समझ लेते हैं।
2. प्रशिक्षु, वचन के प्रकारों को में विभेद कर लेते हैं।
3. प्रशिक्षु, वचन की पहचान कर लेते हैं।
4. प्रशिक्षु, वचन का ज्ञान प्राप्त कर, दैनिक जीवन में उसका उपयोग कर लेते हैं।
5. प्रशिक्षु, लिखित एवं मौखिक रूप से वचन को बता लेते हैं।
6. प्रशिक्षु, बच्चों को वचन पहचानने व उनके विभेद करने में सक्षम बना लेते हैं।

संपूर्ण जीव–जगत् में विद्यमान समस्त प्रणियों में किसी न किसी रूप में गणना अथवा संख्याबोध का ज्ञान अवश्य होता है; जैसे– एक चरवाहा पशुओं को चराने जाता है तो उसमें से एक भी पशु के इधर–उधर हो जाने पर वह तुरंत जान जाता है। मनुष्य अपने संख्या बोध को लिखित और मौखिक दोनों रूपों में व्यक्त कर लेता है। इसके अतिरिक्त अन्य जीव–जंतु भी अपने संख्या बोध को अपने मनोभावों से व्यक्त करते हैं। व्याकरण की दृष्टि से इसी संख्या बोध को वचन कहते हैं।

गतिविधि

❖ प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं के सामने चित्र कार्ड प्रस्तुत करेंगे जिसमें कुछ कार्डों में किसी वस्तु से संबंधित एकल चित्र होंगे तथा कुछ कार्डों में उसी वस्तु से संबंधित दो या दो से अधिक चित्र होंगे। प्रशिक्षुओं के समक्ष उस कार्ड को प्रस्तुत करते हुए प्रशिक्षक कुछ प्रश्न पूछेंगे।

गतिविधि का नाम : एक और अनेक।
समय : 10 मिनट
सहायक सामग्री : चित्र कार्ड।
उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

प्रशिक्षक– यह कितना है?

प्रशिक्षु– एक

प्रशिक्षक– यह कितना है?

प्रशिक्षक– यह कितना है?

प्रशिक्षु– अनेक

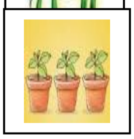

प्रशिक्षक– यह कितना है?

प्रशिक्षु– एक **प्रशिक्षु**– अनेक

प्रश्नोत्तर के बाद प्रशिक्षक, प्रशिक्षुओं के समक्ष वचन की अवधारणा को स्पष्ट करेंगे।

प्रस्तुतीकरण

वचन– जिन शब्दों के द्वारा किसी व्यक्ति, वस्तु या जीव की संख्या का बोध होता है, व्याकरण में उसी संख्याबोध को वचन कहा जाता है।

वचन के द्वारा किसी विकारी शब्द की संख्या का बोध होता है।

हिंदी में वचन दो प्रकार के होते हैं–

वचन के प्रकार

एकवचन बहुवचन

नोट– हिन्दी में दो वचन होते हैं– एकवचन और बहुवचन। जबकि संस्कृत में तीन वचन होते हैं– एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन।

एकवचन– विकारी पद के जिस रूप से किसी एक संख्या का बोध होता है, उसे 'एकवचन' कहते हैं; जैसे– लड़का, गाय, भवन आदि।

सदैव एकवचन शब्द– निम्नलिखित शब्द सदैव एकवचन में प्रयुक्त होते हैं–

सोना, चाँदी, लोहा, स्टील, पानी, दूध, जनता, आग, आकाश, घी, सत्य, झूठ, मिठास, प्रेम, मोह, सामान, ताश, सहायता, तेल, वर्षा, जल, क्रोध, क्षमा आदि।

बहुवचन– विकारी पद के जिस रूप से किसी वस्तु, व्यक्ति के एक से अधिक संख्या का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे– लड़के, बच्चे, नदियाँ, पर्वतों आदि।

सदैव बहुवचन शब्द– निम्नलिखित शब्द सदैव बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं–

होश, दर्शन, आँसू, हस्ताक्षर, प्राण, भाग्य, आदरणीय, एवं आदरसूचक संबोधन– आप।

बोध परीक्षण

1. वचन किसे कहते हैं?
2. शब्दों के संख्यात्मक रूप को क्या कहते हैं?
3. पुस्तक का बहुवचन क्या होगा?
4. वचन की पहचान कीजिए?

   (अ) बंदर कूद रहा है।

   (ब) आदमी खड़े हैं।

समेकन

इस प्रकार इस सत्र में हमने वचन की परिभाषा, वचन के भेद एवं उसके अध्यापन की बारीकियों को सीखा। साथ ही कुछ ऐसे शब्दों के बारे में जाना जो सदैव बहुवचन एवं एकवचन होते हैं। आशा है कि आपको सामग्री पसंद आयी होगी।

स्व आकलन

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) लोगों को महात्मा के -------- हुए। (दर्शन/दर्शनों)
(ख) ------ ने फसल बर्बाद कर दी। (हाथी/हाथियों/हाथिएँ)
(ग) आप का बहुवचन------- है। (हम/आप लोग)
(घ) 'प्रत्येक' शब्द--------है। (एकवचन /बहुवचन)

2. सुमेलित कीजिए–

(क) सोना बहुमूल्य वस्तु है।	बहुवचन
(ख) भाग्य, दाम	एकवचन
(ग) गमला	बहुवचन
(घ) आँसू	बहुवचन

3. सत्य/असत्य का चयन कीजिए–

(क) शब्दों के संख्यावाचक रूप को वचन कहते हैं। (सत्य/असत्य)
(ख) हिन्दी में वचन तीन प्रकार के हैं। (सत्य/असत्य)
(ग) समाचार, प्राण, शब्द सदैव बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं? (सत्य/असत्य)

4. पहचान कर वचन लिखिए–

(क) वायु ....
(ख) हस्ताक्षर ....
(ग) आँसू ....
(घ) सोना ....

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. व्याकरण में 'वचन' का सही अर्थ क्या है–
(क) बोली (ख) भाषा
(ग) प्रतिज्ञा (घ) संख्या

2. कौन–सा शब्द हमेशा बहुवचन में प्रयुक्त होता है–
(क) ग्रंथ (ख) प्राण
(ग) भक्ति (घ) साइकिल

3. वह कौन–सा शब्द है, जो प्रायः बहुवचन में प्रयुक्त होता है–
(क) हस्ताक्षर (ख) छात्र
(ग) देवता (घ) नक्षत्र

4. 'वर्षा' शब्द का उचित बहुवचन चुनिए–
(क) वर्षा (ख) वर्षाओं
(ग) वर्षाएँ (घ) वर्षागण

5. किस वाक्य में वचन का सही प्रयोग हुआ है–
(क) मैं होश उड़ गई। (ख) मेरे होश उड़ गये।
(ग) मेरी होश उड़ गई। (घ) हमारा होश उड़ गये।

6. 'वधू' का बहुवचन क्या होगा–
   (क) वधुएँ, (ख) वधुओं,
   (ग) वधूएँ, (घ) वधुए
7. 'खूँटी' शब्द का बहुवचन बताइए–
   (क) खुटियाँ, (ख) खूटियाँ,
   (ग) खूँटिया, (घ) खूँटियाँ
8. 'भारतीय' शब्द का 'बहुवचन' क्या होगा–
   (क) भारतीयों (ख) भारती
   (ग) भारतियों (घ) इनमें से कोई नहीं।
9. निम्नलिखित विकल्पों में 'एकवचन' शब्द कौन–सा है–
   (क) दर्शन (ख) नदी
   (ग) घरों (घ) लताओं
10. कौन सा शब्द दोनों वचनों में समान रहता है–
    (क) कथा (ख) सरसों
    (ग) लता (घ) कुटी
11. निम्न विकल्पों में से कौन–सा वचन जोड़ा सही नहीं है–
    (क) लता–लताएँ (ख) घोड़ा–घोड़े
    (ग) पुस्तक–पुस्तकें (घ) सखी–सखियाँ
12. किसका प्रयोग सदैव बहुवचन में होता है–
    (क) दर्शन (ख) नारी
    (ग) लता (घ) गाय
13. भविष्यत् काल की क्रिया को बहुवचन बनाने में 'ए' पर क्या होता है–
    (क) े / ै (ख) चंद्रबिंदु/अनुस्वार
    (ग) ो / ौ (घ) इनमें से कोई नहीं।
14. आजकल भारत की अधिकाधिक 'जनता' भी शिक्षित हो गई है। रेखांकित शब्द का वचन है–
    (क) एकवचन (ख) बहुवचन
    (ग) द्विवचन (घ) इनमें से कोई नहीं।
15. सदा एकवचन में प्रयुक्त होने वाला शब्द–
    (क) पौधा (ख) पुस्तक
    (ग) सहायता (घ) लड़का।

प्रोजेक्ट कार्य

वचन के प्रकारों को समझने के लिए एक चार्ट का निर्माण कीजिए।

7.8 लिंग एवं उसके प्रकार

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. लिंग की अवधारणा समझ लेते हैं।
2. लिंग की पहचान तथा उनमें अंतर कर लेते हैं।
3. अपने आस–पास की वस्तुओं, जीव–जंतुओं में निहित लिंग को पहचान लेते हैं।
4. लिंग ज्ञान को दैनिक जीवन की भाषा–शैली में प्रयोग कर लेते हैं।
5. बच्चों को लिंग की पहचान व विभेद में सक्षम बना लेते हैं।

हिन्दी व्याकरण में लिंग उसे कहते हैं, जिसके द्वारा किसी विकारी शब्द के नर अथवा मादा होने का ज्ञान होता है। हिन्दी व्याकरण में दो लिंग (स्त्रीलिंग/पुल्लिंग) होते हैं जबकि संस्कृत व्याकरण में एक तीसरे लिंग (नपुंसक लिंग) को भी मान्यता प्राप्त है।

गतिविधि

गतिविधि का नाम : पढ़िए और समझिए।
समय : 10 मिनट
सहायक सामग्री : वाक्य लिखे हुए चार्ट।
उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

❖ प्रशिक्षक, प्रशिक्षुओं के सामने पढ़ने के लिए दो चार्ट प्रस्तुत करेंगे जिस पर कुछ वाक्य लिखे हुए होंगे–

वर्ग क	वर्ग ख
1. बालक पढ़ता है।	1. बालिका पढ़ती है।
2. नानाजी समाचार पत्र पढ़ रहे हैं।	2. नानीजी खाना बना रही हैं।
3. शेर दहाड़ रहा है।	3. शेरनी शिकार कर रही है।
4. शिक्षक बच्चों को पढ़ा रहे हैं।	4. शिक्षिका श्यामपट्ट पर लिख रही है।
4. भाई राखी बँधवा रहा है।	4. बहन राखी बाँध रही है।

चार्ट पढ़वाने के बाद प्रशिक्षक स्पष्ट करेंगे कि 'क' वर्ग में लिखे शब्द बालक, नाना जी, शेर, अध्यापक और भाई पुरुष जाति का बोध कराते हैं जबकि 'ख' वर्ग में लिखे शब्द बालिका, नानी जी, शेरनी, अध्यापिका और बहन स्त्री जाति का बोध कराते हैं।

प्रस्तुतीकरण

लिंग– "शब्द के जिस रूप से पुरुष और स्त्री जाति का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं।"

लिंग शब्द का अर्थ होता है– चिह्न या पहचान। हिन्दी व्याकरण में लिंग उसे कहते हैं जिसके द्वारा किसी विकारी शब्द के 'स्त्री' या 'पुरुष' जाति के होने का ज्ञान होता है। यदि प्रश्न किया जाए कि निम्न शब्दों में स्त्रीलिंग और पुल्लिंग पहचानिए–

कुर्सी, पंखा, पुस्तक, आँख, पहाड़, नदी आदि।

तो उक्त संज्ञा शब्दों के पूर्व लिंगानुसार विकारी शब्द (विशेषण)– छोटा, बड़ा, अच्छा इत्यादि में से कोई एक (जैसे– बड़ा) लगाकर देख लीजिए। जैसे– बड़ी कुर्सी, बड़ा पंखा, बड़ी आँख, बड़ा पहाड़, बड़ी नदी।

जिनके पूर्व बड़ा लगा वे पुल्लिंग जैसे– पंखा, पहाड़ और जिनके पूर्व बड़ी लगी स्त्रीलिंग जैसे– कुर्सी, पुस्तक, आँख, नदी आदि हैं।

लिंग के प्रकार

हिन्दी में लिंग दो प्रकार के होते हैं–

1. पुल्लिंग
2. स्त्रीलिंग

पुल्लिंग– जिस विकारी शब्द के द्वारा उसके पुरुष जाति के होने का बोध हो, पुल्लिंग कहलाता है। जैसे– बैल, हिमालय, पहाड़, शेर, पंखा, सूर्य।

हिन्दी में निर्जीव वस्तुओं के लिंग निर्धारण हेतु कोई निश्चित नियम नहीं है। हिन्दी भाषा में निर्जीव वस्तुओं का लिंग निर्धारण प्रचलन पर ही निर्भर करता है।

यदि निर्जीव वस्तुओं के पूर्व हम विशेषण (जो लिंगानुसार विकारी हो) लगाएँ तो वस्तुओं के लिंग (पुल्लिंग या स्त्रीलिंग) आसानी से ज्ञात कर सकते हैं।

कुछ पुल्लिंग वस्तुओं के नाम–

- पर्वतों के नाम– हिमालय, विन्ध्य, अरावली, कैलास।
- महीनों के नाम– जनवरी, फरवरी, ..., दिसम्बर, चैत, वैशाख, ..., फाल्गुन।
- दिनों के नाम– सोमवार, मंगलवार, ..., रविवार।
- देशों, राज्यों, जनपदों के नाम– भारत, पाकिस्तान, महाराष्ट्र, वाराणसी।
- ग्रहों के नाम (पृथ्वी को छोड़कर)– बुध, शुक्र, मंगल, वृहस्पति, शनि।
- अनाजों के नाम– चावल, गेहूँ, बाजरा।
- सागरों/महासागरों के नाम– हिन्द, अरब, प्रशान्त।

स्त्रीलिंग– जो विकारी शब्द किसी स्त्री जाति का बोधक हो, उसे "स्त्रीलिंग" कहते हैं; जैसे– नदी, ऊषा, सीता, बकरी, किताब इत्यादि ।

स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों की पहचान वर्ग अनुसार–

- तिथियों के नाम– प्रथमा, द्वितीया, अमावस्या, पूर्णिमा।
- भाषाओं/बोलियों के नाम–हिन्दी, अँग्रेजी, भोजपुरी, अवधी।
- लिपियों के नाम– देवनागरी, गुरुमुखी, फारसी, ब्राह्मी।
- नदियों के नाम– गंगा, यमुना, गोदावरी, कावेरी।
- नक्षत्रों के नाम –रोहिणी, स्वाति, आद्रा इत्यादि।

नोट– संस्कृत में लिंग के तीन प्रकार– स्त्रीलिंग, पुल्लिंग एवं नपुंसक लिंग होते हैं जबकि हिन्दी में केवल दो प्रकार– स्त्रीलिंग एवं पुल्लिंग ही होते हैं।

गतिविधि

❖ इस गतिविधि के अंतर्गत प्रशिक्षक, प्रशिक्षुओं से कक्षा–कक्ष में उपलब्ध वस्तुओं की तरफ इंगित करते हुए, उनका लिंग बताने को कहेंगे।

गतिविधि का नाम : लिंग भेद की पहचान।
समय : 10 मिनट
सहायक सामग्री : कक्षा–कक्ष में उपलब्ध भौतिक सामग्री।
उद्देश्य– विषयवस्तु की विस्तृत समझ विकसित करना।

बोध परीक्षण

1. लिंग किसे कहते हैं?
2. लिंग का शाब्दिक अर्थ क्या हैं?
3. निम्नलिखित में लिंग की पहचान कीजिए–
   दही
   किताब
   गाड़ी
   कुत्ता

समेकन

इस प्रकार इस प्रशिक्षण सत्र में हमने लिंग, लिंग के प्रकार, लिंग की पहचान व उनके उदाहरणों को जानने का प्रयास किया। साथ ही लिंग निर्धारण के कुछ सूक्ष्म तरीकों के बारे में भी जाना।

स्व आकलन

1. स्त्रीलिंग तथा पुल्लिंग शब्दों की अलग–अलग सूची बनाइए–

हार, चीता, दीमक, पीतल, मृत्यु, ऋतु, राष्ट्रपति, बाल, दही, भारत, झोपड़ी, पापड़

2. सुमेलित कीजिए–

सोना, लोहा, ताँबा	स्त्रीलिंग
अफवाह	देवी
देव	हलवाइन
हलवाई	पुल्लिंग

3. सत्य/असत्य का चयन कीजिए–

(क) शब्द के जिस रूप से पुरुष या स्त्री जाति का बोध हो,उसे लिंग कहते हैं। (सत्य/असत्य)
(ख) 'हिमालय' भारत के उत्तर में है, रेखांकित शब्द पुलिंग है। (सत्य/असत्य)
(ग) लिंग का अर्थ होता है– 'निशान' या चिह्न। (सत्य/असत्य)
(घ) 'दही' शब्द स्त्रीलिंग है। (सत्य/असत्य)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नलिखित में से किस शब्द का एक पर्याय पुल्लिंग है–
   (क) गाय (ख) चीता
   (ग) ग्रंथ (घ) शेर
2. 'मगरमच्छ' का स्त्रीलिंग है–
   (क) मगरमच्छी (ख) मगरमच्छानी
   (ग) मादा मगरमच्छ (घ) मगरमच्छवी
3. 'कवि' शब्द का स्त्रीलिंग है–
   (क) कवियित्री (ख) कवित्री
   (ग) कवीयत्री (घ) कवयित्री
4. निम्नलिखित शब्दों में पुल्लिंग शब्द का चयन कीजिए–
   (क) सूची–पत्र (ख) पुस्तक
   (ग) गंगा (घ) संसद
5. 'साधु' का स्त्रीलिंग शब्द है–
   (क) साधुनी (ख) साध्वी
   (ग) सधुआइन (द) साधुवादनि
6. निम्नलिखित ईकारांत शब्दों में एक पुल्लिंग है, उसे चयनित कीजिए–
   (क) पानी (ख) नदी
   (ग) रोटी (ग) बकरी
7. हिन्दी के शब्दों का लिंग– निर्धारण किसके आधार पर होता हैं–
   (क) प्रत्यय (ख) संज्ञा
   (ग) क्रिया (घ) सर्वनाम
8. निम्नलिखित में 'पुल्लिंग' शब्द है–
   (क) दही (ख) जड़ता
   (ग) पढ़ना (घ) दवा
9. 'वीर' का स्त्रीलिंग है–
   (क) वारांगना (ख) वीरगति
   (ग) वीरांगना (घ) वीरावती
10. 'दाता' शब्द का स्त्रीलिंग शब्द क्या है–
   (क) दाती (ख) दात
   (ग) दात्री (घ) धात्री
11. 'ठठेरा' शब्द का लिंग परिवर्तित कीजिए–
   (क) ठठेरी (ख) ठठारी
   (ग) ठठेरिन (घ) ठठेरिनी
12. 'नायक' शब्द का स्त्रीलिंग होगा–
   (क) नायिका (ख) नायकी
   (ग) नायिकाएँ (घ) नायकि
13. निम्नलिखित में कौन–सा शब्द स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होता है–
   (क) ऋतु (ख) पण्डित
   (ग) हंस (घ) आचार्य

14. निम्नलिखित में स्त्रीलिंग शब्द है–
    (क) किन्नर (ख) गेंद
    (ग) पानी (घ) अपरिग्रह
15. 'हाथी' का स्त्रीलिंग होगा–
    (क) हाथिन (ख) हाथीनी
    (ग) हथिनी (घ) हाथिनी
16. निम्न प्रश्न लिंग से संबंधित है। निम्न कथनों पर विचार कीजिए और सही उत्तर चुनिए–
    (अ) अकारांत तथा आकारांत पुल्लिंग शब्दों को ईकारांत कर देने से वे स्त्रीलिंग हो जाते हैं।
    (ब) जातिबोधक शब्दों के अंतिम स्वर को लोप कर, उनमें कहीं 'इन' और कहीं 'आइन' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है।
    (क) केवल 1 सही है। (ख) केवल 2 सही है।
    (ग) 1 और 2 दोनों सही है। (घ) 1 और 2 दोनों गलत है।
17. निम्न शब्द में कौन–सा स्त्रीलिंग है–
    (क) देश (ख) नगर
    (ग) द्विप (घ) झील
18. निम्न में से कौन–सा शब्द स्त्रीलिंग है–
    (क) विवाद (ख) सार
    (ग) रूप (घ) आय
19. निम्न में कौन–सा पुल्लिंग है–
    (क) दया (ख) माया
    (ग) भाषा (घ) आभार
20. कौन–सा स्त्रीलिंग शब्द है–
    (क) मित्र (ख) सूचना
    (ग) उपहार (घ) अध्याय

विचार विश्लेषण

1. लिंग की परिभाषा दीजिए।
2. ''विदुषी' एवं 'तपस्विनी' शब्द का पुल्लिंग शब्द लिखिए।

प्रोजेक्ट वर्क

घर में प्रयोग किए जाने वाली 10 वस्तुओं की सूची तैयार कर उसके लिंग को पहचान कर लिखिए।

7.9 काल एवं इसके प्रकार

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु, काल की अवधारणा स्पष्ट करते हुए उनके प्रकारों एवं उदाहरणों के बारे में चर्चा कर लेते हैं।
2. प्रशिक्षु, काल के विभेदों के अनुसार वाक्य निर्माण कर लेते हैं तथा काल की पहचान कर लेते हैं।
3. प्रशिक्षु, विद्यालय में बच्चों को काल की अवधारणा समझाने में विभिन्न गतिविधियों का प्रयोग कर लेते हैं।
4. प्रशिक्षु, बच्चों में काल–पहचान व काल विभेदीकरण की क्षमता का विकास कर लेते हैं।

यह चिर सत्य है कि समय परिवर्तनशील है। समय का चक्र निरंतर गतिमान है। समय का चक्र आगे बढ़ता है और इस चक्र परिवर्तन के विभिन्न पड़ावों में जो कल था वह आज नहीं है और जो आज है वह कल नहीं रहेगा। कल, आज और कल की पहचान के निर्धारण के लिए जिन शब्दों का प्रयोग करतें हैं उसे ही व्याकरण में काल कहते हैं।

गतिविधि

गतिविधि का नाम : कल, आज और कल।
समय : 10 मिनट
सहायक सामग्री : वार्षिक कैलेंडर।
उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

❖ प्रशिक्षक कैलेंडर को दिखाते हुए प्वाइंटर की सहायता से कुछ तिथियों को इंगित करते हुए प्रशिक्षुओं से प्रश्न करेंगें–

प्रशिक्षक– आज कौन सी तिथि और वार है?
प्रशिक्षु– .... (संभावित उत्तर)।
प्रशिक्षक– कल कौन सी तिथि और वार था?
प्रशिक्षु– .... (संभावित उत्तर)।
प्रशिक्षक– कल कौन सी तिथि और वार होगा?
प्रशिक्षु– .... (संभावित उत्तर)।

प्रशिक्षक स्पष्ट करेंगे कि कल, आज और कल की पहचान के निर्धारण के लिए जिन शब्दों का प्रयोग करतें हैं उसे ही काल कहते हैं।

प्रस्तुतीकरण

काल

क्रिया के जिस रूप में कार्य करने या होने के समय का ज्ञान होता है उसे 'काल' कहते हैं।

काल के प्रकार

- **वर्तमान काल**
- **भूत काल**
- **भविष्यत् काल**

वर्तमान काल

क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य के वर्तमान समय में संचालित होने का बोध हो, वह 'वर्तमान काल' कहलाता है; जैसे– वह जाता है।

वर्तमान काल के प्रकार

1. **सामान्य वर्तमान काल–** जब क्रिया व्यापार वर्तमान काल में सामान्य रूप से घटित हो, 'सामान्य वर्तमान काल' कहलाता है। इसमें क्रिया के मूल रूप के साथ **ता है, ती है, ते हैं** का प्रयोग होता है; जैसे–
   - वह पढ़ता है।
   - मैं सोती हूँ।
   - बस जाती है।
2. **अपूर्ण वर्तमान काल**– जब क्रिया के अपूर्ण होने अथवा क्रिया के वर्तमान में जारी रहने का भाव प्रकट होता है, तो 'अपूर्ण वर्तमान काल' होता है। इसमें क्रिया के मूल रूप के साथ **रहा है, रहा हूँ, रही हूँ तथा रहे हैं** का प्रयोग होता है; जैसे–
   - वह जा रहा है।
   - मैं सो रहा हूँ।
   - गाय घास चर रही है।
3. **संदिग्ध वर्तमान काल–** जहाँ क्रिया के वर्तमान काल में होने पर संदेह हो ,'संदिग्ध वर्तमान काल' कहलाता है। इसमें क्रिया के साथ **ता, ते, ती** अथवा **रहा, रहे, रही** के बाद **होगा, होगी, होंगे** इत्यादि का प्रयोग होता है; जैसे–
   - वह आता होगा।
   - सीता पढ़ रही होगी।
   - मोहन खेलता होगा।

भूत काल

क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य के समाप्त होने अथवा बीत जाने का बोध हो, 'भूत काल' कहलाता है।

भूतकाल के प्रकार

1. **सामान्य भूतकाल–** जब क्रिया व्यापार भूत काल में सामान्य रूप में घटित हो, 'सामान्य भूत काल' कहलाता है। इसमें यह नहीं पता चलता है कि क्रिया व्यापार को बीते अधिक समय हुआ है या कम समय हुआ है; जैसे–
   - वह गया।
   - मैं आया।
   - सभी ने खाना खाया।

2. **आसन्न भूत काल–** क्रिया के जिस रूप से यह प्रकट होता है कि कार्य व्यापार हाल ही में समाप्त हुआ है, 'आसन्न भूत काल' कहलाता है। सामान्य भूत काल के उदाहरण के अंत में **है, हूँ, हैं** लगाने से आसन्न भूत काल का उदाहरण बन जाता है; जैसे–
   - वह गया है।
   - मैं आया हूँ।
   - सभी ने खाना खाया है।
3. **पूर्ण भूत काल–** क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात होता है कि क्रिया व्यापार बहुत पहले ही समाप्त हो चुका है, 'पूर्ण भूत काल' कहलाता है। जब सामान्य भूत काल के उदाहरणों में **था, थी, थे** जोड़ देते हैं तो 'पूर्ण भूत काल' का उदाहरण बन जाता है; जैसे–
   - वह गया था।
   - मैं आया था।
   - सभी ने खाना खाया था।
4. **अपूर्ण भूत काल–** क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात होता है कि क्रिया व्यापार भूत काल में अपूर्ण रहा है या निरंतर चल रहा था, 'अपूर्ण भूत काल' कहलाता है। इसमें वाक्य के अंत में **रहा था, रहे थे व रही थी** आता है; जैसे–
   - वह जा रही थी।
   - मैं आ रहा था।
   - सब लोग खाना खा रहे थे।
5. **संदिग्ध भूत काल–** क्रिया के जिस रूप से उसके अतीत में घटित होने पर संदेह हो, 'संदिग्ध भूत काल' कहलाता है। इसमें सामान्य भूतकालिक क्रिया के साथ होगा, होगी, होंगे इत्यादि जुड़ जाते हैं; जैसे–
   - वह गया होगा।
   - रीता सोई होगी।
   - रोहन एवं मोहन ने आम खाए होंगे।
6. **हेतुहेतुमद् भूत काल–** जब अतीत में एक क्रिया के घटित होने पर, दूसरी (अगली) क्रिया का घटित होना निर्भर करता हो तो वहाँ 'हेतुहेतुमद् भूत काल' होता है; जैसे–
   - वह पढ़ता तो जरुर उत्तीर्ण होता।
   - वह मुझे बुलाता तो मैं जाता।
   - बारिश होती तो मोर नाचते।

भविष्यत् काल

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य व्यापार आने वाले समय में शुरू होगा, 'भविष्यत् काल' कहलाता है।

भविष्यत् काल के प्रकार

1. **सामान्य भविष्यत् काल–** क्रिया के जिस रूप से उसे भविष्य में सामान्य रूप से घटित होने का बोध हो, वहाँ 'सामान्य भविष्यत् काल' कहते हैं; जैसे–

- वह जाएगा।
- मैं आऊँगा।
- तुम खाओगे।

2. **संभाव्य भविष्यत् काल–** क्रिया के जिस रूप से उसके भविष्य में घटित होने की संभावना व्यक्त हो, वहाँ 'संभाव्य भविष्यत् काल' होता है; जैसे–
   - वह कदाचित् आज आए।
   - शायद वह कल जाए।
3. **हेतुहेतुमद् भविष्यत् काल–** जब भविष्य में किसी एक क्रिया के घटित होने पर दूसरी क्रिया का होना निर्भर हो, वहाँ 'हेतुहेतुमद' भविष्यत् काल' होता हैं; जैसे–
   - जब वह आएगा, तब मैं जाऊँगा।
   - जब बारिश बंद होगी, तब धूप निकलेगी।

गतिविधि

गतिविधि का नाम : कल, आज और कल की पहचान।

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : विभिन्न कालों से संबंधित वाक्य लिखी हुई पर्चियाँ।

उद्देश्य– विषयवस्तु की विस्तृत समझ विकसित करना।

- इस गतिविधि के अंतर्गत प्रशिक्षक एक बॉक्स में कुछ पर्चियों पर विभिन्न कालों से संबंधित वाक्य लिखकर मोड़ कर रख देंगें। फिर बारी–बारी से एक–एक प्रशिक्षु को बुलाकर एक–एक पर्ची को निकालकर पढ़ने को कहेंगें।
- अन्य प्रशिक्षुओं को पढ़े गये वाक्य में निहित काल को पहचानने को कहेंगें। जो प्रशिक्षु सबसे पहले उत्तर देगा उसको 1 अंक प्रदान किया जाएगा। इस प्रकार सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाला प्रशिक्षु विजेता होगा।

बोध परीक्षण

1. काल किसे कहते हैं?
2. काल कितने प्रकार के होते हैं?
3. दिए गए कथन में काल की पहचान कीजिए।
   (क) सीता ने खाना पकाया।
   (ख) वह पढ़ता तो पास होता।
   (ग) राम खाता होगा।

समेकन

उपर्युक्त विवेचन के बाद आपने काल एवं काल के प्रकारों को सोदाहरण समझा। हिन्दी में काल, अंग्रेजी के Tense का समानार्थी है। हिन्दी व अंग्रेजी दोनों में तीन काल ही होते हैं– वर्तमान (Present), भूत (Past), भविष्यत् (Future)। इनके उपभेदों में हिन्दी और अंग्रेजी में अंतर होता है।

साथ ही हेतुहेतुमद् भूतकाल एवं भविष्यत् काल अंग्रेजी में "Conditional Sentence" कहलाता है, जो तीनों Tense में बनते हैं किन्तु Tense के भेद नहीं माने जाते।

आशा है कि आप बच्चों को काल का शिक्षण कराते समय इस सत्र में सीखी गयी गतिविधियों का भी उपयोग करेंगें।

स्व आकलन

1. **निम्नलिखित में काल की पहचान कीजिये–**

(क) वह लड़का गाता है। (अनिश्चित वर्तमान काल/सामान्य वर्तमान काल)
(ख) वह जा रहा था। (अपूर्ण भूत काल/पूर्ण भूत काल)
(ग) वह गया है। (आसन्न भूत काल/आसन्न भविष्यत् काल)
(घ) उसने खाया होगा। (संदिग्ध भूत काल/ हेतुहेतुमद् भूत काल)

2. **सुमेलित कीजिए–**

(क) अनिश्चित वर्तमान काल — यदि वह पढ़ेगा तो जरुर उत्तीर्ण होगा।
(ख) हेतुहेतुमद् भविष्यत् काल — शायद कहीं वर्षा हो रही है।
(ग) अपूर्ण भूत काल — वह जाएगा।
(घ) सामान्य भविष्यत् काल — वह जा रही थी।

3. **सत्य/असत्य कथन का चयन कीजिए–**

(क) काल का अर्थ होता है 'समय'। (सत्य/असत्य)
(ख) क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया अभी कुछ समय पहले ही पूर्ण हुई है या खत्म हुई है, आसन्न भूत काल है। (सत्य/असत्य)
(ग) 'यदि तुम जाओगे तो पढ़ाऊँगा'– सामान्य भविष्यत् काल (सत्य/असत्य)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भूत काल के कितने भेद हैं–
   (क) चार (ख) छह
   (ग) दस (ग) आठ
2. अपूर्ण भूत काल का उदाहरण है–
   (क) चोर चक्कर लगाता था। (ख) वर्षा हुई थी।
   (ग) आपका बालक मिल गया था। (घ) वर्षा हुई होगी।
3. निम्नलिखित में से किस वाक्य में भविष्यत् काल है–
   (क) मैं आपकी प्रतीक्षा करूँगा। (ख) मैंने एक पेड़ काट लिया।
   (ग) मैं पुस्तक पढ़ने वाला था। (घ) मैं आपका आभारी हूँ।
4. "मैं खाना खा चुका था"– इस वाक्य में कौन सा भूतकालिक भेद है–
   (क) सामान्य भूत काल (ख) पूर्ण भूत काल
   (ग) आसन्न भूत काल (घ) संदिग्ध भूत काल
5. 'वह खा रहा था' कौन सा काल है–
   (क) पूर्ण भूत काल (ख) अपूर्ण भूत काल
   (ग) संदिग्ध भूत काल (घ) सामान्य भूत काल

6. निम्न से कौन सा वाक्य पूर्ण भूत काल का उदाहरण है–
(क) वे गए।
(ख) वे खा रहे थे।
(ग) वे आए थे।
(घ) वे सोकर उठे हैं।

7. निम्न वाक्यों में भविष्यत् काल को पहचानिए–
(क) गाय घास चरती है।
(ख) सोहन मुम्बई गया था।
(ग) मैं कल घूमने जाउँगी।
(घ) माँ बच्चे को पढ़ा रही है।

8. निम्न में भूत काल का उदाहरण है–
(क) मैं जाता हूँ।
(ख) राम घर गया था।
(ग) वह आ रहा है।
(घ) वह पुस्तक पढ़ेगा।

9. कौन सा वाक्य आसन्न भूत काल में है–
(क) तू आता तो मैं जाता।
(ख) मोहन आया, सीता गयी।
(ग) वह आया था।
(घ) मैंने आम खाया है।

10. निम्नलिखित वाक्यों में से अपूर्ण भूत काल को पहचानिए–
(क) रामू खाना खा रहा था।
(ख) माँ खाना बना चुकी।
(ग) मुझे बाहर जाना है।
(घ) हम घूमने जाएँगें।

11. 'वह पहुँचा ही होगा' वाक्य में क्रिया का काल होगा–
(क) भविष्यत् काल
(ख) हेतुहेतुमद् भूत काल
(ग) वर्तमान काल
(घ) आसन्न भूत काल

12. 'रहीम ने खाना खाया होगा' में 'खाया होगा' में भूत काल की कौन सी क्रिया है–
(क) अपूर्ण भूत काल
(ख) संदिग्ध भूत काल
(ग) हेतुहेतुमद् भूत काल
(घ) आसन्न भूत काल

13. निम्न शब्दों में कौन सा शब्द सदैव बहुवचन में प्रयुक्त होता है–
(क) लड़का
(ख) प्राण
(ग) घोड़ी
(घ) चिड़िया

14. 'चाकू' शब्द का बहुवचन क्या होगा–
(क) चाकुएँ
(ख) चाकुओं
(ग) चाकुओ
(घ) चाकू

15. 'बुढ़िया' शब्द का बहुवचन होगा–
(क) बुढ़ियाँ
(ख) बूढ़ियाँ
(ग) बुढ़ियाएं
(घ) इनमें से कोई नहीं

विचार विश्लेषण

1– 'काल' किसे कहते हैं? काल के भेद लिखिए।
2– 'वर्तमान काल' के प्रमुख भेद बताइए।
3– भूतकाल के प्रमुख भेद बताइए।

प्रोजेक्ट वर्क

वर्तमान, भूत एवं भविष्यत् काल के समस्त प्रकारों के एक–एक उदाहरण वाक्य, बेसिक शिक्षा परिषद्, उ०प्र० द्वारा संचालित कक्षा 1 से 8 तक की, हिन्दी पुस्तकों में से ढूँढ़ कर संदर्भ सहित नोट करके लाईये।

इकाई 8

पाठ्यवस्तु का मौन वाचन करते हुए उसमें निहित विचारों भाव एवं तथ्यों को समझना

8.1 पठन कौशल
8.2 वाचन के प्रकार
8.3 पाठ्यवस्तु में निहित भाव विचार एवं तथ्य

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु, मौन वाचन की अवधारणा एवं महत्त्व को स्पष्ट कर लेते हैं।
2. प्रशिक्षु, वाचन के प्रकारों को स्पष्ट कर लेते हैं।
3. प्रशिक्षु, पुस्तक के पाठ्यांशों को समझते हुए पढ़ने (मौन पठन) की दक्षता विकसित कर लेते हैं।
4. प्रशिक्षु, पाठ्यवस्तु को पढ़ते हैं तथा पढ़कर समझने का सही तरीका जानते हैं।
5. प्रशिक्षु, गद्य में निहित विचार, भाव एवं तथ्यों को समझते हुए पढ़ लेते हैं।

जीवन में शिक्षा का महत्त्व निर्विवाद है। विद्यालयीय शिक्षा मुख्यतः पाठ्यपुस्तकों पर निर्भर रहती है। प्रत्येक पाठ्यपुस्तक अध्यायों में विभक्त होती है। अध्याय अनेक गद्यांश अथवा पद्यांश में विभक्त होते है। गद्यांश अथवा पद्यांश ही पाठ्य वस्तु होते हैं।

पाठ्य वस्तु को विद्यालयीय शिक्षा में पाठ्य भाषा के अंतर्गत दो प्रकारों से अभिव्यक्त किया जाता है। एक सस्वर वाचन द्वारा और दूसरा मौन वाचन द्वारा। जहाँ काव्य शिक्षण में सस्वर पाठ होता है, वहीं गद्य शिक्षण में मौन वाचन। चूँकि पाठ्यवस्तु गद्य एवं पद्य में विभाजित होती है। जहाँ गद्य, विचारों को लेकर चलता है, वहीं पद्य में भाव एवं संवेदना की प्रधानता होती है। ऐसा नहीं कि गद्य भाव हीन होगा और पद्य विचारहीन; अपितु दोनों में भाव एवं विचार निहित होते हैं परंतु जहाँ गद्य में विचारों की प्रधानता होती है वहीं पद्य में भावों की। इस विषय पर निम्नांकित रेखाचित्र के माध्यम से समझा जा सकता है–

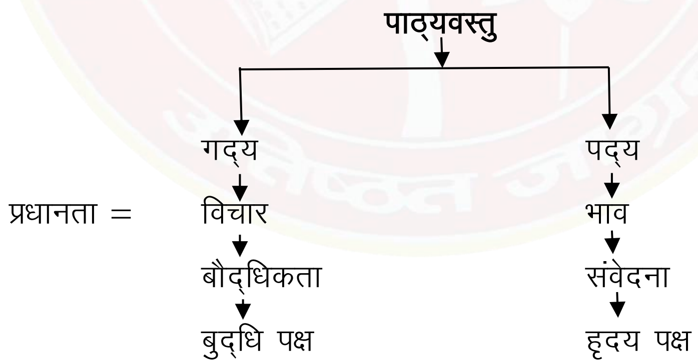

भाव और विचार तथ्यों से मिलकर पाठ्यवस्तु की रचना करते हैं। भाव, विचार और तथ्य इस प्रकार अनुच्छेदों में एक दूसरे से गुथे रहते हैं कि उनको अलग–अलग करना संभव ही नहीं है। शिक्षक द्वारा गद्य शिक्षण के अंतर्गत गद्य के पाठों की शिक्षा देते समय बच्चों के स्तर पर पाठ्यवस्तु के मौन वाचन के माध्यम से निम्नवत उद्देश्यों की पूर्ति की जा सकती है–

1. मौन वाचन द्वारा बच्चों की समझ विकसित होती है।
2. मौन वाचन द्वारा पाठ्यवस्तु के प्रति बच्चों की एकाग्रता बढ़ती है।
3. मौन वाचन से कक्षा में शांतिपूर्ण वातावरण निर्मित होता है।

4. मौन वाचन के उपयोग द्वारा शिक्षक एक साथ बच्चों को अलग–अलग शीर्षक अथवा विषय पढ़ा सकते हैं।
5. धारा प्रवाह पढ़ने की क्षमता का विकास होता है।
6. मौन वाचन से श्रम परिहार में भी सहायता मिलती है।
7. मौन वाचन से स्वाध्याय की आदत विकसित होती है।

गतिविधि

गतिविधि का नाम : तुलना करें।
समय : 10 मिनट
सहायक सामग्री : गद्यांश लिखा हुआ चार्ट।
उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

❖ प्रशिक्षक निम्नलिखित गद्यांश का आदर्श वाचन करेगें–

"रमजान के पूरे तीस रोजों के बाद आज ईद आयी है। कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभात है। वृक्षों पर कुछ अजीब हरियाली है; खेतों में कुछ अजीब रौनक है; आसमान पर कुछ अजीब लालिमा है। आज का सूर्य देखो; कितना प्यारा; कितना शीतल है; मानो संसार को ईद की बधाई दे रहा है।"

इसके बाद प्रशिक्षुओं द्वारा गद्यांश का अनुकरण वाचन किया जाएगा तथा जिस शब्द के पठन में काठिन्य हो उसका निवारण प्रशिक्षक द्वारा किया जाएगा। जहाँ–जहाँ अनुच्छेद में अल्पविराम एवं पूर्णविराम है, उन स्थानों पर प्रशिक्षु थोड़ा रुकेंगे। इसके बाद प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं को गद्यांश का मौन वाचन करने का निर्देश देंगे।

प्रस्तुतीकरण

भाषा शिक्षा प्राप्ति का महत्त्वपूर्ण साधन है। भाषा के बिना ज्ञानार्जन संभव नहीं है। ज्ञान–प्राप्ति में पठन का अत्यधिक महत्त्व है। पठन भाषा के चारों कौशलों– सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना में से पूर्व के दो सुनना और बोलना, बच्चे घर एवं परिवेश से सीख लेते हैं किंतु पढ़ना और लिखना विद्यालयीय शिक्षा से संबंधित है। पठन का उपयोग विद्यालयीय शिक्षा में ही नहीं अपितु जीवन पर्यन्त किया जाता है। अतएव भाषा शिक्षण में बच्चों को पठन कौशल पर विशेष बल देना चाहिए।

8.1 पठन कौशल

पठन, वाचन का ही नहीं अपितु समस्त विषयों के ज्ञानार्जन का मुख्य साधन है। इस कारण पठन का अर्थ व्यापक हो गया है और यह शिक्षा का ही दूसरा रूप बन गया है। तुमने कहाँ तक पढ़ा है? तुम किस विद्यालय में पढ़ते हो? अब आगे क्या पढ़ने का विचार है? आदि वाक्य पठन के महत्त्व पर प्रकाश डालते हैं। प्रारंभिक कक्षाओं (कक्षा एक और दो) में पठन के यांत्रिक पक्ष (उच्चारण, वाचन, मौखिक अभिव्यक्ति आदि) पर जोर रहता है जिसका विकास सस्वर वाचन के माध्यम से किया जाता है। उसके बाद कक्षा तीन, चार और पाँच में सस्वर पठन कौशल के साथ–साथ पठन योग्यता (अर्थ ग्रहण, पठित वस्तु में आए तथ्यों, भावों और विचारों के ग्रहण) पर भी ध्यान रहता है जिसका विकास मौन पठन द्वारा किया जाता है। उच्च प्राथमिक कक्षाओं (कक्षा छह से आठ) तक पठन–योग्यता के विकास पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

पठन की तरह वाचन भी एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें लिपि, प्रतीकों की पहचान तथा उनके उच्चारण की कुशलता के साथ–साथ पठित सामग्री के अर्थग्रहण एवं उसके पूर्ण आशय को समझ लेने की योग्यता का समावेश है। इसमें ग्रहण किए गए अर्थ की व्याख्या, मत निर्धारण तथा अर्जित ज्ञान का प्रयोग शामिल है।

शिक्षण की दृष्टि से प्राथमिक कक्षाओं (1–5) तक सस्वर वाचन द्वारा पठन कराया जाना चाहिए, पर बच्चों की संप्राप्ति को देखते हुए मौन वाचन द्वारा पठन कक्षा चार से प्रारंभ किया जा सकता है। इसी प्रकार उच्च प्राथमिक कक्षाओं (6–8) में मौन वाचन में पठन पर जोर देना चाहिए लेकिन बच्चों की पठन योग्यता कम होने पर सस्वर वाचन भी कराया जा सकता है।

मौन वाचन, पठन की हर प्रकार की सामग्री का कराया जा सकता है पर संवाद और कविता में सस्वर वाचन अपेक्षित है जबकि निबंध, कहानी और जीवनी के पठन में मौन वाचन उपयुक्त है।

8.2 वाचन के प्रकार

वाचन दो प्रकार के होते हैं –

- सस्वर वाचन
- मौन वाचन

सस्वर वाचन

सस्वर वाचन में शब्दों का उच्चारण, वाक्यों का सार्थक शब्द समूहों में विभाजन, अनुतान, विराम चिह्न, प्रवाह आदि बहुत जरूरी है क्योंकि वे मौखिक अभिव्यक्ति के बहुत पास हैं। इस प्रकार सस्वर वाचन की निम्न विशेषताएँ हैं –

1. सस्वर वाचन एक कौशल है।
2. सस्वर वाचन के शिष्टाचार के अंतर्गत पाठक के खड़े होने का ढंग, पुस्तक पकड़ने की विधि, पुस्तक की आँखों से दूरी, सिर न हिलाना, पुस्तक पर उंगली न रखना तथा सहज एवं स्वाभाविक रूप से पढ़ना शामिल है।
3. सस्वर वाचन दूसरों के लिए किया जाता है, अतएव यह औपचारिक है। इसके अंतर्गत अभिनंदन पत्र, प्रतिवेदन तथा लिखित अभिभाषण पढ़े जाते हैं।
4. सस्वर वाचन में श्रोताओं की संख्या एवं दूरी तथा सामग्री की प्रकृति पर सुर की ऊंचाई तथा गति निर्भर करती है।
5. इनमें शब्दों का शुद्ध उच्चारण, शुद्ध बलाघात, अनुतान, वाक्यों का सार्थक पदबंधों में विभाजन, विराम चिह्नों का ध्यान, सामग्री की प्रकृति के अनुकूल भावपूर्ण वाचन आवश्यक है।

मौन वाचन

मौन वाचन में विकसित योग्यताएँ अध्ययन योग्यता में भी सहायक होती हैं। सस्वर वाचन का कौशल मौन वाचन की योग्यता के लिए आधारभूत सोपान है और मौन वाचन की योग्यता अध्ययन की योग्यता के लिए। व्यावहारिक दृष्टि से मौन वाचन की आवश्यकता सस्वर वाचन की अपेक्षा अधिक होती है। इस दृष्टि से मौन वाचन की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं –

1. मौन वाचन में अर्थ ग्रहण पर जोर दिया जाता है। इसीलिए यह ज्ञानार्जन का मुख्य आधार है।

2. मौन वाचन में पुस्तक को पढ़ते समय सामान्य दूरी पर रखना, बिना होंठ हिलाए तथा बिना बुदबुदाए, पढ़ना, पृष्ठ पर उंगली न रखना तथा स्वयं अर्थग्रहण करते जाना आदि बातें सम्मिलित हैं।
3. मौन वाचन विभिन्न संदर्भों में अपने लिए ही किया जाता है। अतएव यह अनौपचारिक है। इसके अंतर्गत सभी प्रकार की शैक्षिक, कार्यालयी, व्यावसायिक, अनौपचारिक सामग्री का वाचन सम्मिलित है।
4. मौन पठन में वाचन की गति तीव्र होती है किंतु सामग्री की प्रकृति तथा संदर्भ के अनुसार मौन वाचन की गति घटाई–बढ़ाई जा सकती है।

8.3 पाठ्यवस्तु में निहित भाव, विचार एवं तथ्य

भाव– किसी पाठ्यवस्तु के मर्म को समझना उसमें निहित भाव को ही समझना होता है।भाव का संबंध हृदय से होता है।

विचार– किसी पाठ्यवस्तु का मौन वाचन करते समय पाठक के मन या मस्तिष्क में जो प्रश्न, जिज्ञासा, चिंतन व सभाव्य समाधान उत्पन्न होते है; वे विचार कहलाते हैं।

तथ्य– किसी पाठ्यवस्तु का मौन वाचन करते समय उसमें निहित सूचना ही उस पाठ के तथ्य होते हैं। किसी गद्यांश या पद्यांश में निहित वस्तुनिष्ठ जानकारी को ही सूचना या तथ्य कहते है।

इस प्रकार प्रशिक्षक, प्रशिक्षुओं को पाठ्यवस्तु में निहित भाव, विचार एवं तथ्य को जानने का तरीका बताकर मौन वाचन की कला से परिचित कराने में सक्षम होंगे।

गतिविधि

गतिविधि का नाम : तुलना करें।
समय : 10 मिनट
सहायक सामग्री : गद्यांश लिखा हुआ चार्ट।
उद्देश्य– विषयवस्तु की विस्तृत समझ विकसित करना।

- ❖ अब प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं को निर्देश देंगे कि कक्षा–6 की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक **अक्षरा** के **पाठ–10 ईदगाह** कहानी का भाग 1 का प्रशिक्षु मौन वाचन करेंगे।
- ❖ प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं को बताएँगे कि मौन वाचन करते समय किन बातों को ध्यान रखना चाहिए।
- ❖ पुनः प्रशिक्षुओं से पाठ्यवस्तु 'ईदगाह' कहानी के निम्नलिखित अंश का मौन वाचन करवाएँगे–

"अब मियाँ हामिद का हाल सुनिए। अमीना उसकी आवाज सुनते ही दौड़ी और उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगी। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी।

– यह चिमटा कहाँ था ?
– मैंने मोल लिया है।
– कै पैसे में ?
– तीन पैसे में

अमीना ने छाती पीट ली। यह कैसा बेसमझ लड़का है कि दोपहर हुआ, कुछ खाया न पिया। लाया क्या, यह चिमटा! सारे मेले में तुझे कोई चीज न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया।

हामिद ने अपराधी भाव से कहा– तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं इसलिए मैंने इसे ले लिया।"

प्रशिक्षक उपर्युक्त पाठ्यवस्तु का प्रशिक्षुओं से पहले आदर्श वाचन कराएँगे। फिर कठिन शब्दों का अर्थ बताएँगे। मौन वाचन के लिए प्रशिक्षुओं को 10 मिनट का समय दिया जाएगा। मौन वाचन के दौरान यह निर्देश भी प्रशिक्षक, प्रशिक्षुओं को देंगे कि पाठ्यवस्तु का मौन वाचन करते समय उसमें निहित सूचना को प्रशिक्षु ध्यान में रखेंगे।

- पाठ्यवस्तु को पढ़कर प्रशिक्षुओं के मन में क्या विचार आया? प्रशिक्षक, प्रशिक्षुओं से उन्हें व्यक्त करने के लिए कहेंगे।
- प्रशिक्षुओं को कहानी का सबसे मार्मिक अंश कौन सा लगा और क्यों? प्रशिक्षक उन्हें बताने को कहेंगे।
- प्रशिक्षुओं में पाठ्यवस्तु की समझ विकसित हो, ऐसा निर्देश देने के साथ प्रशिक्षक बताएँगे कि 'ईदगाह' के उपर्युक्त गद्यांश का कई बार मौन वाचन करें ताकि कहानी का मर्म उनकी समझ में आ जाए।

मौन वाचन के पश्चात् प्रशिक्षक प्रश्न पूछेंगे–

प्रशिक्षक– इस पाठ्यवस्तु में किसका हाल सुनाया गया है?
प्रशिक्षु– हामिद का।
प्रशिक्षक– हामिद में हाथ में क्या था?
प्रशिक्षु– चिमटा।
प्रशिक्षक– चिमटा हामिद ने कितने पैसे में लिया?
प्रशिक्षु– तीन पैसे में।
प्रशिक्षक– किसकी उँगलियाँ चिमटे के न रहने से जल जाती थी?
प्रशिक्षु– दादी (अमीना) की।

आपके इन उत्तरों को पाठ्यवस्तु में निहित तथ्य कहते हैं।

इसी प्रकार प्रशिक्षुओं के मन की जिज्ञासा को शांत करते हुए प्रशिक्षक बताएँगे कि हामिद की बूढ़ी दादी अमीना के पास चिमटा न होने से उनका हाथ जल जाता था । हामिद का अमीना के प्रति प्रेम ही है कि जहाँ बच्चे मेले से खिलौने खरीद रहे थे, वहीं हामिद बच्चों को खिलौनों की निरर्थकता बताते हुए अपने चिमटे की सार्थकता को भी सिद्ध करता है। इस प्रकार प्रशिक्षक कहानी में निहित दादी एवं पौत्र के प्रेम भाव को स्पष्ट करेंगे । साथ ही उन्हें यह भी बताएँगे कि प्रेमचंद की यह कहानी बाल मनोविज्ञान को व्यक्त करती है। इसलिए वैचारिक दृष्टि से एक बालक के मन को समझने का प्रयास इस कहानी के अंतर्गत किया गया है।

बोध परीक्षण

1. मौन वाचन किसे कहते हैं?
2. सस्वर वाचन क्या है?
3. रसानुभूति किस शिक्षण की विशेषता है?
   (क) गद्य शिक्षण
   (ख) पद्य शिक्षण
   (ग) रचना शिक्षण
   (घ) व्याकरण शिक्षण
4. मौन वाचन का महत्त्व बताइए?

समेकन

पाठ्यवस्तु पठन पर निर्भर करती है। पठन कौशल, भाषा के चार कौशलों में एक महत्त्वपूर्ण कौशल है क्योंकि इस कौशल का विकास विद्यालय स्तर पर होता है। पाठ्यवस्तु गद्य एवं पद्य में विभक्त होती है। जहाँ गद्य में पठन के अंतर्गत आदर्श/मौन वाचन होता है, वहीं पद्य के पठन में सस्वर वाचन। मौन वाचन के माध्यम से प्रशिक्षुओं में पाठ्यवस्तु के प्रति एकाग्रता, शांतिपूर्ण वातावरण का निर्माण, धाराप्रवाह पठन क्षमता, श्रम परिहार एवं स्वाध्याय की क्षमता आदि का विकास होता है। पठन के दोनों माध्यमों (सस्वर वाचन एवं मौन वाचन) से लिपि प्रतीकों की पहचान, उच्चारण कौशल, पठित सामग्री का अर्थ ग्रहण, उसमें निहित विचारों, भावों एवं तथ्यों को समझ लेने की भी योग्यता प्रशिक्षुओं में विकसित होती है। बच्चों को मौन वाचन का अभ्यास कराना आवश्यक होगा; लेकिन साथ ही प्रशिक्षक, प्रशिक्षुओं को यह निर्देश भी देंगे कि मौन वाचन करते समय प्रशिक्षु किन बातों पर ध्यान दें। मौन वाचन के बाद प्रशिक्षक उससे (गद्यांश) संबंधित प्रश्न प्रशिक्षुओं से पूछेंगे। इसके बाद प्रशिक्षक स्वयं उसमें (गद्यांश) निहित भाव, विचार एवं तथ्यों को स्पष्ट करेंगे।

अतः हम कह सकते है कि मन में पढ़कर किसी भावना का उमड़ना–घुमड़ना पाठ्यवस्तु में निहित भाव को दर्शाती है, अतः मौन वाचन के बाद जो प्रश्न मन उठते हैं और उन प्रश्नों का उत्तर सोचने को हम मजबूर होते हैं, यह सोचने की प्रक्रिया मौन वाचन में निहित विचार को व्यक्त करती हैं। मौन वाचन के अंतर्गत प्रशिक्षु पाठ्यवस्तु में निहित जो सूचनाएँ ग्रहण करते हैं, वह पाठ्यवस्तु की तथ्यात्मक जानकारी होती है।

इस प्रकार पाठ्यवस्तु में मौन वाचन द्वारा प्रशिक्षक, प्रशिक्षुओं में भाव, विचार एवं तथ्य ग्रहण की क्षमता विकसित कर पाठ को सुगम, सरल, व सुबोध बना सकते हैं।

स्व आकलन

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) पठन कौशल भी है और ....भी। (योग्यता/यांत्रिक)
(ख) मौन वाचन का उद्देश्य..............है। (एकाग्रता/उदाहरण)
(ग) मौन वाचन द्वारा बालक ....सीखता है। (सस्वर वाचन/शुद्ध उच्चारण/विचार)
(घ) .... की प्रधानता पद्य में रहती है। (भाव/विचार)

2. सुमेलित कीजिए–

(क) वाचन के प्रकार	बिना ध्वनि के पाठ को पढ़ना
(ख) सस्वर वाचन	सस्वर वाचन, मौन वाचन
(ग) मौन वाचन	विचार/तर्क चिंतन
(घ) गद्य में प्रधानता	लिखित भाषा के ध्वनियुक्त वाचन

3. सत्य/असत्य का चयन कीजिए–

(क) मौन पठन में स्वरहीनता, पठन गति तथा अर्थ ग्रहण पर विशेष ध्यान दिया जाता हैं। (सत्य/असत्य)
(ख) पठित सामग्री का अर्थ ग्रहण सूचनात्मक, व्याख्यात्मक तथा सर्जनात्मक तीन स्तरों पर होता हैं। (सत्य/असत्य)
(ग) मौन वाचन तथा सस्वर वाचन अर्थग्रहण से रहित है। (सत्य/असत्य)
(घ) मौन वाचन द्वारा बालक अपना ध्यान विषय–वस्तु पर केंद्रित कर सकेंगे। (सत्य/असत्य)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. मौन वाचन का उद्देश्य है—
(क) अर्थ ग्रहण पर बल (ख) एकाग्रता
(ग) बालकों में चिंतन एवं तर्कशक्ति का विकास। (घ) इनमें से सभी
2. पठन का अर्थ है—
(क) सस्वर वाचन (ख) मौन वाचन
(ग) क तथा ख दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं।
4. वाचन द्वारा अधिगम किस प्रकार प्राप्त की जा सकती है?
(क) सुनकर (ख) स्वयं बोलकर
(ग) पढ़कर (घ) इनमें से सभी
5. वाचन की आवश्यकता होती है –
(क) महापुरुषों की जानकारी तथा उनके विचारों को ग्रहण करने।
(ख) अवकाश के क्षणों का सदुपयोग करने हेतु, रचनाओं को पढकर
(ग) रचना पढ़कर व अन्य लोगों को सुनाकर
(घ) इनमें से सभी।
6. वाचन का महत्त्व है—
(क) वाचन एकाकी हो सकता है।
(ख) वाचन सामूहिक हो सकता है।
(ग) वाचन द्वारा बच्चा अपनी क्षमतानुरूप लाभान्वित हो सकता है।
(घ) इनमें से सभी।
7. अनुकरण वाचन का उद्देश्य नहीं है—
(क) शुद्ध वाचन का अभ्यास कराना (ख) लिखकर समझाना
(ग) विराम चिह्नों आदि का ज्ञान कराना (घ) वाचन कुरीतियों को समझना और समझाना
8. मौन पठन में मुख्यतः –
(क) तेज गति से पाठ को पढ़ा जाता है
(ख) शब्द–भंडार विकसित किया जाता है
(ग) मन ही मन बुदबुदाते हुए पढ़ा जाता है
(घ) गहन अर्थ को आत्मसात करने का प्रयास किया जाता है
9. आप सस्वर पठन में अनिवार्यतः किस साहित्यिक विधा का समर्थन करेंगे—
(क) आत्मकथा का (ख) एकांकी का
(ग) यात्रा वृत्तांत का (घ) कविता का
10. अपने भावों और विचारों को शुद्ध स्पष्ट उच्चारण के साथ व्यक्त करना है—
(क) वाचन कौशल (ख) श्रवण कौशल
(ग) पठन कौशल (घ) इनमें से कोई नहीं
11. निःसंकोच किसी अपरिचित व्यक्ति के सामने स्वाभाविक रूप से स्वयं को अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास, उद्देश्य है—
(क) श्रवण कौशल (ख) बोलने का कौशल
(ग) लेखन कौशल (घ) इनमें से कोई नहीं

12. मुखर पठन संबंधित है–
(क) वाचन कौशल
(ख) श्रवण कौशल
(ग) पठन कौशल
(घ) इनमें से कोई नहीं

13. मौखिक भाषा के उद्देश्य है–
(क) शुद्ध और उचित भाषा में अपनी बात दूसरों के सामने रखने की योग्यता
(ख) अपनी रुचि के विषयों पर स्वभाविकता के साथ बात–चीत करने की योग्यता
(ग) अपने विचारों को संगठित रूप से प्रस्तुत कर सकने की योग्यता
(घ) उपरोक्त सभी योग्यता विकसित करना

विचार विश्लेषण

1. मौखिक अभिव्यक्ति की उपयोगिता बताइए।
2. वाचन के दोषों को किस प्रकार दूर किया जा सकता है?
3. मौन वाचन से आप क्या समझते हैं? मौन वाचन का महत्त्व भी लिखिए।
4. सस्वर और मौन वाचन में क्या अंतर है? स्पष्ट कीजिए।
5. स्वतंत्र अभिव्यक्ति से आप क्या समझते हैं?
6. वाचन का महत्त्व क्या है? बताइए।
7. वाचन कितने प्रकार का होता है? बताइए।

इकाई 9

शिक्षक के निर्देशानुसार छोटे-छोटे वाक्य लिखना

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु, वाक्य निर्माण के विभिन्न कारकों को समझते हैं।
2. प्रशिक्षु, वाक्य निर्माण के विविध तत्त्वों का उपयोग कर सार्थक वाक्य लिख लेते हैं।
3. प्रशिक्षु, वाक्य के विभिन्न प्रकार के वाक्यों को समझ के साथ पढ़ते हैं।
4. प्रशिक्षु, वाक्य निर्माण में विभिन्न सावधानियों को जानते हैं।
5. प्रशिक्षु, विभिन्न वाक्यों से संबंधित प्रश्नों के उत्तर देते है।

शैशवावस्था में शिशु अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए रोता है, फिर कुछ शब्दों के द्वारा अपनी बातों को रखता है और कभी–कभी उसके कुछ शब्द पूरे वाक्य का कार्य करते हैं। जैसे– पानी या किसी के पास गिलास देखकर बच्चा मम–मम करता है और उसके एक शब्द से ही उसका वाक्य स्पष्ट हो जाता है कि उसे पानी पीना है या वह पानी पीना चाहता है। वही बच्चा ढेर सारे शब्दों, वाक्यों एवं भावनाओं के साथ विद्यालय में प्रवेश करता है, तो हमारी भूमिका उस मूर्तिकार के समान हो जाती है जो अपने हाथों से एक बेजान पत्थर की ऐसी मूर्ति तैयार कर देता है जो पत्थर में भी सजीवता का आभास कराती है और यह मूर्तिकार की अंगुलियों एवं उसकी कला का प्रभाव है।

प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं में वाक्य लेखन कौशल विकसित करने के लिए कुछ क्षमताओं का विकास कर सकते हैं। प्रशिक्षक के निर्देशानुसार छोटे–छोटे वाक्य लिखने के कौशल विकास में ध्यान रखने योग्य बातें–

- शब्दों का व्यवस्थित क्रम
- वाक्य की स्पष्टता व अर्थग्राहयता
- वाक्य का सामर्थ्य
- सरलता व बोधगम्यता
- वाक्यों की रचनात्मकता

प्रशिक्षकों हेतु निर्देश

1. वाक्य छोटे, सरल और स्पष्ट होने चाहिए।
2. वाक्य में चिह्नों, वचनों तथा कारकों का विशेष ध्यान देना चाहिए।
3. परिवेश से जुड़े सरल वाक्यों के उदाहरण का प्रयोग करना चाहिए।
4. वाक्य के विभिन्न अवयवों को प्रशिक्षुओं के समक्ष लिखकर स्पष्ट कराना चाहिए।
5. वाक्य–निर्माण में विभिन्न असावधानियों से परिचय कराना चाहिए।

उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखकर प्रशिक्षक अपने प्रशिक्षुओं को उत्कृष्ट/बेहतरीन प्रशिक्षण दे सकते हैं।

प्रशिक्षुओं के लिए निर्देश

1. सर्वप्रथम प्रशिक्षु समय का उचित पालन करेंगे।
2. बच्चों के साथ मित्रवत् व्यवहार बनाकर अपने विषय के प्रति जागरुक करेंगे।
3. अनावश्यक चर्चा से बचेंगे।

4. अपने विषय को सरलतम रूप से बच्चों के मध्य स्थापित करेंगे तथा सभी बच्चों को प्रश्नोत्तर के लिए समान अवसर प्रदान करेंगे।
5. समूह में विभाजित करके एक–एक शब्द देकर वाक्य बनाने का अवसर प्रदान करेंगे।

गतिविधि

❖ प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं के सामने चित्र बने हुए तथा कुछ वाक्य लिखे हुए चार्ट प्रदर्शित करेंगे–

गतिविधि का नाम : तुलना करें।
समय : 10 मिनट
सहायक सामग्री : सामान्य क्रियाकलाप लिखी हुई पर्चियाँ।
उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

फूल	तितली	बगीचा	चिड़िया

इन शब्दों को जोड़कर कुछ लिखिए।

चित्र को देखकर कुछ वाक्य लिखिए।

इन वाक्यों में शब्दों को सही क्रम में लिखिए।

1. **पानी धान के में खेत है।**
2. **पेड़ बैठी है चिड़िया पर।**
3. **नल आ रहा पानी में है।**
4. **बच्चे रहे झूल बाग में हैं झूला।**
5. **गा रही गाना कविता है।**

प्रशिक्षक बताएँगे कि इन तीनों गतिविधियों में आपने शब्दों से कुछ लिखा और शब्द को सही क्रम में करके लिखा। शब्दों के इसी सार्थक क्रम को वाक्य कहते हैं।

प्रस्तुतीकरण

वाक्य– शब्दों का वह संगठन या प्रयोग जिनका एक उचित अर्थ निकलता हो, वह वाक्य कहलाता है। यथा– पत्ते गिरते है।

आरंभ में बालकों के लिए शब्द–निर्माण के पश्चात् वाक्य का ही विशेष महत्त्व होता है प्रत्येक भाषा का आधार वाक्य ही है। जिसे हम परंपरा से सीखते हैं।

बच्चे जब तक शुद्ध वाक्य नहीं बना पाएँगे तब तक उनके लिए बड़े–बड़े गद्यांश, अनुच्छेद, निबंध इत्यादि लिखने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

वाक्य केवल शब्दों का समूह ही नही अपितु भावाभिव्यक्ति का साधन भी है। इसलिए इनका सही संयोजन होना परम आवश्यक है। वाक्य का निर्माण उद्देश्य और विधेय को मिलाकर किया जाता है।

वाक्य का यथाक्रम–विन्यास होना आवश्यक है। साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ के अनुसार– योग्यता, आकांक्षा, सन्निधि (निकटता) से युक्त समूह को वाक्य कहते हैं।

"वाक्यं स्याद्योग्यताकाङ्क्षासंति युक्तः पदोच्चयः"

1. आकांक्षा, योग्यता, सन्निधियुक्त पदों का समूह वाक्य कहलाता है।
2. दूसरे शब्दों में, पदों का समूह वाक्य कहलाता है।

आकांक्षा अर्थात् इच्छा और हमारी कल्पनाशीलता के द्वारा उत्पन्न शब्दों का समूह ही वाक्य है। जिस व्यक्ति की कल्पनाशीलता चिंतन जितना अधिक होगा उसका वाक्य विन्यास भी उतना ही श्रेष्ठ होगा।

एक शिक्षक एवं प्रशिक्षु की यही भूमिका होगी वह बच्चों के अंदर से उनके कल्पनाशक्ति को बाहर लाकर उनसे उचित वाक्य–विन्यास करवा सके।

शिक्षक बच्चों का प्रथम शिक्षण ध्वनियों से कराते हैं। उसके बाद वर्ण/अक्षर फिर शब्द फिर वाक्य की जानकारी दी जाती है।

संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान पतंजलि ने पूर्ण अर्थ की प्रतीति कराने वाले शब्द समूह को वाक्य की संज्ञा दी है।

वाक्य रचना को प्रभावी बनाने के लिए हमें बच्चों के मानसिक कल्पनाओं को जाग्रत करना होगा और अच्छे वाक्य कैसे लिखे जाते हैं इसका अभ्यास कराना होगा इसके लिए हमें वाक्य के तीन गुण जो आचार्य विश्वनाथ द्वारा बताए गए हैं उन्हें जानना होगा–

1. योग्यता
2. आकांक्षा
3. सन्निधि

1. **योग्यता–** वाक्य ऐसा हो जिससे उसके भाव की पूर्ण स्पष्टता हो; जैसे– **मछली पानी में उड़ती है**।यहाँ सभी शब्द अर्थपूर्ण है,कर्ता मछली और क्रिया उड़ना है लेकिन भाव स्पष्ट नहीं कर पा रहा है यदि यहीं पर यह वाक्य लिखा जाय **'मछली पानी में तैरती है'** तो मछली के तैरने का भाव स्वतः स्पष्ट हो जाता है।

2. **आकांक्षा–** आकांक्षा का अर्थ है कि शब्दों का शब्दों से परस्पर संबंध बना रहे जिससे पढ़ने वाले की जिज्ञासा का समाधान हो सके; जैसे– तितली, भौंरा फूल है। यहाँ पर शब्द के बाद शब्द है लेकिन एक दूसरे में संबंध नहीं है जिससे जिज्ञासा पूर्ण नहीं हो पा रही है। इसी को यदि हम इस तरह लिखें कि '**तितली और भौंरा दोनों फूल पर मंडरा रहे हैं**' यह वाक्य जिज्ञासा को पूर्ण कर रहा है।

3. **सन्निधि**–इसका अर्थ निकट होना अर्थात् एक शब्द के बाद अविलंब दूसरे शब्द का उच्चारण किया जाना; जैसे– 'मलेरिया और डेंगू दोनों मच्छरों के काटने से फैलते हैं।' इस वाक्य में शब्द और अर्थ दोनों की स्पष्टता प्रकट हो रही हैं।

हमें वाक्य निर्माण में कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए, जो कि निम्नलिखित हैं–

1. वाक्य परिवेश से जुड़े हों।
2. शब्द अधिक कठिन न हो।
3. वाक्य बहुत बड़े न हो।
4. व्याकरण के नियमों का ध्यान रखा जाए।
5. एक ही शब्द बार–बार प्रयोग न हो।
6. वाक्यों में सत्यता हो।
7. शब्दों को अधिक जटिल व क्लिष्ट न बनाया जाय।
8. वाक्य में उचित विराम चिह्नों का प्रयोग हो।

बोध परीक्षण

1. शब्दों के सार्थक समूह को क्या कहते हैं ?
2. वाक्य बनाते समय हमें किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
3. भाषा की लघुतम इकाई क्या है?
4. वाक्य के तीन गुण कौन–कौन से बताए गए हैं?

समेकन

किसी भी भाषा की उन्नति और समृद्धि भाषा के व्यवहृत उपयोग और प्रयोग पर निर्भर है। विचारों के आदान–प्रदान का सरल रोचक साधन व्यक्ति की भाषा है। व्यक्ति शैशवावस्था से बाल्यावस्था तक शब्दों में ही अपनी संपूर्ण वाक्य व भावनाओं की अभिव्यक्ति कर देता है। जब बच्चा शिक्षा ग्रहण करने विद्यालय में प्रवेश करता है तब वर्ण/अक्षर, शब्द, फिर वाक्य से भाषा सीखता है। भाषा शिक्षण में वाक्य ही मूल इकाई का कार्य करता है। वाक्यों के द्वारा अनुच्छेद, निबंध, कहानी इत्यादि को साहित्यिक शैलियों में लिख सकता है। बच्चों को यदि सही वाक्य लिखने दिया जाए तो उनके रचनात्मक कौशल को अत्यधिक विकसित किया जा सकता है।

प्रोजेक्ट वर्क

बालक/बच्चे अपने परिवार के सदस्यों विषय में दस लघु वाक्य लिखकर लाएँ।

इकाई 10
औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्र

10.1 पत्र : विषेशताएँ, महत्त्व एवं प्रकार
10.2 औपचारिक पत्र एवं इसका प्रारूप
10.3 अनौपचारिक पत्र : लेखन के मुख्य बिंदु, प्रारूप एवं इसके प्रकार

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु पत्र के अर्थ एवं पत्र लेखन की विशेषताओं को बता लेते हैं।
2. पत्र के प्रकार के बारे में बता लेते हैं।
3. औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्र के आवश्यक नियमों को बता लेते हैं।
4. किसी भी विषय पर पत्र लेखन कर लेते हैं।

पत्र मानवीय संबंधों में सेतु का कार्य करता है। पत्र से आत्मीयता का बोध होता है। पत्र, चिट्ठी या खत किसी कागज या अन्य माध्यम पर लिखे संदेश को कहते हैं। प्राचीन समय में पत्र ही दो व्यक्तियों के बीच संचार का सबसे विश्वसनीय माध्यम था। वर्तमान समय में इलेक्ट्रानिक संचार के साधनों की वजह से पत्र की अहमियत भले ही कम हो गई है लेकिन आज भी सरकारी कार्यालयों में यह संचार का सबसे मजबूत और प्रमाणिक साधन है। पत्रों का हमारे जीवन मे एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। पत्र अपनेमन की भावनाओं को व्यक्त करने का उत्तम साधन है। जीवन में सफल होने के लिए सभी में प्रभावी पत्र लेखन की क्षमता होनी चाहिए।

प्रशिक्षकों हेतु निर्देश

1. पत्र लेखन की भाषा सरल एवं स्पष्ट होनी चाहिए।
2. पत्र लेखन के महत्त्व को स्पष्ट करना चाहिए।
3. पत्र लेखन के प्रकार को स्पष्ट करना चाहिए।
4. पत्र को प्रामाणिक प्रारूप पर लिखकर ही प्रशिक्षुओं के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए।

प्रशिक्षुओं के लिए निर्देश

1. प्रशिक्षु भी अपनी वास्तविक कक्षा एवं एक माह के इंटर्नशिप के दौरान उपर्युक्त बताई गई बातों का ध्यान रखेंगे।
2. प्रशिक्षण के दौरान संबंधित विषय से जुड़े सवाल–जबाब के लिए सभी को अवसर प्रदान करें।
3. समूह कार्य में सभी को प्रतिभाग करने का अवसर मिले।

गतिविधि

❖ प्रशिक्षक इस गतिविधि के लिए बच्चों के दो समूह बनाएँगे और समूह का नामकरण अपनी सुविधानुसार करेंगे और दोनों समूहों को कुछ संदेश लिखे कार्ड वितरित करेंगे। प्रत्येक समूह लिफाफे से कार्ड निकालकर उस पर लिखे संदेश को पढ़ेगा और पढ़ने के बाद कार्ड के पीछे उसका उत्तर लिखकर लिफाफे में डालकर वापस करेंगे।

गतिविधि का नाम : तुलना करें।
समय : 10 मिनट
सहायक सामग्री : सामान्य क्रियाकलाप लिखी हुई पर्चियाँ।
उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

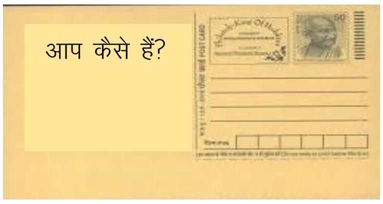

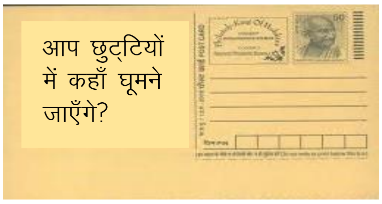

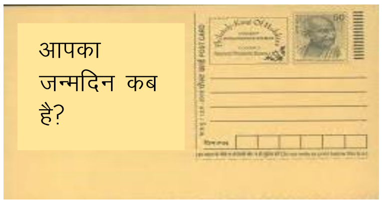

इसके बाद प्रशिक्षक स्पष्ट करेंगे कि कागज पर लिखकर अपने संदेश पहुचाँना और फिर उसका उत्तर लिखकर भेजना ही **पत्र लेखन** कहलाता है। प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं को यह बताएँगे कि आज भी कोई सरकारी कार्य या व्यवसायिक कार्य बिना पत्र लिखे संभव नही है।

प्रस्तुतीकरण

10.1 पत्र : विशेषताएँ, महत्त्व एवं प्रकार

पत्र लेखन भावों तथा विचारों के आदान–प्रदान का एक सशक्त माध्यम है। पत्र का लेखक जहाँ अपना संदेश पत्र के माध्यम से भेजता है, वहीं अपनी इच्छाएँ तथा आवश्यकताएँ उपयुक्त व्यक्ति तक पहुँचा देता है। पत्र में लेखक के व्यक्तित्व की छाप होती है। पत्र एक सेतु के समान है, जो दूर बैठे व्यक्तियों को एक दूसरे से जोड़ने में सहायक है। पत्र लेखन एक ऐसी कला है, जिसका हमारे जीवन में प्रायः उपयोग होता है। जहाँ बचपन में हम संबंधियों या मित्रों को पत्र लिखते है, वहीं बड़े होने पर यह क्षेत्र अधिक विस्तृत हो जाता है। अच्छा पत्र वही है, जिसे पढ़कर लिखी हुई बात सरलतापूर्वक समझ में आ जाए।

व्यापारी एक दूसरे को अपने व्यवसाय से संबंधित पत्र लिखते हैं। ग्राहक अनेक जानकारियाँ प्राप्त करने के लिए पत्र लिखते हैं। कार्यालयी ढाँचे में अधिकारियों और कर्मचारियों का एक दूसरे से मिलकर बात करना संभव नहीं होता इसलिए अधिकतर काम पत्रों के माध्यम से ही किए जाते हैं।

पत्र लिखते समय ध्यान देने योग्य बातें/पत्र लेखन की विशेषताएँ

- **सरलता**– पत्र सरल भाषा में लिखना चाहिए। पत्र की भाषा सहज, सरल सरस व स्पष्ट होनी चाहिए।
- **स्पष्टता**– हमें जो कुछ भी पत्र में लिखना है, यदि वह स्पष्ट होगा तो पत्र प्रभावशाली होगा। शुद्ध, सरल भाषा, उचित एवं सटीक शब्दों का चयन, वाक्य रचना की सरलता पत्र प्रभावशाली बनाने में हमारी सहायता करती है।

- **संक्षिप्तता**– पत्र लिखते समय हमें अनावश्यक विस्तार से बचना चाहिए। अनावश्यक विस्तार पत्र को नीरस बना देता है। पत्र जितना संक्षिप्त व सुसंगठित होगा, उतना ही अधिक प्रभावशाली भी होगा।
- **शिष्टाचार**– पत्र प्रेषक और पत्र पाने वाले के बीच कोई न कोई संबंध होता है। आयु व पद में बड़े व्यक्ति को आदरपूर्वक, मित्रों को सौहार्द से और छोटों को स्नेहपूर्वक पत्र लिखना चाहिए ।
- **मौलिकता**– पत्र का एक महत्त्वपूर्ण गुण उसकी मौलिकता है,लिखने वाले को स्वयं के विषय में कम तथा प्राप्तकर्ता के विषय में अधिक लिखना चाहिए।
- **उद्देश्यपूर्णता**– पत्र जिस उद्देश्य से लिखा जा रहा है उस उद्देश्य की पूर्ति करने वाला हो।

पत्र लेखन का महत्त्व

- निजी अथवा व्यापारिक सूचनाओं को प्राप्त करने तथा भेजने के लिए पत्र व्यवहार अत्यंत प्रभावशाली माध्यम है। प्रेम, क्रोध, जिज्ञासा, प्रार्थना, आदेश, निमंत्रण आदि अनेक भावों को व्यक्त करने के लिए पत्र लेखन का सहारा लिया जाता है।
- पत्रों के माध्यम से संदेश भेजने में लिखित सूचना पूर्ण रूप से गोपनीय (पोस्टकार्ड को छोड़कर) होती है। पत्र भेजने वाले तथा पत्र प्राप्त करने वाले के आलावा किसी भी अन्य व्यक्ति को पत्र में लिखित संदेश पढ़ने का अधिकार नहीं होता है।
- शिक्षक, छात्र, व्यापारी, प्रबंधक, ग्राहक व अन्य समस्त सामान्य व्यक्तियों व विशेष व्यक्तियों से सूचना अथवा संदेश लेने–देने के लिए पत्र लेखन का प्रयोग किया जाता है।

पत्र के प्रकार

- औपचारिक पत्र
- अनौपचारिक पत्र

10.2 औपचारिक पत्र एवं इसका प्रारूप

अर्द्ध–सरकारी, गैर–सरकारी या सरकारी कार्यालय को जो भी पत्र लिखे जाते हैं, वे सभी पत्र औपचारिक पत्रों के अंतर्गत आते हैं। कार्यालय द्वारा अपने अधीनस्थ विभागों को जो पत्र लिखे जाते हैं, वे सब इसी श्रेणी में आते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है, औपचारिक पत्र ऐसे लोगों को लिखा जाता है जिनसे लिखने वाले का कोई व्यक्तिगत या पारिवारिक संबंध नहीं होता है। इन पत्रों में शिष्टाचार, अभिवादन, सटीक और संयत भाषा आदि औपचारिकताओं का विशेष ध्यान रखा जाता है।

- अधिकारियों को लिखा गया पत्र
- प्रधानाचार्य को लिखा गया पत्र
- नौकरी आदि के लिए आवेदन पत्र
- संपादक को लिखा गया पत्र
- पुस्तक विक्रेता या किसी व्यापारी को लिखा गया पत्र
- किसी समस्या आदि के संबंध में सुझाव देने या शिकायत हेतु लिखे गये पत्र।

औपचारिक पत्र का प्रारूप

- **सेवा में–** सबसे बायीं ओर ऊपर सेवा में लिखकर पत्र प्राप्तकर्ता का पदनाम तथा पता लिखें।
- **विषय** – जिस विषय में आप पत्र लिख रहे हैं, उसे एक वाक्य में लिखें।
- **संबोधन**– जैसे महोदय, महोदया, आदि शिष्टाचार युक्त शब्दों का प्रयोग।

विषय वस्तु

- "निवेदन है कि" वाक्य से आरंभ करके अपनी समस्या के बारे में लिखना चाहिए।
- ''आपसे निवेदन है कि" लिख कर आप उनसे जो उम्मीद रखते हैं या उनसे आपको जिस विषय में बात करनी है वह लिखें।

हस्ताक्षर व नाम

धन्यवाद या कष्ट के लिए क्षमा जैसे शब्दों का प्रयोग करना चाहिए और अंत मे भवदीय, भवदीया, प्रार्थी, प्रार्थिनी, शुभचिंतक, आपका आज्ञाकारी शिष्य/शिष्या दाईं ओर लिखकर अपना हस्ताक्षर करें और उसके नीचे अपना नाम लिखें।

दिनांक

जिस दिन पत्र लिखा जा रहा उस दिन की तारीख पत्र के बाईं ओर लिखें।

औपचारिक पत्रों के प्रारूप का उदाहरण

प्रधानाचार्य को लिखे जाने वाले पत्र का प्रारूप

सेवा में,
प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या
विद्यालय का नाम ...
पता ...

विषय– ....

महोदय/महोदया,

निवेदन है कि..
....
....
....
....
....
(मुख्य विषय)

आपसे निवेदन है कि ....
....
....
.... (समापन)

धन्यवाद आपका आज्ञाकारी
दिनांक– ... नाम– ...
कक्षा– ...
अनुक्रमांक– ...

आवेदन पत्र

सेवा में,
अधिकारी के पद का नाम
कार्यालय/संस्था का नाम
पता– ...

विषय– ....

महोदय/महोदया,

....
....
....
....
(विषय की संक्षिप्त जानकारी)
....
....
....
(स्ववृत्त या अपने बारे में बायोडाटा)
....
....
....
.... (समापन)

दिनांक– ... भवदीय
हस्ताक्षर– ...
नाम– ...
पता– ...

10.3 अनौपचारिक पत्र : लेखन के मुख्य बिंदु, प्रारूप एवं इसके प्रकार

अनौपचारिक पत्राचार उनके साथ किया जाता है, जिनसे हमारा व्यक्तिगत संबंध होता है। इसे व्यक्तिगत पत्राचार भी कहा जाता है। इन पत्रो में व्यक्तिगत सुख–दु:ख का ब्यौरा और विवरण होता है। ये पत्र अपने परिवार के लोगों, मित्रों और निकट संबंधियों को लिखे जाते हैं। इन पत्रों को लिखने में कुछ खास नियमों का पालन नहीं करना पड़ता है।

अनौपचारिक पत्र लिखने हेतु मुख्य बिंदु

- अनौपचारिक पत्र स्वतंत्र होते हैं, इनमें भाषा और भावनाओं की पाबंदी नहीं होती है।
- इस प्रकार के पत्र में सुख–दु:ख, मन की बात और भावनाओं को व्यक्त कर लिख सकते हैं।
- पत्र में भाषा साधारण बोलचाल की होनी चाहिए जिससे प्राप्तकर्ता को पत्र में लिखी बातें आसानी से समझ में आ जाएँ।
- अनौपचारिक पत्र की शब्द सीमा 200 से अधिक हो सकती है।

अनौपचारिक पत्र का प्रारूप

- **पता**– ऊपर बाईं ओर पत्र भेजने वाले का नाम व पता।
- **दिनांक**– पत्र लिखने की तारीख।
- **विषय**– अनौपचारिक पत्रों मे विषय लिखने की आवश्यकता नहीं होती है।
- **संबोधन**– जिस व्यक्ति के लिए पत्र लिखा जा रहा है उसके लिए उचित संबोधन का प्रयोग किया जाना चाहिए। जैसे– बड़ो के लिए आदरणीय, पूजनीय, पूज्य, श्रद्धेय और छोटों के लिए प्रिय, स्नेही, चिरंजीवी, प्यारे, प्रिय मित्र आदि शब्द का प्रयोग किया जाता है।
- **अभिवादन**– जिसको पत्र लिखा जा रहा है उसके साथ आपका क्या संबंध है, उसके अनुसार अभिवादन शब्द का प्रयोग करना चाहिए। जैसे– चरण स्पर्श, सादर प्रणाम, नमस्कार, नमस्ते इत्यादि।
- **विषय**– एक अच्छा पत्र लिखने के लिए उसे तीन भागो में विभक्त कर लिखना चाहिए–
  - **प्रथम भाग में**– मैं/हम यहाँ कुशलतापूर्वक हूँ/है, आशा करता हूँ कि आप भी कुशलपूर्वक होगें।
  - **दूसरे भाग में**– जिस लिए पत्र लिखा गया है उस विषय का उल्लेख किया जाना चाहिए।
  - **तीसरे भाग में**– समाप्ति से थोड़ा पहले कुछ वाक्य अपने भाई–बहन, माता पिता, रिश्तेदार व सगे संबंधियों की कुशलता के लिए लिखना चाहिए; जैसे– मेरी तरफ से बड़ो को प्रणाम, छोटी बहन को मेरा प्यार आदि ।
- **समाप्ति**– पत्र के अंत में प्रेषक का संबंध जैसे– आपका पुत्र, आपकी पुत्री, आपका भाई आदि।

प्रेषक का पता..
दिनांक...
संबोधन..
अभिवादन...
विषय–प्रथम भाग.................................. (कुशल मंगल समाचार)
दूसरा भाग.. (विषय वस्तु जिस बारे में पत्र व रहे हैं।)
तीसरा भाग... (समाप्ति से पहले)
प्राप्तकर्ता का प्रेषक के साथ संबंध.......
प्रेषक का नाम..

अनौपचारिक पत्र के प्रकार

- शुभकामना पत्र
- निमंत्रण पत्र
- बधाई पत्र
- सांत्वना पत्र
- विशेष अवसर पर लिखे पत्र
- जानकारी या सलाह के लिए पत्र।

प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं को पत्र लेखन की विधा में पारंगत बनाने के लिए कुछ इस प्रकार के पत्रों को लिखकर अभ्यास करा सकते हैं–

- बड़े भाई का जन्मदिन के उपहार भेजने पर धन्यवाद पत्र।
- रुपये मंगवाने हेतु पिताजी को पत्र लिखिए।
- मित्र को परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर बधाई पत्र।
- बहन की शादी के लिए रिश्तेदार (मामा जी) को निमंत्रण पत्र।
- स्वास्थ्य खराब होने पर अवकाश हेतु आवेदन पत्र।
- बिजली बंद होने पर बिजली विभाग को शिकायत पत्र।
- अपने छोटे भाई को पैसे बचाने और वित्तीय से रूप जागरूक होने की सलाह देते हुए एक पत्र लिखना।
- अपने मित्र को पत्र लिखकर बताएँ कि आपने नया साल कैसे मनाया।
- विद्यालय में खेल सामग्री मंगवाने के लिए प्रधानाचार्य को प्रार्थना पत्र लिखिए।
- संचारी रोगों को रोकने हेतु स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए।

बोध परीक्षण

1. पत्र लेखन का क्या महत्त्व है?
2. पत्र लेखन करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
3. अनौपचारिक पत्रों के मुख्य प्रकार कौन–कौन से है?
4. औपचारिक पत्रों के प्रकार बताइए?
5. औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्रों में अंतर स्पष्ट करें?

समेकन

आज इलेक्ट्रानिक युग है और विश्व डिजिटल साक्षर एवं तकनीकी का प्रयोग करना सीख गया है। इन सब के बीच भी पत्र का महत्त्व कम नहीं हुआ है। पत्र भेजने का तरीका बदला है– पहले कार्ड, पोस्टकार्ड, अंतर्देशीय इत्यादि से संदेश भेजे जाते थे। अब पत्र ऑनलाइन भेजे जाते हैं, इसलिए यदि देखे तो पत्र लेखन के आवश्यक निर्देशों, सावधानियों को जानना हर व्यक्ति के लिए अति आवश्यक है। एक अच्छा लिखा हुआ पत्र व्यक्ति के व्यक्तित्व की गरिमामयी उपस्थिति दर्शाता है। पत्रों को लिखने के शब्द– शिष्टचार, संक्षिप्त रूप से कही गयी स्पष्ट, सरल एवं मौलिक बात लिखने वाले के उद्देश्य पूर्ण करने में सफल होते हैं और पत्र प्राप्तकर्ता पर अपना सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। इसलिए आदर्श पत्र लेखन कौशल में बच्चों को दक्ष बनाना अतिआवश्यक प्रतीत होता है।

इकाई 11

विषयों पर मौलिक रूप से लिखना

11.1 मौलिक अभिव्यक्ति में लेखन
11.2 मौलिक लेखन हेतु विषय चयन
11.3 मौलिक लेखन अभिव्यक्ति का महत्त्व एवं उपयोगिता

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु, लेखन योग्य विषयों को पहचान लेते हैं।
2. प्रशिक्षु, परिचित विषयों पर अपने मौलिक विचार को लिखने में समर्थ हो लेते हैं।
3. प्रशिक्षु, बच्चों में नवीन विचारों का सृजनात्मक विकास कर लेते हैं।
4. प्रशिक्षु, बच्चों में अपने आसपास की चीजों को देखकर मौलिक विचारों के लेखन की क्षमता का विकास कर लेते हैं।

मौलिक शब्द का अर्थ होता है मूल रूप से या स्वतःस्फूर्त रूप से किया गया। मौलिक लेखन भी एक प्रकृति प्रदत्त प्रक्रिया है। इसमें व्यक्ति स्वयं के विचारों को स्वतंत्र रूप से लेखनी के माध्यम से अभिव्यक्त करता है मौलिक लेखन कहलाता है। मौलिक लेखन व्यक्ति के वैचारिक काल्पनिक एवं तर्क लगाने की क्षमता को प्रदर्शित करता है। भाषायी दक्षता में सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना इत्यादि आवश्यक है उसी में किसी विषय पर मौलिक लेख लिख लेना भी दक्षता की पहचान है। बच्चे कितना सीख पाए और उनके शब्दों की संपदा में कितनी वृद्धि हुयी इसका आकलन हम उसके मौलिक लेखन के द्वारा ही जान सकते हैं। बच्चों की विषयगत रुचियों को जानने का साधन भी मौलिक लेख ही होता है।

बच्चों में मौलिक लेखन कौशल का विकास किसी भी भाषा शिक्षक की बड़ी उपलब्धि मानी जा सकती है। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि मनुष्य एक चिंतनशील प्राणी है। वह हर विषय पर चिंतन करता है। यही बाल्यावस्था में बच्चों की स्थिति होती है। शिक्षक का कार्य बच्चों की कल्पना को शब्दों में अभिव्यक्त करने की क्षमता संवर्धन कर देना है।

प्रशिक्षकों हेतु निर्देश

1. मौलिक लेख से संबंधित विषय आसपास के होने चाहिए।
2. विषय अत्यंत सरल तथा स्थानीय हो।
3. मौलिकता (मौलिक चिंतन) सही और अर्थपूर्ण हो।
4. मौलिक विचार अधिक प्रश्नगत अथवा तर्कगत नहीं होना चाहिए।

प्रशिक्षुओं हेतु निर्देश

1. प्रशिक्षु को अत्यन्त सरल और परिचित विषय पर ही चर्चा करना चाहिए।
2. प्रशिक्षु को कक्षा वर्ग के समय बच्चों के स्तर को ध्यान में रखना चाहिए।
3. विषय मनोरंजनयुक्त हो, तो अधिक से अधिक बच्चों का ध्यान आकर्षित हो सकेगा।
4. सभी बच्चों को समान अवसर देना चाहिए।

गतिविधि

❖ प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं को चार्ट पेपर पर बने कुछ चित्र दिखाकर उनके विषय में अपने विचार प्रस्तुत करने को कहेंगे।

गतिविधि का नाम : तुलना करें।
समय : 10 मिनट
सहायक सामग्री : सामान्य क्रियाकलाप लिखी हुई पर्चियाँ।
उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

11.1 मौलिक अभिव्यक्ति में लेखन

मौलिक अभिव्यक्ति लेखन में हमें बच्चों को सिखाने के लिए ऐसे विषयों का चयन करना चाहिए जो बच्चों की रुचि एवं स्तर के अनुकूल हो। किसी भी विषय पर मौलिक लेखन बच्चे तभी कर सकते हैं जब उनके अंदर कल्पना, तर्क, एवं चिंतन शक्ति का विकास होगा। इसके लिए हमें उन्हें अभ्यास का पर्याप्त अवसर देना चाहिए क्योंकि भाषा का लिखित रूप ही किसी भी भाषा की समृद्धता का द्योतक होता है। मौलिक लेखन किसी भी व्यक्ति की चित्तवृत्ति का परिचायक होता है।

11.2 मौलिक लेखन हेतु विषय चयन

बच्चों को मौलिक लेखन सिखाते समय परिचित विषयों का चुनाव करना चाहिए; जैसे–

- **परिवार के विषय में–** बच्चों से उनके परिवार के सदस्यों कें बारे में अनुभव लिखने को कहेंगे। इससे बच्चों की मौलिक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहन मिलेगा इतना ही नहीं, अगर बच्चों के मन मुताबिक लिखने बोलने की स्वतंत्रता दे तो हमें उन्हें समझने में सहायता मिलेगी।
- **विद्यालय के विषय में–** बच्चों को विद्यालय के विषय में निर्भीक होकर लिखने का अवसर दें और उन्हें यह समझाएँ कि यदि वह कुछ अलोचनात्मक भी लिखेंगे तो उसे अन्यथा नहीं लिया जाएगा।
- **कक्षा–कक्ष के विषय में–** कक्षा–कक्ष में मौजूद भौतिक वस्तुओं के विषय में बच्चों को लिखने का अवसर दें।
- **अपने मित्रों के विषय में–** बच्चों को उनके मित्रों के विषय में भी लिखने का अवसर दें।
- **आस–पास, पड़ोस एवं पालतू जानवरों के विषय में–** बच्चों से उनके आस–पास की वस्तुओं व पालतू जानवरों के विषय में लिखने का अवसर दें।
- **प्रमुख त्योहारों, उत्सवों एवं स्थानीय मेलों के विषय में चर्चा करें–** प्रमुख त्योहारों, उत्सवों एवं स्थानीय मेलों के विषय में चर्चा करें और उस पर बच्चों को लिखने का अवसर दें।

11.3 मौलिक लेखन अभिव्यक्ति का महत्त्व व उपयोगिता

मौलिक अभिव्यक्ति में लेखन अभिव्यक्ति का वह साधन है, जिसमें हम अपने विचारों को अधिकतम लोगों तक पहुँचा सकते हैं और स्थायी रूप से बच्चों को मौलिक लेखन सिखाने में दक्ष बना

सकते हैं। बच्चों में मौलिक लेखन का विकास कर लेने के बाद निम्नलिखित क्षमताएँ देखने को मिलती हैं–

1. बच्चों के शब्द संपदा में वृद्धि।
2. बच्चों में लेखन के प्रति उत्साह।
3. स्वतंत्र व मौलिक विचारों, तर्क, कल्पना शक्ति का विकास।
4. बौद्धिक क्षमता का विकास।
5. आस–पास की वस्तुओं को सूक्ष्म अवलोकन करने में सक्षम व समर्थ होते हैं।
6. बच्चों के भाषायी कौशल का विकास होता है।
7. सीखने में रुचि लेने लगते हैं
8. विषय–वस्तु पर अपने विचार रखने में सक्षम होते हैं।
9. बच्चों के अंदर सर्जनात्मकता एवं रचना कौशल का विकास होता है और वह सरल से कठिन पर भी अपने विचार सरलता से व्यक्त करने में सक्षम हो जाता है।
10. मौलिक लेखन से मस्तिष्क को दृढ़ता और प्रौढ़ता प्राप्त होती है।

गतिविधि

❖ प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं को चार्ट पेपर पर बनी किसी परिचित कहानी का चित्र दिखाते हुए चर्चा–परिचर्चा करेंगे और बताएँगे कि आप इस कहानी से अवश्य परिचित होंगे। प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं को निर्देश देंगे कि इस चित्र को देखकर कहानी को अपने शब्दों में लिखिए–

गतिविधि का नाम : आओ गढ़ें कहानी।

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : चार्ट पर बनी कहानी का चित्र।

उद्देश्य– विषयवस्तु की विस्तृत समझ विकसित करना।

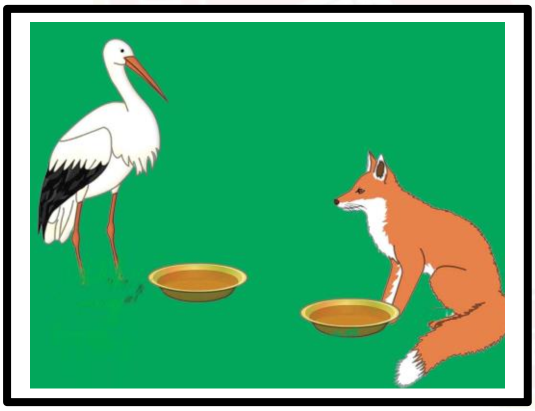

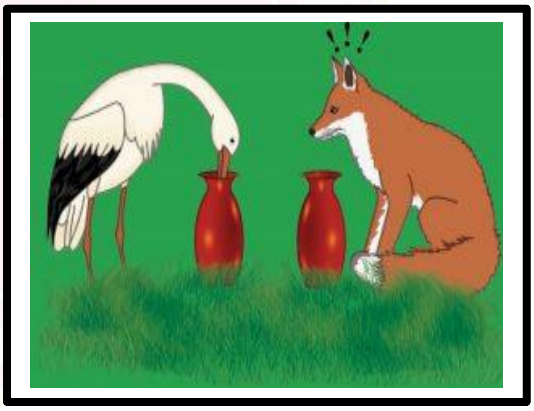

इस तरह बच्चे कहानी लिखते हुए आगे बढ़ेंगे।

बोध परीक्षण

1. मौलिक लेखन किसे कहते हैं?
2. मौलिक अभिव्यक्ति की उपयोगिता बताइए।
3. यातायात संबंधी नियमों पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
4. अपने कक्षा–अध्यापन (प्रशिक्षण) संबंधी विचार प्रस्तुत कीजिए।
5. बालकों के सर्वांगीण विकास के उपायों पर अपनी मौलिक विचारों को व्यक्त कीजिए।

समेकन

भावों और विचारों को अपने शब्दों में व्यक्त करना मौलिक अभिव्यक्ति कही जाती है। यही तरीका लेखन में प्रयुक्त होकर मौलिक लेखन कहलाता है। यह व्यक्ति के स्वविचारों, भावनाओं चित्तवृत्तियों का परिचायक होता है, जिसके द्वारा हम समाज को अपने विचारों से अवगत कराते हैं। मौखिक अभिव्यक्ति में हम अपने विचारों द्वारा कुछ समय तक प्रभाव डालते हैं, वहीं लिखित अभिव्यक्ति का प्रभाव स्थायी होता है।

बच्चों को मौलिक लेखन सिखाने के लिए हमें उनके कल्पना, तर्क, विचार तथा चिंतन को जगाना चाहिए, ताकि वे परिवेशीय वस्तुओं, आत्मिक संबंधों, पारंपरिक त्योहारों आदि को सम्मिलित करते हुए मौलिक रूप से लिख पाने में सक्षम बन सकेंगे ।

मौलिक अभिव्यक्ति के रूप में लेखन का अवसर देने से बच्चे में व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का विकास होता हैं। वह अपने विचारों को मूर्त रूप दे सकता है। बच्चे के अंदर सृजनात्मकता का विकास आती है। वह अपने आस–पास की वस्तुओं का विस्तृत अवलोकन करने में सक्षम होता है।

विचार विश्लेषण

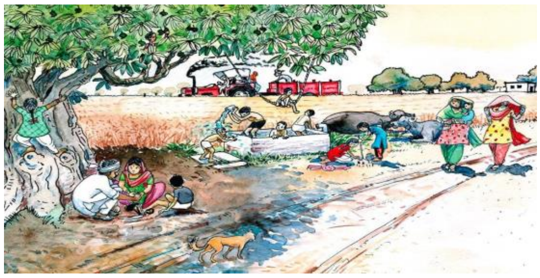

1. उपर्युक्त परिवेशीय चित्र का अवलोकन कर दृश्य के संदर्भ में अपने विचार 300 शब्दों में लिखिए।
2. किसी एक राष्ट्रीय पर्व पर अपने शब्दों में स्वतंत्र अभिव्यक्ति प्रस्तुत कीजिए।
3. मौलिक लेखन किसे कहते हैं?
4. लिखित अभिव्यक्ति के मुख्य साधन कौन–कौन से हैं?
5. मौलिक अभिव्यक्ति की उपयोगिता बताइए।

प्रोजेक्ट कार्य

1. रक्षाबंधन पर्व भाई–बहन के अटूट विश्वास का त्योहार आप इसे कैसे मनाते है अपने विचार लिखिए।
2. पतंगों को आकाश में उड़ते हुए सबने देखी है। आप पतंग के विषय में क्या सोचते हैं? लिखिए।
3. गुल्ली डंडा खेलते समय आप क्या–क्या सावधानियाँ रखते हैं?

पाठ योजना

पाठ योजना की परिभाषा

सिम्पसन के अनुसार– ''पाठ योजना में शिक्षक अपनी विशेष सामग्री और छात्रों के बारे में जो कुछ भी जानता है, उन बातों का प्रयोग सुव्यवस्थित ढंग से करता है।''

अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा शब्दकोश के अनुसार– ''पाठ योजना किसी पाठ के आवश्यक बिंदुओं की रूपरेखा है, जिन्हें उस क्रम में व्यवस्थित किया जाता है जिस क्रम में अध्यापक द्वारा विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत किया जाना होता है।''

शिक्षक एक पाठ या अध्याय पढ़ाने के लिए उसे छोटी–छोटी इकाइयों में बांट लेता है, जिसे हम प्रकरण (टॉपिक) कहते हैं। एक इकाई के विषय वस्तु को पढ़ाने के लिए शिक्षक द्वारा एक विस्तृत रूपरेखा तैयार की जाती है, जिसे हम पाठ योजना कहते हैं।

पाठ योजना की उपयोगिता

एक शिक्षक के लिए पाठ योजना का निर्माण उतना ही आवश्यक है जितना कि एक इंजीनियर को भवन निर्माण के लिए के मानचित्र या ब्लूप्रिंट की आवश्यकता होती है। शिक्षण की प्रक्रिया में पाठ योजना की उपयोगिता इस प्रकार है–

1. पाठ योजना शिक्षण कार्य को दिशा प्रदान करती है।
2. पाठ योजना कक्षा नियंत्रण एवं व्यक्तिगत विभिन्नता के आधार पर शिक्षण प्रक्रिया के नियोजन में सहायता प्रदान करती है।
3. पाठ योजना के माध्यम से शिक्षक, शैक्षिक लक्ष्य तथा प्रक्रियाओं का नियमन, संपूर्ण लक्ष्य तथा क्रियाओं के रूप में तैयार करता है।
4. यह चिंतन में क्रम, व्यवस्था एवं विकास के लिए आवश्यक है।
5. अध्यापक के लिए पथ प्रदर्शक का कार्य करती है।
6. पाठ योजना के माध्यम से शिक्षा में शिक्षण क्रियाओं और सहायक सामग्री की पूर्ण जानकारी हो जाती है।

पाठ योजना के उद्देश्य

पाठ योजना बनाने के उद्देश्य निम्नलिखित है–

1. कक्षा में शिक्षण की क्रियाओं और सहायक सामग्री की पूर्ण जानकारी कराना पाठ योजना का पहला उद्देश्य है।
2. प्रस्तुतीकरण के क्रम तथा पाठ के रूप में निश्चितता की जानकारी कराना भी पाठ योजना का उद्देश्य है।
3. इससे कक्षा शिक्षण के समय शिक्षक की विस्मृति की संभावना कम होती है।
4. निर्धारित पाठ्यवस्तु के सभी तत्त्वों का विवेचन करना।
5. शिक्षण अधिगम सहायक सामग्री के प्रयोग के स्थल, शिक्षण विधि तथा प्राविधियों का निर्धारण करना।

पाठ योजना बनाने के चरण

पाठ योजना बनाने के निम्नलिखित चरण है–

1. सामान्य सूचना
2. सामान्य उद्देश्य
3. विशिष्ट उद्देश्य
4. शिक्षण सहायक सामग्री
5. पूर्व ज्ञान
6. प्रस्तावना
7. उद्देश्य कथन
8. शिक्षण विधि
9. प्रस्तुतीकरण
10. बोधात्मक प्रश्न
11. श्यामपट्ट कार्य
12. निरीक्षण कार्य
13. मूल्यांकन
14. गृहकार्य

1– सामान्य सूचना– सामान्य सूचना में जिस विद्यालय में शिक्षण किया जाता है, उसका नाम सबसे पहले लिखा जाता है। दूसरी लाइन में छात्राध्यापकों/छात्राध्यापिकाओं का नाम, तत्पश्चात् एक तालिका. बनाकर सबसे पहले दिनांक, कक्षा, वर्ग, विषय, कालांश, समयावधि इत्यादि सामान्य सूचनाएँ लिखकर पढ़ाए जाने वाले पाठ का शीर्षक अर्थात प्रकरण लिखा जाता है।

2– सामान्य उद्देश्य– लेखन में प्रथम बिंदु के आधार पर सामान्य उद्देश्यों को निर्धारित किया जाता है। हिन्दी, अंग्रेजी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान आदि विषयों के सामान्य उद्देश्य भिन्न–भिन्न होते हैं अर्थात् सामान्य उद्देश्य पढ़ाए जा रहे विषय का होता है, जिससे छात्रों के अंदर उन विषय कौशलों का विकास किया जा सके।

3– विशिष्ट उद्देश्य– प्रकरण को पढ़ाने में जिस उद्देश्य की प्राप्ति होती है, वह लिखना चाहिए। विशिष्ट उद्देश्य, सामान्य उद्देश्य पर आधारित होते हैं परंतु विशिष्ट उद्देश्य प्रकरण से संबंधित होता है, जिसको आप कक्षा कक्ष में पढ़ा रहे होते हैं।

4– शिक्षण सहायक सामग्री– पाठ पढ़ाने में किस प्रकार की अधिगम सामग्री की आवश्यकता पड़ती है, उसका उल्लेख करना चाहिए। जैसे–

- मॉडल (प्रतिमान)
- प्रतिभाव
- श्यामपट्ट/श्वेतपट्ट
- चॉक
- डस्टर
- चार्ट

5– पूर्व ज्ञान– पूर्व ज्ञान के आधार पर पाठ को प्रस्तावित किया जाता है अर्थात् पूर्व ज्ञान के आधार पर पाठ का प्रारंभ होता है। पूर्वज्ञान में छात्रों से उस विषय पर कुछ सवाल पूछे जाते हैं। जिससे पता चल सके कि उन्हें उस विषय के बारे में पहले से कितना ज्ञान है।

6– प्रस्तावना– पूर्व ज्ञान के आधार पर शिक्षक प्रश्न या चार्ट के द्वारा पाठ को प्रस्तावित करता है। प्रस्तावना का अंतिम प्रश्न समस्यात्मक होता है।

7– उद्देश्य कथन– पाठ को पढ़ने के बाद कौन–कौन से उद्देश्य पूरे होंगे, उसके बारे में लिखा जाता है।

8– शिक्षण विधि– पाठ पढ़ाते समय अध्यापक/अध्यापिका कौन–सी शिक्षण विधि का प्रयोग करेंगे, उसे यहाँ लिखा जाता है।

9– प्रस्तुतीकरण– पाठ योजना के इस भाग में छात्रों के सम्मुख पाठ्यवस्तु का शिक्षण बिंदु प्रस्तुत किया जाता है।

अन्विति– छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका द्वारा छात्रों के समक्ष पढ़ाए जाने वाले काव्य–खण्ड अथवा अनुच्छेद को प्रस्तुत किया जाएगा।

आदर्श वाचन– छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका द्वारा छात्रों के समक्ष प्रस्तुत खण्ड/अनुच्छेद का उचित सुर, लय, तान–अनुतान, विराम चिह्नों के साथ आदर्श वाचन किया जाएगा।

अनुकरण वाचन– छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका द्वारा किए गए आदर्श वाचन का कुछ छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन किया जाएगा।

काठिन्य निवारण– छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका द्वारा छात्रों के द्वारा किए जा रहे अनुकरण वाचन में कठिन शब्दों के उच्चारण तथा उसके अर्थ को विभिन्न युक्तियों जैसे– अर्थ निर्देश, पर्याय कथन, विलोम निर्देश, श्रुति भिन्नार्थक निर्देश, तत्सम, तद्भव निर्देश, वाक्य प्रयोग विधि, कहावतों एवं मुहावरों आदि के माध्यम से काठिन्य निवारण किया जाएगा, जिससे छात्रों में प्रकरण के प्रति बोध संप्राप्ति हो सके।

- कक्षा–1 से कक्षा 5 तक की कक्षाओं के लिए शिक्षण बिंदु प्रश्नोत्तर विधि पर आधारित होता है। प्रश्न केवल तथ्यात्मक न होकर बच्चों की कल्पनाशक्ति, तर्कशक्ति एवं विषय वस्तु के प्रति अवबोध को बढ़ाने वाला होना चाहिए।
- कक्षा– 6 से प्रस्तुतीकरण में पाठ योजना बनाते समय प्रस्तुतीकरण के अन्तर्गत कम से कम 3 शिक्षण बिंदुओं पर प्रस्तुतीकरण बनाना चाहिए और साथ ही साथ यहाँ पर विकासात्मक प्रश्न से शिक्षण बिंदु की शुरुआत करनी चाहिए।
- विकासात्मक प्रश्न पूछते हुए जब समस्यात्मक उत्तर छात्रों द्वारा आ जाता है तब उस शिक्षण बिंदु का स्पष्टीकरण छात्राध्यापक या छात्राध्यापिका द्वारा करना चाहिए।
- स्पष्टीकरण के बाद बोधात्मक प्रश्न पूछने चाहिए।
- उच्च प्राथमिक कक्षाओं को पढ़ाते समय कम से कम 3 शिक्षण बिंदुओं पर प्रस्तुतीकरण करना चाहिए।

10– बोध या बोधात्मक प्रश्न–

शिक्षक पढ़ाए गए पाठ में से प्रश्न पूछता है, जो बोध प्रश्न कहलाते हैं।

11– श्यामपट्ट कार्य– शिक्षक द्वारा समय–समय पर श्यामपट्ट कार्य अवश्य करना चाहिए।

12– निरीक्षण कार्य– शिक्षक द्वारा जो श्यामपट्ट कार्य किए गए हैं, उन्हें छात्र लिख रहे हैं या नहीं, उसको कक्षा में घूम–घूम कर निरीक्षण अवश्य करना चाहिए।

13– मूल्यांकन प्रश्न– मूल्यांकन प्रश्न संपूर्ण शिक्षण बिंदु पर आधारित होता है परंतु ध्यान रखने वाली बात यह होती है कि वे प्रश्न बोधात्मक प्रश्न से भिन्न होने चाहिए।

14– गृहकार्य– पाठ के अंत में छात्रों को पाठ से संबंधित कुछ कार्य घर के लिए देना चाहिए और उसकी जांच अगले दिन की जानी चाहिए, जिससे छात्र अर्जित ज्ञान का प्रयोग करना सीख सकें।

पाठ योजना

दिनांक–
कक्षा– 5
विषय– हिंदी
प्रकरण– 'सरिता'
कालांश– द्वितीय
अवधि –35 मिनट

सामान्य उद्देश्य	1. हिन्दी कविता के प्रति विद्यार्थियों में सामान्य अनुराग उत्पन्न करना। 2. गति, लय, यति, तान–अनुतान एवं भाव के अनुसार कविता पाठ करने की योग्यता उत्पन्न करना। 3. कविता के मुख्य भावों को ग्रहण करने की योग्यता प्रदान करना। 4. विद्यार्थियों के भावों का परिष्कार करते हुए उनमें उदात्त भावों का विकास करना। 5. कविता के अन्तर्गत शब्द योजना के आधार पर दृश्य चित्रों की उद्भावना करना। 6. हिंदी कविता का रसास्वादन करके अपने शब्दों में भावाभिव्यक्ति की क्षमता का विकास करना। 7. विद्यार्थियों को कविता की विभिन्न शैलियों से परिचित कराना। 8. विद्यार्थियों में सृजनात्मक शक्ति का विकास करना।
विशिष्ट उद्देश्य	1. विद्यार्थी 'सरिता' कविता में दिए गए काव्य, पंक्तियों के भावों को अपने शब्दों में व्यक्त कर सकेंगे। 2. विद्यार्थी 'सरिता' कविता के माध्यम से सरिता के उद्गम स्थल का नाम बता सकेंगे। 3. विद्यार्थी 'सरिता' कविता में प्रयुक्त शब्दों यथा. निर्मल, विमल, निनाद, विह्वल आदि के अर्थ, विलोम शब्द, पर्यायवाची, तद्भव आदि को लिख सकेंगे। 4. विद्यार्थी 'सरिता' कविता में प्रयुक्त तुकांत शब्दों को पहचान सकेंगे।
सहायक सामग्री	पाठ्यवस्तु, चार्ट, मॉडल I.C.T. वीडियो आदि।
पूर्व ज्ञान	विद्यार्थी हिमालय और उससे निकलने वाली नदियों से संबंधित सामान्य जानकारी रखते हैं।

प्रस्तावना

छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका कथन	विद्यार्थी अनुक्रिया
1. भारत में प्रसिद्ध पर्वत कौन–कौन से हैं? 2. हिमालय से कौन–सी नदी निकलती है? 3. नदी के पर्यायवाची शब्द क्या है ? 4. 'सरिता' पाठ के विषय में आप क्या जानते हैं?	हिमालय, अरावली, विन्ध्य इत्यादि। गंगा, यमुना सरिता, तटिनी, तनुजा समस्यात्मक

उद्देश्य कथन– बच्चों! आज हम लोग गोपाल सिंह 'नेपाली' द्वारा रचित एवं आपकी पाठ्यपुस्तक 'वाटिका' में संकलित 'सरिता' कविता के पठन के माध्यम से कविता के भावबोध का अवगाहन करेंगे।

प्रस्तुतीकरण–

अन्विति– यह लघु सरिता..बहता जल।। **आदर्श काव्य पाठ (वाचन)–** छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका उचित लय–ताल, तान–अनुतान एवं हाव–भाव के साथ स्पष्ट उच्चारण सहित कविता का आदर्श पाठ करेंगे। **सस्वर पाठ** छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका विद्यार्थियों के द्वारा किए जा रहे सस्वर पाठ को ध्यानपूर्वक सुनेंगे और त्रुटिपूर्ण उच्चरित शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखेंगे एवं शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराएंगे।	विद्यार्थी अध्यापक के आदर्श काव्य पाठ का अनुकरण करते हुए उचित लय–ताल एवं हाव–भाव के साथ स्पष्ट उच्चारण सहित कविता का सस्वर पाठ करेंगे।

काठिन्य निवारण–

श्यामपट्ट कार्य

छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका काव्य पंक्तियों में प्रयुक्त क्लिष्ट शब्दों का विभिन्न युक्तियों के माध्यम से अर्थ स्पष्ट करेंगे।

शब्द	युक्ति	अर्थ	
विमल	अर्थकथन	स्वच्छ	विद्यार्थी अपनी उत्तर पुस्तिका में लिख रहे हैं।
निनाद	पर्याय–निर्देश	ध्वनि, आवाज	
लघु	विलोम–निर्देश	दीर्घ	
चंचल	वाक्य प्रयोग	चारू चंद्र की चंचल, किरणें, खेल रही हैं जल–थल में	
विह्वल	अर्थ–निर्देश तद्भव–निर्देश	अशांत, व्याकुल विहल	

बोधप्रश्न—

1. 'कितना शीतल, कितना निर्मल' में 'शीतल' शब्द का अर्थ क्या है?
2. प्रस्तुत काव्य पंक्तियों में एक साथ दो बार प्रयुक्त शब्दों को बताइए।
3. सरिता का जल कहाँ से आ रहा है?
4. यह 'विमल दूध—सा हिम का जल' काव्य पंक्ति से कवि का क्या अभिप्राय है?

भाव—स्पष्टीकरण —

कवि कहते हैं कि इस छोटी नदी का बहता जल अत्यधिक शीतल और स्वच्छ है। हिमालय के बर्फ से निकलकर आने वाला यह जल दूध जैसा स्वच्छ और निर्मल है। यह जल कल—कल की ध्वनि में गान करते हुए मानो शरीर की चंचलता और मन की व्याकुलता को प्रदर्शित करता है। इस छोटी नदी का प्रवाहित जल ऐसा ही है।

पुनरावृत्ति के प्रश्न

1. 'सरिता' नामक कविता के रचयिता कौन हैं?
2. 'हिमगिरी के हिम से निकल—निकल' का क्या आशय है?
2. कर—कर निनाद कल—कल छ्ल—छल में 'कल—कल' शब्द किसके लिए प्रयुक्त है?
3. 'तन' शब्द का पर्यायवाची शब्द लिखिए।
4. पठित काव्य पंक्तियों में प्रयुक्त 'तुकांत शब्दों' को छाँटिए।

गृहकार्य

1. 'सरिता' विषय पर अपने विचार 10 पंक्तियों में व्यक्त कीजिए।
2. पहाड़ से निकलती हुई नदी का चित्र बनाइए।
3. यदि नदियों का जल सूख जाए तो क्या होगा?

डी०एल०एड० प्रथम सेमेस्टर
मॉडल प्रश्न–पत्र
षष्टम प्रश्न–पत्र

समय : 1 घंटा	विषय : हिंदी	पूर्णांक : 25

निर्देश

1. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रश्नों के अंक उनके सम्मुख दिए गए हैं।
2. इस प्रश्न पत्र में कुल तीन प्रकार के प्रश्न हैं। प्रश्न संख्या 1 से प्रश्न संख्या 5 तक कुल 5 बहुविकल्पीय प्रश्न हैं,प्रश्न संख्या 6 से प्रश्न संख्या 11 तक कुल 6 प्रश्न अति लघु उत्तरीय प्रश्न हैं एवं प्रश्न संख्या 12 से प्रश्न संख्या 18 तक कुल 7 प्रश्न लघु उत्तरीय प्रश्न हैं। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर लगभग 25 शब्दों में तथा लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर लगभग 75 शब्दों लिखिए।

बहुविकल्पीय/वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 01. ताजमहल किस प्रकार की संज्ञा है? 1

क) भाववाचक संज्ञा ख) जातिवाचक संज्ञा ग) द्रव्यवाचक संज्ञा घ) व्यक्तिवाचक संज्ञा

प्रश्न 02. 'यह गाय काली है' में रेखांकित पद है– 1

क) संज्ञा ख) सर्वनाम ग) विशेषण घ) क्रिया विवशेण

प्रश्न 03. 'जीतने की इच्छा' के लिए एक शब्द होगा– 1

क) जिज्ञासा ख) जिगीषा ग) युयुत्सा घ) लिप्सा

प्रश्न 04. 'अ' उपसर्ग से निर्मित शब्द है– 1

क) अक्षर ख) अमरूद ग) अनिच्छा घ) अजगर

प्रश्न 05. 'ता' प्रत्यय से निर्मित शब्द है– 1

क) छाता ख) ममता ग) अमृता घ) सुनीता

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 06. 'रसोईघर' में कौन सा समास है? 1

प्रश्न 07. सर्वनाम के कितने प्रकार होते हैं? समस्त प्रकारों के नाम लिखिए। 1

प्रश्न 08. हेतुहेतुमद् भूत काल के उदाहरण स्वरूप एक वाक्य लिखिए। 1

प्रश्न 09. 'दही' शब्द में कौन सा लिंग है? 1

प्रश्न 10. कवि का स्त्रीलिंग शुद्ध वर्तनी के साथ लिखिए। 1

प्रश्न 11. दो ऐसे शब्द लिखिए, जो सदैव बहुवचन में ही प्रयुक्त होते हैं? 1

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 12. कहानी द्वारा शिक्षण के प्रमुख लाभ बताइए। 2

प्रश्न 13. क्रिया विशेषण के समस्त भेदों को सोदाहरण परिभाषित कीजिए। 2

प्रश्न 14. आप बच्चों को स्वानुभव पर चर्चा हेतु कैसे प्रेरित करेंगे? 2

प्रश्न 15. सर्वनाम एवं सार्वनामिक विशेषण में क्या अंतर है? 2

प्रश्न 16. मौन वाचन से क्या–क्या लाभ हैं? 2

प्रश्न 17. अवकाश हेतु अपने संस्थान के प्राचार्य को एक पत्र लिखिए। 2

प्रश्न 18. किसी राष्ट्रीय पर्व पर एक अनुच्छेद लिखिए। 2

शुद्ध वर्ण उच्चारण हेतु ऑडियो

ऑडियो लिंक

https://drive.google.com/file/d/1PS7vNPVbauAL2sKRNLMVhr9IQqU7ZcIA/view?usp=sharing

संदर्भग्रंथ सूची

1. **हिंदी के निर्माता** – कुमुद शर्मा, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, तीसरा संस्करण
2. **रचनात्मक हिंदी एवम व्याकरण** – डॉ० शंकर लाल शर्मा, डॉ० कंचन शर्मा, प्रकाश बुक डिपो, बरेली, प्रथम संस्करण 2010
3. **हिंदी साहित्य का इतिहास** – आचार्य रामचंद्र शुक्ल
4. **हिन्दी व्याकरण प्रशिक्षण साहित्य** – राज्य हिन्दी संस्थान, वाराणसी।
5. **देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण** – केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
6. **हिंदी व्याकरण** – कामताप्रसाद गुरु
7. **आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना** – डॉ० वासुदेवनन्दन प्रसाद
8. **मातृभाषा हिंदी शिक्षण** – एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली
9. **हिंदी शिक्षण** – डॉ० उमा मंगल

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha

राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी
(स्थापना वर्ष-1975)

निकट पुलिस लाइन, वाराणसी (पिनकोड-221001)

ई-मेल : rajyahindisansthan1975@gmail.com
वेबसाइट : rajyahindisansthanupvns.org.in